वसुधैव कुटुम्बकम्

सनातन - वैश्य वर्ण

अग्रवाल समाज वंशावली

A wealth of knowledge on genealogy

।। वार्षिक पुस्तक 2023 ।।

वसुधैव कुटुम्बकम्

सनातन - वैश्य वर्ण

अग्रवाल समाज वंशावली

।। वार्षिक पुस्तक 2023 ।।

हर्ष वर्धन गोयल (सिंगापुर)

(लेखक एवं संकलन कर्ता)

agrvanshawali@gmail.com

पौष, शुक्ल पक्ष द्वादसी सोमवार विक्रमी सम्वत २०८०
२२ जनवरी २०२४

पूजनीय

माताजी

एवं

पिताजी

को

समर्पित

।। मंगलाचार ।।

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर, मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर, मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Lead us from unreality to reality. Lead us from darkness to light. Lead us from death to immortality. Om Peace Peace Peace ll

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

|| अस्वीकरण (DISCLAIMER) ||

पुस्तक संग्रह वसुधैव कुटुम्बकम् - अग्रवाल समाज वंशावली - वार्षिक पुस्तक 2023 और उसके साथ संलग्न पुस्तिकाओं के निरूपण, टंकण और प्रकाशन में और उसके अन्य स्वरूपों का प्रस्तुतीकरण अत्यधिक सजगता के साथ किया गया है यह पुस्तक संग्रह किसी भी मान्यता, वर्तमान नियम और नीति के उल्लंघन का मंतव्य नहीं रखती और न ही करती है न ही कोई अपना नवीन मत प्रस्तुत करती है या उसका अनुमोदन करती है इसका दृष्टिकोण तटस्थ है और लेखक को प्रस्तुत सामग्री यथावत प्रस्तुत की गयी है कथचित लेखों में त्रुटियां, पूर्वाग्रह, प्रतिरूप में वर्तिनी और संग्रह में भिन्न मत रह सकते हैं। हम पाठकों को इन समस्याओं के समाधान पाने में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अधिकांशतः लेख और वंशावली पूर्ण अथवा आंशिक रूप से सहयोगी व्यक्तियों द्वारा प्रदत हैं इन लेखों में वैज्ञानिक, शैक्षणिक अथवा व्यावसायिक योग्यताओं का अभाव हो सकता है।

यह संकलन स्वयंसेवकों और योगदानकर्ताओं के सहयोग और रुचि पर आधारित है। यह किसी भी प्रकार की किसी भी न्याय व्यवस्था में दंडनीय नहीं है मात्र सन्दर्भ के लिए अन्य सन्दर्भों की पुष्टि के लिए प्रयोग की जा सकती है। यदि इस कृति से किसी भी प्रकार की क्षति अथवा व्यवधान पहुँचता है तो इस पुस्तक से सम्बंधित कोई भी व्यक्ति और संस्थान उत्तरदायी नहीं है।

किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए लेखक को सूचित करें कमी सुधार ली जाएगी।

।। अनुक्रमणिका।।

।। कुलदेवी महालक्ष्मी का आशीर्वाद ।।

उवाच मधुरा वाणी, साधूनामभयकरी।
वरं ब्रूहि महाराज, यस्ते मनसि वर्त्तते।।
ददामद्यैव सकलं, तव पूजा प्रतोषिता ।। महालक्ष्मी वृत कथा 90।।

महालक्ष्मी अपनी मधुर वाणी में बोली, मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ, हे यथेष्ठ, जो तुम्हारे हृदय में कामना हो वह वर मांगो, मै तुम्हे मनोइच्छित वर देती हूँ ।

तब कुलं न विमोक्ष्यामि, यावच्चन्द्र दिवा करौ।
वशं भवतु ते शक्रो, सदेवों बलवाहनः।। महालक्ष्मी वृत कथा 92।।

जब तक सूर्य चन्द्रमा विद्यमान हैं तेरे कुल पर कृपा दृष्टि रखूंगी, इन्द्र आदि देवता तुम्हारे सहायक होंगे अग्रकुल के जन बलवान और वाहनयुक्त होंगे।

आधार अभवत्येषा, कथा ममुतवान्विता।
भुवि येषां गृहे पूजा, लिखिता चापि पुस्तकी।। महालक्ष्मी वृत कथा 93।।

तदहं न विमोक्ष्यामि, यावती पृथिवीमिमा।
प्रसादं च स्वयं भुक्त् वा नान्यस्यै प्रति पादयेत।। महालक्ष्मी वृत कथा 94।।

इस जगत में जिस-जिस घर में मेरी पूजा होती है जब तक पृथ्वी रहेगी मैं उनका साथ नहीं छोड़ूंगी। जो मेरा प्रसाद ग्रहण कर औरो को दें , विद्वान को भोजन करावे, जिस घर में विधि विधान से पूजा होवें उस घर से दरिद्रता नष्ट हो जाएगी।

शत्रु रोग भयं नारित कुल कीत्ति प्रवर्धनं।
पुत्र पौत्र कुलैः सार्ध भुक्ष्व राज्यमकंटकम्।। महालक्ष्मी वृत कथा 96।।

शत्रु या रोग का भय नहीं रहेगा कुल और कीर्ति सदा बढ़ती रहेगी। अपने पुत्र-पौत्र और कुल के साथ बिना किसी बाधा के राज्य का भोग करोगे।

स देहेन च गोलोकमन्ते यास्यसि निश्चितम्।
ध्रुवस्थ पूर्वे द्वौ तारौ भविष्ये च प्रियासह।। महालक्ष्मी वृत कथा 97।।

निसंदेह तुम्हें स्वर्गलोक प्राप्त होगा, राजन तुझे मेरा यह सब आशीर्वाद है, तुम्हारा वंश ध्रुव की भांति सदा अटल रहेगा।

|| मंगलकामनाएँ ||

हर्ष वर्धन गोयल
(संपादक)

सृष्टि की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक रचना है मनुष्य। मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार है, विवेक और बुद्धि के उपयोग से सृजन, जिनसे वह संसार में अपने कर्म करता हुआ भौतिक और बौद्धिक सृजन की और अग्रसर रहता है। इस सम्पूर्ण जगत की सुंदरता का आधार उस परम पिता परमेश्वर द्वारा द्वारा रचित मनुष्य रूपी प्राणी है। वसुधैव कुटुम्बकम्, महान सनातन संस्कृति और धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा है जो अनेको ग्रन्थों में लिपिबद्ध है।

ये जीवन रक्षक वसुधा अर्थात धरती ही मेरा कुटुम्ब है, परिवार है। उदार हृदय वाले सनातनी लोगों की तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है। सनातन धर्म में कर्म को प्रधान माना है। सामाजिक व्यवस्था में वर्गीकरण तो मात्र कर्म का वर्गीकरण है, न कि मनुष्य का वर्गीकरण। मनुष्य अपनी स्वेच्छा से अपने कर्म का निर्धारण करने के लिए सदैव स्वतंत्र है। वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन संस्कृति का मूलभूत सिद्धांत है और हम सब एक बहुत वृहद वैश्विक परिवार के सदस्य हैं।

पूर्व काल में सभी जन अपनी वंशावली को संजो कर रखते थे किन्तु कुछ आक्रान्ताओं के कारण और कुछ इच्छा शक्ति की कमी से यह सनातनी परम्परा, जो हम सबको एक सूत्र में जोड़कर रखती थी, इसकी कड़ी टूट सी गयी है। परिवार छोटे होते जा रहे हैं और हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं और ज्ञान के अभाव में समाज कई इकाईयों में बँटता जा रहा है। यदि हम सब अपनी वंशावली जोड़े तो पाएँगे कि हम सब सनातनी हैं। वस्तुतः हम सब ब्रह्मा की संतान हैं और एक ही ब्रह्मा से उत्पन्न हुए हैं।

किसी भी समाज की एकजुटता का आधार उसकी एकबद्धता है और अग्रवालों के वंशों को सहजती यह पुस्तक इस दिशा में एक अनूठा प्रयास है इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं अपने अग्रवाल समाज जी का विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जो सनातन संस्कृति की सरंक्षण के लिए अथक प्रयास कर रहा हैं यह पुस्तक उनके और उनके कुटुंब के अथक प्रयास और सहयोग का सुखद फल है आइए, एक प्रयास करें और अपनी समृद्ध संस्कृति को, अपनी जड़ों को पुन: बल प्रदान करें!

सभी के लिए मंगलकामनाएँ!!

हर्ष वर्धन गोयल
(संपादक)

हमें अपने वंश वृक्ष को संरक्षित करने की आवश्यकता क्यों है

आइए हम यह समझने की कोशिश करें कि हमारे वंश वृक्ष की खोज करना, जानकारी प्राप्त करना, इकट्ठा करना और संरक्षण करना हमें कैसे प्रभावित करता है।

हमारी जड़ें - हमारी पहचान

यह जानने के बाद कि हम कहाँ से हैं, हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है और हम कहाँ से आए हैं, हमें इस बात की समझ विकसित करने में सहयक होती है कि हम वास्तव में कौन हैं। जिस तरह से हम अपनी पारिवारिक कहानियों से संबंधित होते हैं और अपने बारे में अपने स्वयं से जुड़ते हैं, वह हमारी अनूठी, प्रामाणिक मूल पहचान स्थापित करने में सहायता करता है। और इससे हमें असीम मानसिक शांति प्राप्त होती है।

संबंध

पारिवारिक अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ संबंध बनाना, एक मानवीय आवश्यकता है। इससे हमारा खालीपन दूर होता है। प्रत्येक मनुष्य लगाव, अपनेपन और संबंध की इच्छा रखता है और वंशावली, उसे अपने समुदाय से जोड़ने में सहायक होती है ।

करुणा का भाव

हमारे पूर्वजों के इतिहास को सीखने से हमें एक मानसिक बल प्राप्त होता है जो सामने आने वाली चुनौतियों की अधिक समझ करने में सहायक होता है और हमें, अधिक प्रेम और करुणा को और प्रेरित करता है। यह करुणा हमारे परिवारों के भीतर और उनके बाहर लोगों के साथ हमारे संबंधों को सुधरने में सहायक होती है , जितना अधिक हम अपने अतीत के बारे में जानते हैं, उतना ही अधिक हम अपने लोगो के के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं।

निःस्वार्थता का भाव

निस्वार्थ भाव से सहयोग करने और कार्य करने की क्षमता मानवता के लिए अद्वितीय है। हमारे इतिहास को सीखना, इसे संरक्षित करना न केवल हमारे संबंधित परिवार से, बल्कि पूरे मानव परिवार को जुड़ने का और निस्वार्थ सहयोग प्रदान करना का वातावरण देता है।

आत्म-मूल्य

अपने इतिहास से सीखना, और उसे संरक्षित करना हमें अलगाववाद , व्यक्तिवाद , कट्टरपंथ से दूर करता है। जब हमें ज्ञात होता है कि हम सब एक ही ब्रह्म की संतानें हैं और कोई छोटा बड़ा ऊँच-नीच नहीं है, कुछ लोग दम्भ के कारण अपने वंश को उच्च कह सकते हैं किन्तु वास्तविकता वह होती है कि वे स्वयं क्या है। सभी वंश एक ही ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं ऐसा जान बुद्धिमान पुरुष सभी उच्च जनों को अपना आदर्श मानते हैं। यह हमें आत्म- मूल्यांकन का अवसर प्रदान करता है।

।। वंशावली पुस्तकों की सूची।।

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् - अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 (मूल भाग)	मूल पुस्तक, महाराजा अग्रसेन जी का परिचय, गोत्र परिचय, कुटुंबनाम परिचय, वंशावलियों की सूची आदि
वसुधैव कुटुम्बकम् - अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 1 - ऐरन (Airan) गोत्र	ऐरन (Airan) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र अंक 1	बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र अंक 2	बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 11 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र अंक 3	बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 11 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	तुलसियान परिवार बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 2 देवड़ा परिवार	देवड़ा परिवारबंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 3	बिहरोरिया परिवार बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 4	जालान परिवार बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 5	झुनझुनवाला परिवार बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ

|| वंशावली पुस्तकों की सूची||

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 2 - बंसल (Bansal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 6	जुमानपुरका पोतदार परिवार बंसल (Bansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 4 - बिंदल (Bindal) गोत्र अंक 1	बिंदल (Bindal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 4 - बिंदल (Bindal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	लडिया परिवार बिंदल (Bindal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 1	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 2	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 11 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 3	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 21 से 30 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 4	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 31 से 40 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 5	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 41 से 50 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र अंक 6	गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 51 से 60 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 6 - गर्ग (Garg) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	बगड़िया परिवार गर्ग (Garg) गोत्र की वंशावलियाँ

|| वंशावली पुस्तकों की सूची||

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ 1 संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 2	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 11 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 3	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 21 से 30 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 4	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 31 से 40 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 5 संकलन 41 से 50 तक	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 6 संकलन 51 से 60 तक	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र अंक 7 संकलन 61 से 70 तक	गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	भारूका परिवार गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 2	मोर परिवार गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 3	तुहीराम परिवार गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ

|| वंशावली पुस्तकों की सूची||

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 4	मनसीखिरिया परिवार गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 7 - गोयल (Goyal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 5 नम्बरदार परिवार	नम्बरदार परिवार गोयल (Goyal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 8 - गोयन/गंगल (Goyan/Gangal) गोत्र	गोयन/गंगल (Goyal/Gangal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 9 - जिंदल (Jindal) गोत्र	जिंदल (Jindal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 10 - कंसल (Kansal) गोत्र	कंसल (Kansal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 11 - कुछल (Kucchal) गोत्र	कुछल (Kucchal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 12 - मधुकुल (Madhukul) गोत्र	मधुकुल (Madhukul) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 13 - मंगल (Mangal) गोत्र अंक 1	मंगल (Mangal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 13 - मंगल (Mangal) गोत्र अंक 2	मंगल (Mangal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 13 - मंगल (Mangal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	बमोरी परिवार मंगल (Mangal) गोत्र की वंशावलियाँ

|| वंशावली पुस्तकों की सूची||

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र अंक 1	मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र अंक 2	मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र अंक 3	मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 21 से 30 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र अंक 4	मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 31 से 40 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	बगड़िया परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 2	तिरखा परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 3	मंडीवाला परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 4	कंदोई परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 5	महमिये परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 14 - मित्तल (Mittal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 6	अंगारके परिवार मित्तल (Mittal) गोत्र की वंशावलियाँ

।। वंशावली पुस्तकों की सूची।।

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 15 - नांगल (Nangal) गोत्र	नांगल (Nangal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र अंक 1	सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 1 से 10 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र अंक 2	सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 11 से 20 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र अंक 3	सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ संकलन 21 से 30 तक
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	लाठ परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 2	चनाणी परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 3	नवेटिया परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 4	जगतरामका परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 5	खोवाला परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 16 - सिंघल (Singhal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 6	समराया परिवार सिंघल (Singhal) गोत्र की वंशावलियाँ

|| वंशावली पुस्तकों की सूची||

पुस्तक	विवरण
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 17 - तायल (Tayal) गोत्र	तायल (Tayal) गोत्र की वंशावलियाँ
वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रवाल समाज वंशावली वार्षिक पुस्तक 2023 शाखा 17 - तायल (Tayal) गोत्र कुटुंबशाखा अंक 1	सेढू परिवार तायल (Tayal) गोत्र की वंशावलियाँ

।। अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध - शोध पत्र ।।

श्री हर्ष वर्धन गोयल, सिंगापुर

महान सनातन पौराणिक कथाओं में कुबेर को धन का स्वामी अर्थात गणेश धनेश का स्थान प्राप्त है, कुबेर धन के देवता हैं। कुबेर न केवल धन के देवता माने जाते हैं अपितु वे यक्षों के राजा भी हैं। और उत्तर दिशा के दिक्पाल भी है उन्हें संसार के रक्षक अर्थात लोकपाल का सम्माननीय स्थान भी प्राप्त है। धन और ऐश्वर्य के देवता का निवास स्थान पहले लंका और बाद में अलकापुरी हुआ, इनके पिता ऋषि विश्रवा और माता देववर्णिणी हैं। कुबेर की भार्या भद्रा हुईं, जो सूर्य देव और छायदेवी की पुत्री थी। धन के देवता कुबेर ने उससे विवाह किया, जिनसे उनकी नलकुबेर, मणिभद्र, गंधमादन संतान हुईं, इनकी सवारी वराह और नकुल है।

अग्रोहा की खुदाई से मिले नाना प्रकार के आभूषण और मूर्तियों में, कुबेर की मूर्तियाँ भी मिली हैं। ये मूर्तियों बहुत ही प्राचीन हैं , इससे अनुमान होता है कि अग्रोहा के वैश्य लोग लक्ष्मी के साथ धन के अधिपति कुबेर की पूजा भी करते रहे होंगे। आइए, आज हम धन के स्वामी कुबेर और उनके वैश्य कुल से संबंधों के बारे में जानेंगे।

"पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने अनेक प्राणी बनाएँ और उन्हें समुद्र के जल की रक्षा का कार्य सौंपा तब उन प्राणियों में से कुछ बोले कि हम इसकी रक्षा अर्थक रक्षण करेंगे और कुछ ने कहा कि हम इसका यक्षण अर्थक पूजा करेंगे। इस पर ब्रह्माजी ने कहा, तथास्तु , जो रक्षण करेगा वह राक्षस कहलायेगा और जो यक्षण करेगा वह यक्ष कहलायेगा। इस प्रकार वह प्राणियों का वर्ग, दो जातियों में बँट गए।

राक्षसों में हेति और प्रहेति दो भाई थे। प्रहेति तपस्या करने चला गया, परन्तु हेति ने भया से विवाह किया जिससे उसके विद्युत्केश नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। विद्युत्केश के सुकेश नामक पराक्रमी पुत्र हुआ। सुकेश के माल्यवान, सुमाली और माली नामक तीन पुत्र हुए। तीनों ने ब्रह्मा जी की तपस्या करके यह वरदान प्राप्त कर लिए कि हम लोगों का प्रेम अटूट हो और हमें कोई पराजित न कर सके। वर पाकर वे निर्भय हो सुरों-असुरों को सताने लगे।

माल्यवान के सात वज्रमुष्टि, विरूपाक्ष, दुर्मुख, सुप्तघ्न, यज्ञकोप, मत्त और उन्मत्त नामक पुत्र हुए। सुमाली के प्रहस्त्र, अकम्पन, विकट, कालिकामुख, धूम्राक्ष, दण्ड, सुपार्श्वस, संह्लादि, प्रधस एवं भारकर्ण नमक दस पुत्र हुए। माली के चार पुत्र अनल, अनिल, हर और सम्पाती हुए।

।। अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध - शोध पत्र ।।

ये सब बलवान और दुष्ट प्रकृति के थे और ऋषि-मुनियों को कष्ट दिया करते थे। उनके कष्टों से दुःखी होकर ऋषि-मुनिगण भगवान विष्णु की शरण में गए तब दयावान भगवान् विष्णु ने उन्होंने आश्वासन दिया कि हे ऋषियों! मैं इन दुष्टों का अवश्य ही संहार करूँगा। जब राक्षसों को इस प्रकरण की सूचना मिली तो वे सब मन्त्रणा करके संगठित हो माली के सेनापतित्व में इन्द्रलोक पर आक्रमण करने के लिये चल पड़े। इंद्र स्वयं भगवान विष्णु की सरण में पहुँचे, भयंकर युद्ध हुआ और सेनापति माली सहित बहुत से राक्षस मारे गए माल्यवान युद्धभूमि में बचे हुआ राक्षसों के साथ लड़ा किन्तु भगवान विष्णु के हाथों अन्त में वह भी काल का ग्रास बना। भगवन नारायण के संहार से डर से शेष बचे हुये राक्षस सुमाली के नेतृत्व में पाताल में जा बसे।

यह तो पूर्व का इतिहास था आइये अब वैश्य कुल के बारे में जाने , सनातन धर्म में वैश्य वर्ण की उत्पत्ति का उल्लेख अनेको प्राचीन ग्रंथों जैसे यजुर्वेद, अथर्ववेद, गरुड़ पुराण, वराह पुराण, मनुस्मृति, वर्णविवेक चंद्रिका, वर्णविवेक सार आदि में किया गया है। ज्ञाति भास्कर, वर्णविवेक चन्द्रिका इत्यादि अनेकों पुस्तकों में सृष्टि का उत्पत्ति क्रम बताते हुए वैश्यों की उत्पत्ति का भी वर्णन किया गया है। कि किस प्रकार परम पिता ब्रह्मा के उदर से वैश्य कुल का निर्माण हुआ। प्रजापति ब्रह्मा के उदर से वैश्यों के मूलपुरुष दिष्टि महापुरुष हुए, दिष्ट के पुत्र का नाम था नाभाग, नाभाग ने वैश्य कर्म अपनाया, उनके का पुत्र वैश्य शिरोमणि भलन्दन हुए, भलनन्दन और उनकी स्त्री मरूत्वती से वत्सप्रीति नामक संतान हुई और वत्सप्रीति से प्रांशु हुए। प्रांशु के 6 पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः मोद, प्रमोद, बाल, मोदन, प्रमर्दन, शंकु और कर्ण हुआ। इनके भी पृथक-पृथक वैश्य कर्म अपनाए। प्रमर्दन के पुत्र प्रमति, प्रमति के खनित्र, खनित्र के चाक्षुष और उनके विविंशति पुत्र हुए। विविंशति के पुत्र रम्भ और रम्भ के पुत्र खनिनेत्र-दोनों ही परम धार्मिक हुए। उनके पुत्र करन्धम और करन्धम के अवीक्षित् नामक विश्व विख्यात पुत्र हुए अवीक्षित् के पुत्र मरुत्त चक्रवर्ती राजा हुए। उनसे अंगिरा के पुत्र महायोगी संवर्त्त ऋषि ने यज्ञ कराया था। मरुत्त का यज्ञ बहुत अद्वितीय था, उस जैसा यज्ञ पहले कभी नहीं हुआ था। उस यज्ञ की विशेष बातों में एक बात यह थी कि उस यज्ञ के समस्त छोटे-बड़े पात्र अत्यन्त सुन्दर एवं शुद्ध सोने के बने हुए थे। यज्ञ में मरुद्गण और विश्वेदेव सभासद थे। उस यज्ञ में देवता बहुत प्रसन्न हुए और बहुमूल्य दक्षिणाओं से ब्राह्मण तृप्त हो गए थे। कहते हैं कि ब्राह्मणों को इतना दान दिया कि वे उसे ले जा भी न पाए और दान का अधिक कुछ वहीं छोड़ गए। वही बचे हुए स्वर्ण पात्र और धन, जो द्वापर युग में युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ, महाराजा युधिष्ठिर ने भव्य यज्ञ किया।

।। अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध - शोध पत्र ।।

मरुत्त के पुत्र का नाम था दम। दम से राज्यवर्धन, उससे सुधृति और सुधृति से नर नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। नर से केवल, केवल से बन्धुमान्, बन्धुमान् से वेगवान, वेगवान से बन्धु और बन्धु से राजा तृणबिन्दु का जन्म हुआ। वैश्य कुल के मान चक्रवर्ती सम्राट तृणबिन्दु की अलमबुशा नामक अप्सरा से इडविडा नामक उत्पन्न पुत्री हुई।

आइये अब हम यक्ष वंश का वर्णन करते है परमपिता ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों मैं से एक पुलस्त्य नामक पुत्र हुए जो उन्हीं के समान तेजस्वी और गुणवान व प्रथम मन्वन्तर के सात सप्तर्षियों में से एक थे। महर्षि पुलस्त्य का आश्रम महगिरि पर्वत पर स्थित था पुलस्त्य ऋषि का विवाह कर्दम ऋषि की नौ कन्याओं में से एक से, हविर्भू नामक कन्या से हुआ उनसे ऋषि के दो पुत्र उत्पन्न हुए -- महर्षि अगस्त्य एवं विश्रवा।
विश्रवा महान ऋषि पुलस्त्य के पुत्र थे। स्वयं अपने पिता के समान वेदविद् और धर्मात्मा थे। विश्रवा की पत्नी थी इलाविडा जिन्हे वरवर्णिनी नाम से जाना जाता है जो वैश्य कुल चक्रवर्ती सम्राट तृणबिन्दु की अलमबुशा नामक अप्सरा से उत्पन्न पुत्री थी। उनसे ही वैश्रवण तथा विभीषण नामक पुत्र हुए थे, इस प्रकार धन के स्वामी कुबेर की माता वैश्य कुल की राजकुमारी थीं।
प्रतापी वैश्रवण बहुत ही धर्मात्मा और विद्वान थे उसने भारी तपस्या करके ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया और यम, इन्द्र तथा वरुण के सदृश लोकपाल कुबेर का पद पाया।
अब हम पौराणिक कथाओं में वर्णित, स्वर्ण नगरी लंका की कहानी कहते हैं। एक बार लक्ष्मी जी और विष्णु जी भगवान शिव-पार्वती से मिलने के लिए कैलाश पर पधारे। कैलाश के वातावरण में अत्यधिक शीतलता होने के कारण लक्ष्मी जी ठंड से ठिठुरने लगीं। कैलाश पर ऐसा कोई महल भी नहीं था जहाँ पर लक्ष्मी जी को थोड़ी राहत मिलती इसलिए लक्ष्मी ने सहज भाव से पूछ लिया कि एक राजकुमारी भला इस प्रकार जीवन कैसे व्यतीत कर सकती हैं। कैलाश से जाते-जाते उन्होंने पार्वती और शिव जी को बैकुण्ठ आने का निमंत्रण दिया। माँ लक्ष्मी के न्योते को स्वीकार करते हुए कुछ दिन बाद शिव और मां पार्वती एक साथ बैकुण्ठ धाम पहुँचे।
बैकुण्ठ धाम के वैभव को देखकर पार्वती जी आश्चर्यचकित रह गईं। जिसके बाद उनके अंदर लालसा जगी कि उनके पास भी एक वैभवशाली महल हो और मां पार्वती, कैलाश पर भगवान शिव से महल बनवाने की हठ करने लगीं। भगवान शिव ने पार्वती जी को भेंट करने के लिए विश्वकर्मा से विश्व का अद्वितीय स्वर्ण महल बनवाया।

।। अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध - शोध पत्र ।।

सयोंगवश, ऋषि पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा गृह प्रवेश यज्ञ के पुरोहित बने और देव इच्छा से वशीभूत स्वर्ण महल को यज्ञ दक्षिणा में माँग बैठे, इतना सुंदर और भव्य स्वर्ण महल पूरे त्रिलोक में अद्वितीय था।

भगवान शिव को ब्राह्मण का खाली हाथ लौटाना धर्म विरुद्ध लगा क्योंकि शास्त्रों में वर्णित है कि आए हुए याचक को कभी भी खाली हाथ नहीं जाने देना चाहिए, अतः भोले शंकरजी ने खुशी-खुशी महल दान में दे दिया। इस प्रकार लंका पर विश्रवा और उनके बड़े पुत्र कुबेर का अधिपत्य हुआ

इधर, राक्षसों के विनाश से दुःखी होकर पातळ में रहते सुमाली ने अपनी पुत्री कैकसी से कहा कि पुत्री! राक्षस वंश के कल्याण के लिये मैं चाहता हूँ कि तुम परम पराक्रमी महर्षि विश्रवा के पास जाकर उनसे पुत्र प्राप्त करो। वही पुत्र हम राक्षसों की देवताओं से रक्षा कर सकता है।

कैकसी ने विश्रवा की बहुत सेवा की और पुलस्त्य ऋषि के पुत्र और महर्षि अगस्त्य के भाई महर्षि विश्रवा ने राक्षसराज सुमाली और ताड़का की पुत्री राजकुमारी कैकसी से विवाह किया था। चूँकि केकशी ने छल से विश्रवा से विवाह किया जिससे विश्रवा ने केकशी को श्राप दिया कि मेरे द्वारा उत्पन्न पुत्र राक्षस ही होंगे। कैकसी के तीन पुत्र और एक पुत्री थी- रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण और सूर्पणखा। रावण ने दिति के पुत्र मय की कन्या मन्दोदरी से विवाह किया, जो हेमा नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। विरोचनपुत्र बलि की पुत्री वज्रज्वला से कुम्भकर्ण का और गन्धर्वराज महात्मा शैलूष की कन्या सरमा से विभीषण का विवाह हुआ।

रावण बहुत ही क्रूर और अत्याचारी निकला। ऋषि पुत्र होने के कारण वह शास्त्रों का ज्ञाता था किन्तु वह बहुत ही अधर्मी और दुष्ट प्रवति का निरकुंश शासक था उसके अत्याचारों से धरती काँप उठी। जब कुबेर ने रावण के अनेक अत्याचारों के विषय में जाना तो अपने एक दूत को रावण के पास भेजा। दूत ने कुबेर का संदेश दिया कि रावण अधर्म के कार्यों को छोड़ दे। रावण के नंदनवन उजाड़ने के कारण सब देवता भी उसके शत्रु बन गये हैं। रावण ने क्रुद्ध होकर उस दूत को अपनी खड्ग से काटकर राक्षसों को भक्षणार्थ दे दिया। कुबेर को यह सब जानकर बहुत बुरा लगा। रावण तथा राक्षसों का कुबेर तथा यक्षों से युद्ध हुआ। यक्ष बल से लड़ते थे और राक्षस माया से, अत: राक्षस विजयी हुए। रावण ने माया से अनेक रूप धारण किए तथा कुबेर के सिर पर प्रहार करके उसे घायल कर दिया और बलात् उसका पुष्पक विमान और लंका पुरी का राज्य तथा समस्त संपत्ति छीन ली।

।। अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध - शोध पत्र ।।

कुबेर अपने पितामह के पास गए। उनकी प्रेरणा से कुबेर ने शिवाराधना की। कुबेर ने भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय पर्वत पर तप किया। तप के अंतराल में शिव तथा पार्वती दिखाई पड़े। कुबेर ने अत्यंत सात्त्विक भाव से पार्वती की ओर बाएँ नेत्र से देखा। पार्वती के दिव्य तेज से वह नेत्र भस्म होकर पीला पड़ गया। कुबेर वहाँ से उठकर दूसरे स्थान पर चला गया। वहाँ कुबेर ने घोर तप किया और प्रसन्न होकर शिव ने कहा-'तुमने मुझे अपने तप के बल से जीत लिया है। तुम्हारा एक नेत्र पार्वती के तेज से नष्ट हो गया, अत: तुम एकाक्षीपिंगल कहलाओगे। फलस्वरूप उन्हें 'धनपाल' की पदवी दी और गौतमी के तट का वह स्थल जहाँ कुबेर ने तपस्या की थी धनदतीर्थ नाम से विख्यात है।

इस प्रकार वैश्य कुल की माता से जन्मा कुबेर धनपाल और दिक्पाल बना । अतः अग्रोहा में कुबेर की मूर्ति मिलना मात्र एक संयोग नहीं अपितु हमारी प्राचीन संस्कृति और इतिहास और धरोहर का एक अटूट अंग है।
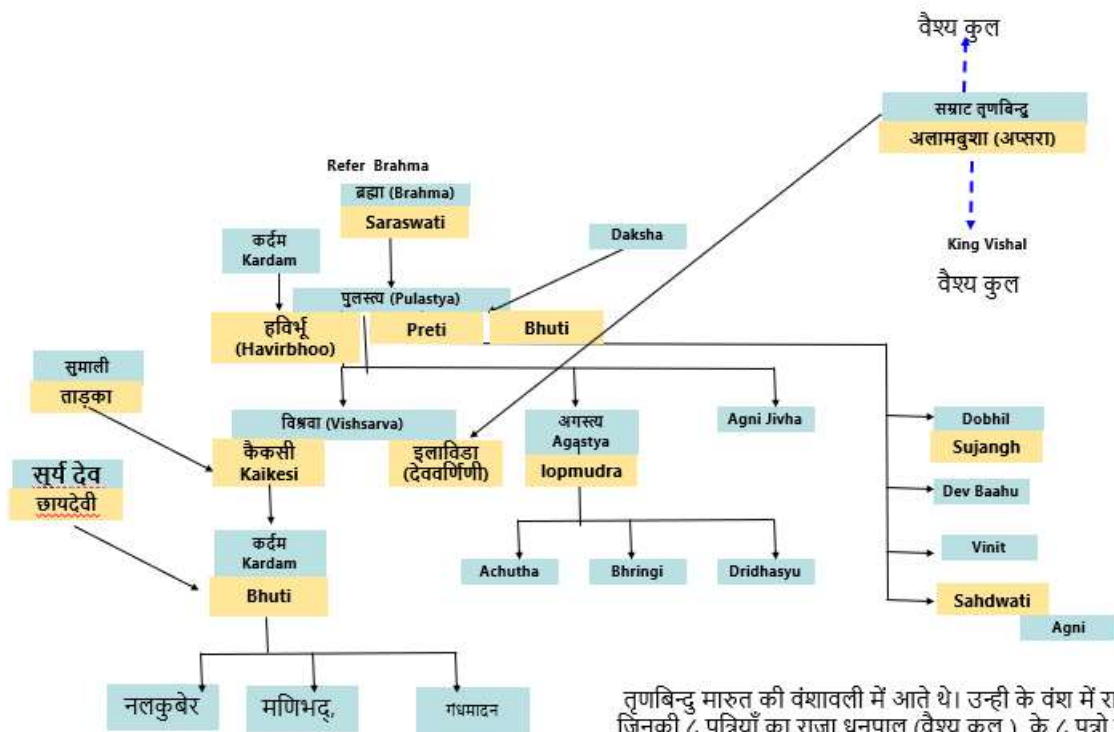
।। वर्णवाल भी है अग्रवाल।।

श्री हर्ष वर्धन गोयल, सिंगापुर

इतिहास शब्द दो शब्दों से बना है इति + हास। इतिहास अर्थात यह घटित हो चुका है, संभवतः इंग्लिश भाषा का शब्द हिस्टरी भी हास धातु से ही बना है। इतिहास में ज्ञात घटनाओं को व्यवस्थित ढंग से बुनकर ऐसा चित्र उपस्थित करने का प्रयास किया जाता है जो सार्थक और सुसंबद्ध हो। इतिहास के मुख्य आधार घटनास्थल के वे अवशेष होते हैं जो कहानियों, दन्तकथाओं, लोकगीतों, प्राचीन पुस्तकों, वास्तु अवशेषो आदि रूप में चारो ओर बिखरे पड़े होते हैं। कई बार पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित एतिहासिक चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए कुछ विद्वान् कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है किन्तु प्राप्य तथ्यों और सामग्री के आधार पर वैज्ञानिक ढंग से जाँच, विवेक और ऐतिहासक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता के यथोचित संमिश्रण से इतिहास का उचित स्वरूप रचा जाता है।

इसी अवधारणा के साथ आज हम वर्णवाल वैश्य समाज की उत्पत्ति पर कुछ बिंदु रखेंगे, यह तो सर्विदित है कि वर्णवाल समाज की स्थापना महाराजा अरिवरण ने की थी मेरी शोध, उनकी वंशावली और समाज को जोड़ने पर आधरित है आपके लिए प्रस्तुत है।

हम सभी जानते हैं कि अग्रवाल समाज के प्रणेता प्रातः समरणीय श्री महाराजा अग्रसेन हुए। महाराज अग्रसेन ने राजधर्म के साथ अहिंसा परमोधर्म का व्रत अपनाया और बिखरे हुए समाज को एक रुपया एक ईंट की आधारभूत सहायता देते हुए अपने वंशजों को वैश्य कर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने १८ यज्ञ किये और १८ पुत्रों का एक-एक गोत्र निश्चित किया। महाराजा अग्रसेन के गेंदुमल नामक पुत्र से गोयल गोत्र चला, कुंवर गेंदु मल जी का पहला विवाह रोह्ताश्गढ़ (गढ़लौटा) के राजा चंद की पुत्री, राजकुमारी चन्द्रावती से हुआ, चंद्रावती से चार पुत्र पारशिव, कहरशिव, उमाशिव व नमाशिव और चार पुत्रिया नमौशी, नारायणी,मधुवंती व अर्धावती हुई।

गेन्द्रूमलस्य पुत्रोभूद्वाराक्षो नाम वैश्यकः ।
तद्वंशे वर्णलालोभून्मतिमाँल्लोकविश्रुतः ॥

गेंदु मल जी का दूसरा विवाह नाग वंश की राज कन्या ताम्बूलदेवी से हुआ

इनसे चार पुत्र वराक्ष, खराक्ष, रम्भाक्ष, तमाक्ष हुए और तीन कन्या नमो, वंती, नारायणी व वेद वंती हुई। खराक्ष (कहीं कहीं पर कराशिव भी लिखा है) के पुत्र भारामल और भारामल जी के पुत्र गंधरप हुए।

महाराजा अग्रसेन ने गणराज्य व्यवस्था से राज्य स्थापित किया अपने पिता के समान ही कुंवर गेंदमल जी भी अपने गणराज्य के एक योग्य और पराकर्मी राजा हुए और उनकी मृत्यु के पश्चात्, उनके बड़े पुत्र राजा बने और कई पुत्रों ने अन्य स्थानों की और प्रस्थान किया। इसी क्रम में तेंदू मल के पुत्र वाराक्ष का दिनोद गांव (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में आगमन हुआ और परिपाटी के अनुसार यह अग्रवाल (पूर्ववत - राजपूत) वैश्य परिवार स्थान परक नाम डोड अथवा दिनोदिया नाम से संबोधित हुआ। ज्ञात्त रहे कि दिनोदिया अग्रवालों का वर्तमान में भी एक उपनाम है जिनका गोत्र गोयल होता है।

दिनोद गांव का क्षेत्र वही 'अहर' क्षेत्र का बाहरी भाग था जो हस्तिनापुर की पतन के बाद, पांडवों का प्रमुख स्थल बना था। महाराज वाराक्ष की सातवीं पीढ़ी में राजा परमाल हुए। राजा परमाल एक बहुत ही योग्य और कुशल प्रशासक थे। महाराज वाराक्ष के वंशज राजा परमाल ने 'अहार' नामक स्थान में अपने राज्य की नींव डाली। पौराणिक कथा के अनुसार इस स्थान पर पांडवों के वंशज ‘जनमेजय’ ने अपने पिता परीक्षित को तक्षक नाग द्वारा डसे जाने का बदला लेने के लिए नागवंश को समूल नष्ट करने के लिए सर्पयज्ञ किया था। यह वही क्षेत्र था जहाँ भगवान शिव का अपने ससुर प्रजापति दक्ष से संवाद हुआ था, यहीं अहार गांव का बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध मां अवन्तिका का मंदिर था (वर्तमान में भी स्थित है) जहाँ भगवान श्री कृष्ण ने अपनी प्रियतमा रुकमणी का वरन किया जबकि शिशुपाल रुकमणी से, उसकी इच्छा के विरूद्ध विवाह करना चाहता था।

अब मुख्य बिंदु पर आते हैं, राजा परामल का विवाह राजकुमारी भद्रावती से विवाह हुआ, भद्रावती दक्षिण प्रान्त के शासक भद्रनाग की बहन थी। राजा परामल ओर राजकुमारी भद्रावती ने वरण वन के वृक्षों के मध्य एक महान पुत्र को जन्म दिया, वह महान पुत्र वरण नाम से जाना गया। और राज्याभिषेक हो जाने पर

महाराजा अहिबरन नाम से, आर्य नरेश महाराजा अहिबरन ने खाण्डवदेश भाग का उद्धार किया और नदी के तट पर जहां उनका जन्म हुआ था वहाँ उन्होंने वरन नगर नाम (वर्तमान में बुलंदशहर) से एक नगर बसाया। इक्षुमती नदी को तभी से वरणावती नदी (वर्तमान में काली नदी) कहा जाने लगा,

।। वर्णवाल भी है अग्रवाल।।

महाराजा अहिबरन ने अपने पूर्व पितामह महाराजा अग्रसेन के चरण चिन्हों पर चल समाज को फिर से संगठित किया। सूर्यवंशी महाराजा अहिबरन का विवाह खांडव के राजा की पुत्री राजकुमारी वारणावती से हुआ था। और इस प्रकार महाराजा अहिबरन से बरनवाल समाज की उत्पत्ति हुई। इक्षुमती नदी अर्थात वरणावती नदी के पश्चिम वरण वृक्षों का सघन क्षेत्र था, उसको अपनी राजधानी बनाकर महाराज अहिबरन ने चन्द्रावती राज्य का विस्तार किया। चन्द्रावती से वरणावती तक भद्रावत क्षेत्र 'बरन' नगर नामक राजधानी से संचालित होता था। बरनवाल वंश के अग्रज राजा परमाल ने जिस नगर का निर्माण किया था वह काली नदी के आस पास की भूमि से वह स्थान काफी ऊँचा था अतैव साधारण जन समुदाय में वह ऊँचा नगर (कोट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया उसके अंश अब तक देखे जा सकते हैं।

महाराजा अहिबरन और महारनी वारणावती के महाराजा भद्रवाह नामक पुत्र हुआ। भद्रवाह नरेश ने चन्द्रावती राज्य का विस्तार किया कालान्तर में वरणावती नदी के पश्चिम का समग्र वरन वृक्षों का संघन क्षेत्र वारण: जनपद कहा जाने लगा। महाराजा अहिबरन के शासन में चन्द्रावती राज्य का समृद्ध व गौरवशाली समाज अध्यात्मिक ज्ञान व वेदों के सिद्धातों पर आधारित था। जिनमें ग्राम स्तर पर कालान्तर समाज की शिक्षा अनुशासन एवं स्थापित में वरण परम्पराओं के अन्तर्गत व्यवस्थित थी। शासन का दायित्व समाज सुरक्षा व न्याय प्रदान करना होता था। मानपुर से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य के अनुसार डोड वंश के अनेकों राजाओं ने बरन पर शासन किया। प्राप्त ताम्रपत्र में राजा हरदत्त के वंशानुक्रम राजाओं का स्पष्ट उल्लेख है, जोकि निम्न प्रकार से है। 1. चन्द्रक , 2. धरनी वाराह , 3. प्रभास, 4. भैरव, 5. रूद्र 6. गोविन्द राज, 7. हरदत्त, 8. भागादित्य 9. श्री कुलदित्य, 10. विक्रमादित्य 11. भूपति (पद्मादित्य) 12. भोजदेव, 13. सहजदित्य, 14. अनंग हुए।

सन् 1193 ई0 में राजा चन्द्रसेन के समय में बरन पर मोहम्मद गौरी ने आक्रमण किया। राजा ने इस आक्रमण से दुर्ग की रक्षा के लिए कड़ा संघर्ष किया और मोहम्मद गौरी के सेनापति को वीरता पूर्वक लड़कर यमलोक दिखाया लेकिन स्वजातीय अजय पाल तथा देशद्रोही हीरा सिंह की सत्तालोनुपता के कारण शत्रु दुर्ग में प्रवेश कर गये और राजा ने वीरगति को प्राप्त की। मोहम्मद तुगलक दिल्ली का सुल्तान बन गया और उसने दोआब (बरन) में असहनीय भूमिकर लगाया। और प्रजा को पलायन के लिए विवश किया।

।। वर्णवाल भी है अग्रवाल।।

मुगल शासन काल में बरन शहर का फारशी नाम बुलंदशहर कर दिया गया किन्तु सभी राजकीय कार्य न्यायालय आदि में आज भी इस महान राजा के सम्मान में बरन शहर ही लिखा जाता है। महाराजा अग्रसेन के पुत्र का नाम गेंदमल होना, उनका विवाह चंद्रवती से होना, उनके पुत्र का नाम वराक्ष होना, गोयल गोत्र होना, डोड/दिनोदिया उपनाम का गोयल गोत्र होना, वर्णवाल और अग्रवाल का वैश्य होना, गणराज्य आधरित राज्य करना, आपस में रोटी-बेटी का सम्बन्ध होना, सभी तथ्य एक-रूपता को स्थापित करते हैं कि वर्णवाल भी अग्रवाल ही हैं। दिए बिंदुओं पर कदाचित और शोध कर इसे निर्विवाद अकाट्य रूप से स्थापित किया जा सकता है।
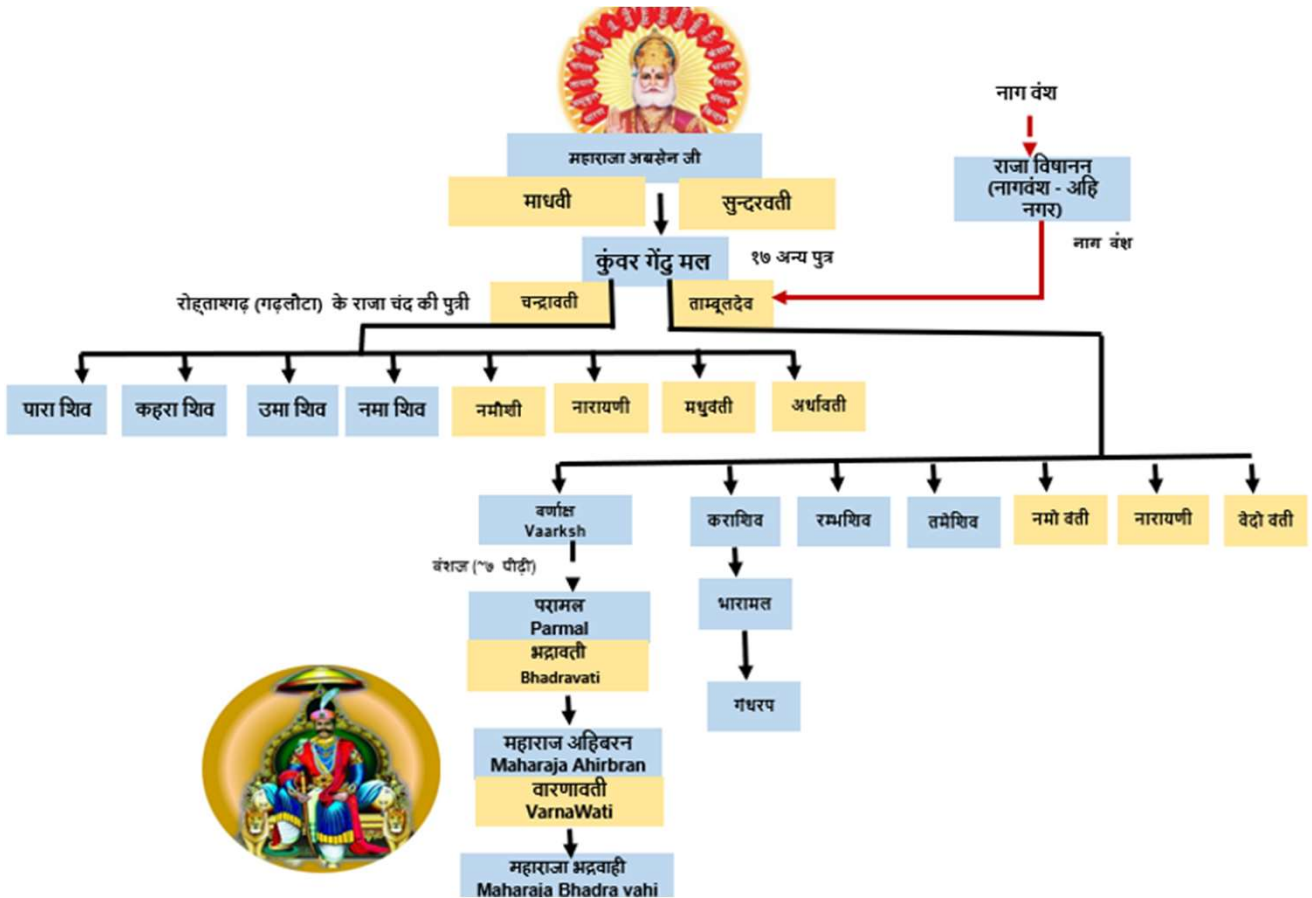
।। बौद्ध चंपेय्य जातक कथा - महाराजा अग्रसेन का वर्णन ।।

श्री हर्ष वर्धन गोयल, सिंगापुर

प्राचीन उपनिषदों के काल से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय मनीषी, जनमानस का पथ प्रदर्शन विभिन्न कथाओं, आख्यायिकाओं और दृष्टान्तों के माध्यम से करते रहे हैं, उन्हें सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाते रहे हैं और इसी सनातनी प्रवृत्ति के आधार पर जातककथाओं का भी विकास हुआ। विद्वानों का मानना है कि जातक कथाएँ, गौतमबुद्ध के निर्वाण के बाद उनके शिष्यों द्वारा लिखी गयी थीं। इन कथाओं में माध्यम से, भूत और वर्तमान के प्रसिद्ध व्यक्तित्व की कथा वस्तु को लेकर नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। वस्तुतः जातक कथाएँ लोक-साहित्य का ही एक रूप हैं।

यह कथा बौद्ध पुस्तक चंपेय्य नामक जातक में वर्णित है जिसमें महाराजा अग्रसेन को एक समृद्ध, न्यायप्रिय, प्रजा वत्सल और सभी प्राणियों के हित के रक्षक रूप में वर्णित किया गया है। यद्यपि महाराजा अग्रसेन का राज्य वाराणसी बताया गया है परंतु प्रायः लोककथाओं में यह प्रवृति देखने को मिलती है कि सदाचारी न्यायप्रिय राजा के गुण दर्शाने के लिए राजा को धर्म नगरी वाराणसी का राजा बता दिया जाता था। महाराजा अग्रसेन का नागवंश से सम्बन्ध विश्वविदित है, यह चंपेय्य नामक जातक कथा उस सम्बन्ध के होने को और अधिक पुष्ट करती है। यह कथा इतिहासिक अन्वेषण में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

यह गाथा है चंपा नगरी के नागराज चंपेय्य की जिसे एक प्रवीण तक्षशिला से शिक्षित युवक ने अपने बुद्धि और मन्त्र बल से सम्मोहित कर लिया था और युवक सपेरा प्रवृत्ति में लिप्त होकर, नगर-नगर जा कर नाग और नागमणि का प्रदर्शन करवा कर धनोपार्जन करता था। अंततः किस प्रकार वह महाराजा अग्रसेन के दरबार में पहुँचते हैं और वहाँ उन्हें मुक्ति मिलती है।

कथा इस प्रकार है - एक समय की बात है अंग और मगध राज्य के पास एक चंपा नामक नदी थी जहां नागों का निवास स्थान था, वहां का राजा नागराज चंपेय्य बहुत प्रभुत्व और संपन्न राजा था।

एक बार मगध और अंग राज्य में युद्ध छिड़ गया। युद्ध बड़ा भयंकर हुआ। मगध का राजा जब अंग के योद्धाओं द्वारा पीछा करते हुए पीछे हटने लगे तब वह चंपा नदी के पास पंहुचे, उस समय चंपा नदी में बाढ़ आ हुई थी। उसने सोचा, "शत्रुओं के हाथों मरने से इस नदी में डूबकर मरना श्रेष्ठ है!" ऐसा सोचकर मगध के राजा अपने घोड़ा सहित नदी के कूद गए।

।। बौद्ध चंपेय्य जातक कथा - महाराजा अग्रसेन का वर्णन ।।

लेकिन राजा और उसका घोड़ा जैसे ही नदी में और अंदर गए वह यकायक एक विचित्र नगरी में उतरे जहाँ नागराज चंपेय्य का दरबार लगा था। नागराज राजा चंपेय्य ने नदी में पानी के नीचे अपना नगर बसाया था वह स्वयं एक रत्नजड़ित मंडप पर बैठे थे और अपने दरबार के बीच में उस समय मनोरंजक कार्यक्रम का आनंद ले रहा रहे थे ।

मगध राजा ने नागराज को देखा और नागराज ने मगधराज को, दोनों चकित थे नागराज ने अपने स्थान से उठकर, मगधराज को आदर किया और उसे किसी भी प्रकार से न डरने का आश्वासन दे कर उनके आने का कारण पूछा। राजा ने सब कुछ ज्यों का त्यों बता दिया। तब नागराज ने कहा, "हे राजा, किसी बात से मत डरो! मैं तुम्हें दोनों राज्यों का स्वामी बनाऊंगा।" इस प्रकार उस ने उसे सान्त्वना दी, और सात दिन तक उसका बड़ा आदर करते रहे। सातवें दिन वह मगध राजा के साथ नाग महल से निकल, नागो की शक्ति से, मगध ने अंग पर भी अधिपत्य कर लिया और फिर दोनों राज्यों पर मगध का शासन हो गया।

इस प्रकार एक बार मनुष्य लोक देखने पर, कुछ वर्षों बाद नागराज चंपेय्य के मन में भी पुनः इच्छा हुई कि वह मनुष्यों के लोक को विस्तार से देंखे मनुष्यों के बीच जाये और उनका अनोखा संसार देंखे। यह विचार करते हुए इच्छाधारी नाग ने अपना नाग का रूप उतार दिया, और भव्य पोशाक और आभूषण पहन मानव लोक में जाने के लिए सज्ज हुआ तब उसकी नागिन पत्नी ने उसे चेतवानी दी और बोली "यह हमारे नियमों का उल्लंघन है नागों को ऐसा नहीं करना चाहिए।

लेकिन अपनी इच्छा से आगे नागराज नहीं माना और वह शीघ्र ही लौटने की बात कह महल से निकलकर एक सीमांत गांव की ओर चला गया। उस गांव के निवासियों ने उसे महान पराक्रमी नागों का राजा समझकर उसके लिए एक मण्डप स्थापित किया और उसके सामने सुगन्धित द्रव्यों और सुगन्धित वस्तुओं से उसकी पूजा की। नागराज चंपेय्य बहुत प्रसन्न हुआ और रात्रि होने से पहले ही वह अपने महल में लौट आया। एक प्रकार समय-समय पर नागराज चंपेय्य मनुष्यों के बीच जाने लगा।

एक दिन उसकी पत्नी सुमना ने कहा कि हे प्रभु ! मुझे आपका इस प्रकार बार-बार मनुष्यों के बीच में जाना उचित नहीं लगता हैं। मनुष्यों की दुनिया बहुत जटिल और भय से भरी है।

।। बौद्ध चंपेय्य जातक कथा - महाराजा अग्रसेन का वर्णन ।।

मान लीजिए कि आप पर कोई संकट आ जाए, तो मैं किस संकेत से इसके बारे में जानूँगी। तब नागराज उसे एक जलकुम्भ के पास ले गया, और कहा, "यदि कोई मुझ पर आक्रमण करेगा अथवा चोट पहुँचाएगा, तो इसका पानी गंदा हो जाएगा। यदि कोई पक्षी मुझे उठा ले जाएगा, तो इसका पानी सूख जाएगा। यदि कोई सपेरा मुझे पकड़ लेगा तो पानी का रंग लाल रंग का हो जायेगा। इन तीन संकेतों से तुम समझ जाना और वह अपने महल से बाहर चला गया, उसकी मणि की चमक से सारा पथ प्रकाशित हो रहा था।

उन दिनों बनारस का एक युवा छात्र तक्षशिला से एक विश्व-प्रसिद्ध शिक्षक के चरणों में अध्ययन करके वापिस अपने राज्य आया था, उसने कई गुप्त विधाओं को सिद्धहस्त कर लिया था। उसने सम्मोहन और आकर्षण के मन्त्र को भी सिद्ध किया था वह मन्त्र पढ़ किसी भी प्राणी को आपने नियंत्रण में कर सकता था।

वापिस लौटे समय उसने मार्ग पर नाग को देखा जिसकी मणि बहुत दूर से चमक रही थी उसने सोचा "मैं इस नाग को पकड़ लूंगा तो इसे नगर-नगर गांव-गांव दिखाकर बहुत सा धन कमा सकता हूँ। "

उसने आकर्षण का मन्त्र दोहराते हुए नाग को वशीभूत कर लिया। नागराज ने अपने पूर्ण विष के साथ उस सपेरे पर प्रहार किया किया किन्तु उस शिक्षित युवक ने पहले से एक जड़ी-बूटी खाई थी, जिससे उस पर विष का कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसने सम्मोहन मन्त्र पढ़ा और नाग को पूंछ से पकड़ लिया, और फिर उसके सिर को कसकर पकड़ लिया उसके दांत तोड़ उसे विषहीन कर दिया।

युवक ने एक व्यवासिक सपेरे की भांति नाग को टोकरी में रख लिया और गांव ले जाकर भीड़ के सामने उसका प्रदर्शन किया। सहस्त्रों की संख्या में लोग ने जीवित नाग को मणि के साथ देखा उन्होंने बहुत सारा धन दिया, एक ही दिन में उसे इतना धन मिल गया तो युवक सपेरे का लालच बढ़ गया तो उसने सोचा, "एक छोटे से गाँव में मैंने यह सब प्राप्त किया है यदि में नगर में प्रदर्शन करूँ तो न जाने कितना धन मिलेगा। राजाओं और दरबारियों से मैं जितना भी धन चाहूँ उतना धन प्राप्त कर सकता हूँ!" ऐसा निर्णय कर वह महाराजा अग्रसेन के राज्य में नाग के प्रदर्शन की इच्छा से चल पड़ा।

वह गांव-गांव, नगर-नगर नाग का प्रदर्शन करता हुआ महाराजा अग्रसेन की समृद्ध महानगरी आ पहुँचा। वहाँ नगर के फाटकों के पार के गाँवों में नाग का प्रदर्शन कर उसे बहुत धन मिला।

।। बौद्ध चंपेय्य जातक कथा - महाराजा अग्रसेन का वर्णन ।।

उस सम्मोहित नाग के नृत्य की चर्चा महाराजा अग्रसेन के दरबार तक पहुंची, महाराजा ने भी उसे तुरंत बुलवा भेजा।

नगर में चारो और चर्चा थी कि राजमहल में एक नाग अपनी मणि से साथ नाचेगा, लोग इसे देखने के लिये बड़ी संख्या में एकत्रित होने लगे। अगले दिन जब राज दरबार लगा, सपेरे को बुलाया गया तो सपेरे ने एक रत्नजड़ित टोकरी को गलीचे पर रखा। महाराज महल की ऊपरी मंजिल से नीचे आएं और लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच अपने रत्न जड़ित सिहासन पर बैठ गए। सपेरे ने टोकरी से नाग को बाहर निकाला और सम्मोहित नाग ने नृत्य प्रारम्भ किया नाग का नृत्य देखकर लोग शांत नहीं रह सकें, वहाँ विचित्र-सा कोलाहल मचा गया था।

इधर चंपा नगरी में नागराज की पत्नी सुमना बड़े दिनों से बहुत चिंतित थी। नागराज को गए पूरा एक माह बीत गया था, वह सोचने लगी कि मेरे पतिदेव बहुत दिन से वापस नहीं आये हैं; बात क्या हो सकती है? तो उसने जलकुम्भ में देखा, पानी खून की तरह लाल था। तब वह तुरंत समझ गई कि उसे किसी सपेरे ने पकड़ लिया होगा। वह महल से निकल कर गांव में गई, और पूछताछ की; और उसने भी राजमहल में नाग के नृत्य की चर्चा सुनी तो वह तुरंत समझ गई और महाराज अग्रसेन की नगरी की ओर चली।

जब सुमना महाराजा अग्रसेन के राज्य में पहुंची को राजभवन से उच्च कोलाहल सुना आतुर हो वह तुरंत महल के मध्य प्रांगण में पहुंची वहां उसने अपने पति को महाराजा अग्रसेन के दरबार में एक सपेरे का दास बने देखा। वह लोगों के बीच में, महल के आंगन के ऊपर, हवा में ही खड़ी होकर विलाप कर करने लगी। विलाप सुन, नृत्य करते हुए नागराज चंपेय्य ने ऊपर देखा , वह सुमना को अचानक दरबार में उपस्थित देख चौंक उठा, वह बहुत बहुत लज्जित हुआ। उसका सम्मोहन टूट गया और वह सर्प का रूप त्याग अपने राजसी स्वरुप में आ गया। सभी उस इच्छाधारी नाग के इस विचित्र काया पलट से आश्चर्यचकित थे।

सुमना भी प्रकट हो आकाश से नीचे आई और उसके पास खड़ी हो गई। दोनों नाग दम्पति महाराजा अग्रसेन के पास पहुंचे और उनके सामने श्रद्धापूर्वक सम्मान के साथ हाथ जोड़कर खड़े हो गए और मुक्ति की प्रार्थना करने लगे। उन्होंने अपनी सारी कहानी सुनायी। महाराजा अग्रसेन न्यायप्रिय राजा थे, वे उनकी करुण-कहानी से प्रभावित हुए।

।। बौद्ध चंपेय्य जातक कथा - महाराजा अग्रसेन का वर्णन ।।

उन्होंने सपेरे के कहा "मैं तुम्हें यह रत्नजड़ित सुंदर सिंहासन और उसके अतिरिक्त जितनी भी चाहो स्वर्ण मुद्रा, बैल, गाएँ आदि ले लो किन्तु नागराज को मुक्त कर दो। सपेरा को भी अपनी भूल समझ आ गयी थी, उसने उत्तर दिया, "मुझे उपहार नहीं चाहिए, महाराज मैं अब नागराज को अपने बंधन से मुक्त करता हूँ।"

महाराजा अग्रसेन से चंपेय्य राजा को संबोधित किया कि तुम अब स्वतंत्र हो।

चंपेय्य राजा ने कहा "हे महान राजा, प्रजापालक, सभी प्रकार से प्रजा का पालन-पोषण करने वाले स्वामी, उनके हितों की रक्षा करने भूपति, सदैव अहिंसा के वृत पर चलने वाले महान महापुरुष, मै तुम्हारा सम्मान करता हूँ, आदर करता हूँ।

नागराज चंपेय्य नरेश में महाराजा अग्रसेन को चंपा नगरी आने का निमन्त्रण दिया जिसे महाराजा अग्रसेन ने स्वीकार किया।

कुछ समय पश्चात् महाराजा अग्रसेन ने नागों की नगरी जाने का मन बनाया और कुछ दिनों के लिए उनके राज्य में भी अतिथि के रुप में रहे। नागराज ने स्वयं उन्हें नागों की नगरी के दर्शन कराएं, बहुमूल्य वस्तुएं नगर-द्वार और रत्न जड़ित स्तम्भों युक्त भव्य महल दिखाएं। नागों की नगरी बहुत वैभव पूर्ण थी, सभी मार्गों को मणिकों से शानदार ढंग से बनाए सजाया हुआ था। महाराज अग्रसेन से अनेको महलों से युक्त उस रमणीय नगरी को देखा। मुख्य महल का मुख्य कक्ष एक सुर्ख सूरज की भाँति उच्च कोटि के हीरो और मणिकों से दमक रहा था दिव्य इत्र पवन को सुगंधित कर रहे थे। नागलोक में उन्होंने बहुत ही स्वादिष्ट भोजन को ग्रहण किया और सभी प्रकार के सुखों का आनंद उठाया। वहाँ वह चंपेय्य का अथितिय ग्रहण करने के बाद जब वापिस अपने राज्य को लौट आये। तो नागराज ने महाराजा अग्रसेन के सम्मान में कई सौ रथ रत्न, स्वर्ण और अनेको दिव्य वस्तुएँ उपहार में दीं। महाराजा अग्रसेन बड़ी धूमधाम से उन उपहारों के साथ नागलोक से अपनी नगरी लौट आये।

कथा कहती है कि उस समय से पूरे भारत की धरती सुनहरी थी। जिस प्रकार कहते हैं कि अग्नि के बिना धुआं नहीं उठता उसी प्रकार प्रत्येक श्रुति का भी कोई न कोई आधार अवश्य होता है हालाँकि समय और परिस्थितियों के अनुसार उनमे कुछ बदलाव होता रहता है। परंतु इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं कि महान भारत को किसी समय सोने कि चिड़िया कहा जाता था और महाराजा अग्रसेन एक अहिंसाप्रिय, करुणामय, प्रजा वत्सल राजा हुए जिनकी संतानें आज भी उनका स्मरण कर भाव विभोर हो उठती हैं।

।। योगदान आभार।।

सिंघल (Singhal) गोत्र वीर
श्री अरुण लाठ

गोयल (Goyal) गोत्र वीर
श्री अशोक गुप्ता

गोयन/गंगल
(Goyal/Gangal) गोत्र वीर
श्री भारत भूषण अग्रवाल

गर्ग (Garg) गोत्र वीर
श्री श्याम सुन्दर बागरिया

गोयन/गंगल
(Goyal/Gangal) गोत्र वीर
श्री दिव्य भूषण गुप्ता

बंसल (Bansal) गोत्र वीर
डॉ लोकमणि बंसल

।। योगदान आभार।।

जिंदल (Jindal) गोत्र वीर
श्री गोविन्द जिंदल

बिंदल (Bindal) गोत्र वीर
श्री लीलाधर लडिया

मित्तल (Mittal) गोत्र वीर
श्री देवेंद्र मित्तल

गोयल (Goyal) गोत्र वीर
श्री रितेश भारूका

मंगल (Mangal) गोत्र वीर
श्री सचिन अग्रवाल (मंडावर बिजनौर)

नांगल (Nangal) गोत्र वीर
श्री प्रदीप नागल

।। योगदान आभार।।

कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
श्री गोपीराम गुप्ता जी

कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
श्री टीकम चंद अग्रवाल

कुटुंब वीर गोयल (Goyal)
श्री विनोद नम्बरदार

कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
श्री राजेंद्र बंसल

कुटुंब वीर (ऐरन (Airan) गोत्र
श्री राम नाथ अग्रवाल

कुटुंब वीर (ऐरन (Airan) गोत्र
श्री ललित कुमार अग्रवाल

।। योगदान आभार।।

कुटुंब वीर सिंघल (Singhal) गोत्र
श्री महावीर प्रसाद सिधमुख

कुटुंब वीर सिंघल (Singhal) गोत्र
श्री मनोज चनाणी

कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
डॉ संजय बंसल
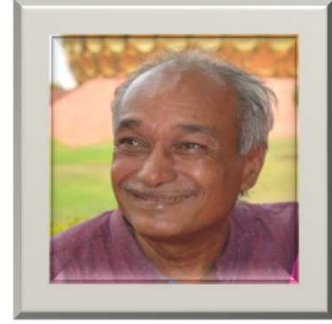
कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
श्री दाऊ दयाल गुप्ता

कुटुंब वीर गोयल (Goyal) गोत्र
श्री सुनील मोर

कुटुंब वीर गोयल (Goyal) गोत्र
श्री सुरेश गोयल

।। योगदान आभार।।
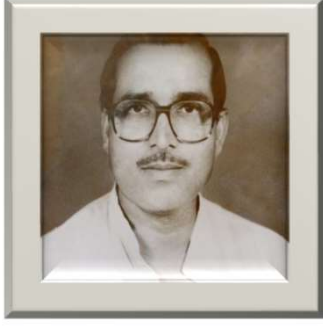
सिंघल (Singhal) गोत्र वीर
श्री तोलाराम लाठ

सिंघल (Singhal) गोत्र वीर
श्री बद्री नारायण लाठ

मंगल (Mangal) गोत्र वीर
श्रीमति नमिता मंगल

सिंघल (Singhal) गोत्र वीर
श्रीमति सीमा गोयल

गर्ग (Garg) गोत्र वीर
श्री अवनीश अग्रवाल

मित्तल (Mittal) गोत्र वीर
श्री ओमकार मित्तल

।। योगदान आभार।।

कुटुंब वीर सिंघल (Singhal) गोत्र
श्री लक्ष्मण नवेटिया

कुटुंब वीर बंसल (Bansal) गोत्र
श्री शीतल अग्रवाल

कुटुंब वीर कुछल (kucchal) गोत्र
श्री विजय गुप्ता

जिंदल (Jindal) गोत्र वीर
श्री रवि जिंदल

।। ऐतिहासिक महापुरुष - महाराजा अग्रसेन ।।

मासेसरश्वयुजेमाघे शुक्ले मध्य दिवसों शुभम् ।
आदित्यसवासरे महेन्द्रसमये उत्पन्नो बहु भाग्यवान ।।
भगवत्त्यां वल्लभेन प्राप्तो वंशकरः सुतः |
मनुष्याग्र्यस्य यस्यासीत् कान्तिश्चन्द्रसमो यथा ॥

प्रातः स्मरणीय महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पितामह हुए। धार्मिक मान्यतानुसार महाराजा अग्रसेन का जन्म सूर्यवंश में प्रतिष्ठानपुर के महाराजा वल्लभ और विदर्भ की राजकुमारी भगवती देवी के राज परिवार में अश्वनी मास शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा तिथि रविवार को महेंद्र काल में हुआ। राजकुमार अग्रसेन का विवाह नागराज कुमुद की पुत्री माधवी से हुआ।
महाराजा बल्लभ की मृत्यु के बाद पिण्डदान के लिए अग्रसेन अनेक तीर्थों के बाद गया पहुँचे। वहाँ से वह लोहागढ़ सीमा से निकल पंच नद (वर्तमान पंजाब) राज्य पहुँचे जो सरस्वती व यमुना नदी के किनारे पर स्थित था। कहते हैं वहाँ एक स्थान पर सिंहनी अपने शावक के साथ खेल रही थी। अग्रसेन जिस हाथी पर बैठे थे। वह शावक तेजी से उछला और हाथी के मस्तक पर जा बैठा। अग्रसेन ने उस स्थान के विषय में विद्वानों से राय ली। सभी ने उस जगह को वीरभूमि, उर्वरा व श्रेष्ठ बताया । ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की राय अनुसार नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे आज अग्रोहा नाम से जाना जाता है।

माता महालक्ष्मी की कृपा से श्री अग्रसेन के 18 पुत्र हुए। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि यज्ञों के 18 गुरुओं के नाम पर ही अग्रवंश (अग्रवाल समाज) की स्थापना हुई । महाराजा अग्रसेन जी ने अपने राज्य को 18 गणों में विभाजित कर, अपने 18 पुत्रों को सौंप उनके 18 गुरुओं के नाम पर 18 गोत्रों की स्थापना की थी। जो इस प्रकार है ऐरन, बंसल, बिंदल, भंदल, धारण, गर्ग, गोयल, गोयन, जिंदल, कंसल, कुच्छल, मधुकुल, मंगल, मित्तल, नागल, सिंघल, तायल, तिंगल।

अहिंसा परमोधर्म

माहराजा अग्रसेन ने अहिंसा को राजधर्म का आधार बनाया । समाज में आयी कुरीतियों को, जैसे कि यज्ञ में पशु बलि का दिया जाना आदि समाप्त कर पुःन वैदिक धर्म स्थापित किया और धर्म की ओट में की जा रही हिंसा से पशुओं को मुक्ति दिलाई।

।। ऐतिहासिक महापुरुष - महाराजा अग्रसेन ।।

योऽहिंस्यकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित्सुखमेधते ॥
वृक्षांश्छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यद्येवं गम्यते स्वर्गे नरके केन गम्यते ? ॥

श्री अग्रसेन ने कहा - हे महर्षे ! जगत में जो कदापि हिंसा के योग्य नहीं हैं (अर्थात जो निरीह तथा सर्वथा संरक्षण के योग्य हैं) ऐसे जीवों का अपने ही सुख की कामना करने वाला (स्वार्थी पुरुष) क्या करके, इस लोक या परलोक में भला कैसे किंचित भी सुख प्राप्त कर सकेगा ? श्री अग्रसेन ने कहा- हे मुनिवरों ! वनों को काटने वाले, पशुओं की हत्या करने वाले, तथा भ्रूणहत्यादि रक्तिम कर्म करने वाले ही, यदि स्वर्ग जाएंगे, तो फिर नर्क कौन जाएगा ?

तताप नायं यज्ञस्य विधिर्मङ्गलकारकः ॥

यज्ञ में यह जो पशुबलि दी जाने लगी है, यह न तो शास्त्र सम्मत है न शुभकारक है, न मंगलकारी ही हो सकती है ।

अपरिज्ञानमेतत् मे महान्तं धर्ममिच्छतः ।
नायं धर्मकृतो यज्ञो न हिंसा धर्म उच्यते ॥

श्री अग्रसेन विचार करने लगे, कि यह (पशुबलि) अज्ञान ही है। हम महान धर्म की इच्छा तो करते हैं, फिर भी इस प्रकार यज्ञ के माध्यम से पशुवध के लिये उद्यत हो गए। यह यज्ञ (पशुबलि के कारण) न तो धर्म के अनुकुल है। ना ही इस हिंसा को धर्म कहा जा सकता है।

समानता का सिद्धांत

शासन महाराजा अग्रसेन ने अपनी सूझ-बूझ, अपने बल कौशल से एक ऐसे साम्राज्य का निर्माण किया, जिसका आधार समाजवाद, और समतावाद पर आधारित था उनके राजनीति, धर्म और समाजवाद के समन्वय से पूर्ण और व्यवहारिक था कि तत्कालीन, प्राचीन, अर्वाचीन, दार्शनिक तथा बड़े-बड़े समाजवाद के व्याख्याता भी उस तरह का दर्शन आज तक नहीं दे पाए हैं ।

।। ऐतिहासिक महापुरुष - महाराजा अग्रसेन ।।

अग्रसेन जी के राज्य में यदि कोई परिवार दैव्य-विपत्ति का शिकार हो जाता था तो समस्त राज्य के परिवार उसको एक रुपया, एक ईंट स्वेच्छा से देते थे और वह परिवार पुनः अपनी स्थिति को प्राप्त कर लेता था । समाजवाद का ऐसा अद्भुत उदाहरण अन्य किसी राज्य में न देखा गया न सुना गया। बाहर से आए हुए नए परिवार भी इसी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त करने के अधिकारी थे । उन्होंने अपने राज्य के नागरिकों में परस्पर समता व ममता का आधार स्थायी तौर पर स्थापित करने के लिए अत्यंत सरल सा नियम बनाया, इस एक रुपया, एक ईंट के व्यवहारिक सिद्धांत ने उन्हें महान तथा आदर्श राजाओं की श्रेणी में विद्यमान किया।

लोकतंत्रात्मक गणराज्य व्यवस्था

महाराजा अग्रसेन ने राज्य में प्रसासनिक सुधार किये राज्य तो गणों में विभाजित कर गणों के प्रतिनिथि की सहायता से प्रसाशन सुनिश्चित किया, सभी गणों से निर्वाचित और मनोनीत मुख्य ही अपना प्रमुख आपसी मत से चुनते थे इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने प्राचीन काल में ही गणतंत्रीय शासन प्रणाली की आधारशिला रखी।

महान तपस्वी और व्यवाहरिक जन उपयोगी कार्य

कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन ने नाग लोक के राजा कुमद के यहाँ आयोजित स्वयंवर में राजकुमारी माधवी का वरण किया इस स्वंयवर में देव लोक से राजा इंद्र भी राजकुमारी माधवी से विवाह की इच्छा से उपस्थित थे, परन्तु माधवी द्वारा श्री अग्रसेन का वरण करने से इंद्र कुपित होकर स्वयंवर स्थल से चले गये। कुपित इंद्र ने अपने अनुचरों से प्रतिष्ठानपुर में वर्षा नहीं करने का आदेश दिया जिससे भयंकर अकाल पड़ा। वस्तुतः कथाकारों ने अकाल की विपदा को इन्द्र से जोड़ कर लिखा, प्राचीन पुस्तकों में इन्द्र के कुपित होने का अर्थ अकाल आना ही है। अकाल से चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गई तब अग्रसेन ने भगवान शंकर एवं महालक्ष्मी माता की अराधना की, श्री अग्रसेन की अविचल तपस्या से महालक्ष्मी प्रकट हुई एवं वरदान दिया कि तुम्हारे सभी मनोरथ सिद्ध होंगे। तुम्हारे द्वारा सबका मंगल होगा। कहते हैं महराजा अग्रसेन ने अग्रोहा में एक बहुत बड़े सरोवर का निर्माण करवाया, अग्रोदक का एक अर्थ जल सरोवर भी होता है अग्रोहा में प्राचीन विशाल सरोवर के अवशेष आज भी देखे जा सकते है मिट्टी बहुत उपजाऊ है जिसका मुख्य कारण किसी समय वह जब भराव था इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने इंद्र के कुपित होने का अर्थात अकाल का स्थायी समाधान निकला।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
AI00001	गांव गुजरवास	गांव गुजरवास	श्री नविन अग्रवाल जी की वंशावली (एरेन गोत्र)
AI00002	गांव जाटुशाना रेवाड़ी	गांव जाटुशाना रेवाड़ी	यह वंशावली हमें श्री ललित अग्रवाल पुत्र श्री लाला लक्ष्मी नारायण अग्रवाल गांव जाटुशाना रेवाड़ी से ४ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
AI00003	डीग, भरतपुर(राजस्थान)	डीग, भरतपुर(राजस्थान)	यह स्वर्गीय श्री मोतीलाल जी (ऐरन गोत्र) पैतृक निवास: डीग, भरतपुर(राजस्थान), इस परिवार को डीग में कुंडा वालों के नाम से जाना जाता है डीग में दिल्ली रोड पर इस परिवार के पूर्वजों द्वारा एक कुंडा भी बनवाया हुआ है जिसमें आज भी गांव के लोग नहाने और पीने के लिए पानी लेने आते है यह वंशावली हमें श्री रामनाथ अग्रवाल जी पुत्र श्री स्वर्गीय श्री दाऊ दयाल जी द्वारा ६ फ़रवरी को प्राप्त हुई ।
AI00004	नसीबपुर नारनौल जिला महेंद्रगढ़ हरियाणा	अकोला, महाराष्ट्र	यह स्वर्गीय सेठ श्री नागरमल जी अग्रवाल जी (गोत्र: ऐरेन पैतृक निवास: नसीबपुर नारनौल जिला महेंद्रगढ़ हरियाणा , वर्तमान निवास: अकोला) की वंशावली, श्री बजरंगलाल अग्रवाल जी पुत्र श्री राम गोपाल अग्रवाल जी द्वारा हमें १ अप्रैल २०२३ को प्राप्त हुई।
AI00005	सीकर (राजस्थान)	हिंदमोटर(पश्चिम बंगाल)	यह स्वर्गीय श्री बासुदेव जी बजाज (अग्रवाल गोत्र: ऐरेन पैतृक बजाज परिवार, निवास:सीकर (राजस्थान), वर्तमान निवास:हिंदमोटर(पश्चिम बंगाल) कुलदेवी:श्री शाकम्बरी माता कुलदेवता:श्री सालासर बालाजी) की वंशावली, श्री रमेश बजाज जी पुत्र स्वर्गीय श्री नवरतन जी बजाज द्वारा हमें २९ मई २०२३ को प्राप्त हुई।
AI0006	कोटपूतली	कलकत्ता	यह श्री ओमकार मल मोरीजावाला जी चौधरी जी (गोत्र: ऐरेन परिवार मोरीजावाला पैतृक निवास :कोटपूतली वर्तमान निवास:कलकत्ता) की वंशावली हमें श्री चंद्रप्रकाश अग्रवाल पुत्र श्री पूरनचंद अग्रवाल जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
AI00007			आलवाल परिवार (गोत्र: एरेन) की वंशावली १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00001	ग्राम जोनती (दिल्ली निवासी)	ग्राम जोनती (दिल्ली निवासी)	स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (बंसल गोत्र) ग्राम जोनती (दिल्ली निवासी) की वंशावली अग्रोहा तीर्थ विशेषांक से साभार ली गयी है
BA00002	मंढा सुरेरा सीकर राजस्थान	मंढा सुरेरा सीकर राजस्थान	यह वंशावली हमें महेश पूरनमल अग्रवाल जी (बंसल गोत्र) द्वारा १० जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है स्थान: मंढा सुरेरा सीकर राजस्थान (बंसल गोत्र)
BA00003	भगे ना तहसील सादाबाद जिला हाथरस नजदीक ग्राम बी सावर	यमुनापार लक्ष्मी नगर मथुरा उत्तर प्रदेश	यह वंशावली हमें श्री ओम प्रकाश अग्रवाल पुत्र श्री वी री लाल अग्रवाल (पैतृक स्थान भगे ना तहसील सादाबाद जिला हाथरस नजदीक ग्राम बी सावर, वर्तमान निवास स्थान यमुनापार लक्ष्मी नगर मथुरा उत्तर प्रदेश) से २७ जुलाई २०२२ को प्राप्त हुई
BA00004	नारनौल राजस्थान से अशोक नगर	ग्वालियर	यह वंशावली हमें श्री धवल बंसल पुत्र श्री सुरेश बंसल जी (पैतृक स्थान: नारनौल राजस्थान से अशोक नगर अब निवास स्थान: ग्वालियर से श्री ओंकार मित्तल जी (हिसार हरियाणा) द्वारा ०७ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
BA00005	पुण्डरी . कैथल हरयाणा	खोरखेड़ी कर्नल हरयाणा	यह श्री हुकम सिंह जी की वंशावली हमें श्री विशाल बंसल जी पुत्र श्री रतनलाल बंसल जी (पैतृक स्थान: पुण्डरी . कैथल हरयाणा वर्तमान निवास स्थान: खोरखेड़ी कर्नल हरयाणा द्वारा श्री रवि जिंदल जी से १ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
BA00006	लाहौर	बटाला	यह श्री रुलद्दू राम अग्रवाल (बंसल गोत्र) वंशावली हमें श्री जयदीप अग्रवाल पुत्र श्री जगदीश सरूप अग्रवाल जी (पैतृक स्थान: लाहौर निवास स्थान:बटाला से श्री सुरेश कुमार गोयल जी द्वारा ४ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
BA00007	होशंगाबाद	भोपाल	श्री नाथूराम जी (बंसल गोत्र) की वंशावली सुश्री नमिता जी सुपुत्री श्री कैलाश बाबू (बंसल गोत्र) पैतृक स्थान: होशंगाबाद निवास स्थान : भोपाल से सुश्री नमिता जी द्वारा १६ सितंबर २०२२ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00008	आगरा	पीएसओ पुर	यह श्री गणेश लाल गर्ग की वंशावली हमें श्रीमती ज्योति बंसल सुपुत्री श्री दीनदयाल जी (पैतृक स्थान: आगरा निवास स्थान: पीएसओ पुर) से श्री रवि जिंदल द्वारा 23 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
BA00009	महम	फरीदाबाद हरयाणा	यह श्री मोहन लाल (बंसल गोत्र) पैतृक निवास: महम वर्तमान स्थान फरीदाबाद हरयाणा वालो की वंशावली श्री दिनेश बंसल पुत्र श्री राजगोपाल बंसल से से ५ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
BA00010	राजौर वाले	राजौर वाले	यह श्री पीतम चंद बंसल (निवास स्थान: राजौर वाले) वालो की वंशावली श्री रवि जिंदल द्वारा २० अगस्त -२०२२ को प्राप्त हुई
BA00011	खाटूश्यामजी, अजमेर, नसीराबाद, नीमच छावनी भगोना, मण्डाना	कोटा राजस्थान	यह स्वर्गीय श्री घासी लाल जी मोदी साहब (पैतृक स्थान - खाटूश्यामजी, अजमेर, नसीराबाद, नीमच छावनी भगोना होते हुए राजदरबार के काम से मण्डाना गोपाल पुरा रोड निर्माण हेतु मण्डाना में बस गए निवास स्थान - बजरंग भवन,अग्रसेन बाजार, पुरानी धानमण्डि, कोटा, राजस्थान) की वंशावली हमें डॉ लोकमणि गुप्ता पुत्र स्वर्गीय श्री डॉ चिरंजीव लाल जी गुप्ता से १६ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
BA00012	वेशवा गांव, मथुरा	कुन्हाड़ी कोटा	यह स्व. श्री गोपी नाथ अग्रवाल (बंसल गोत्र - मथुरा वाले) जी की वंशावली हमें श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल पुत्र स्व. श्री रामजी दास अग्रवाल (निवास स्थान: लक्ष्मण विहार प्रथम पुराने रोडवेज वर्क शॉप के सामने कुन्हाड़ी कोटा) से श्री (डॉ) लोकमणि गुप्ता जी के सहयोग से १२ जनवरी २०२३ को प्राप्त हुई। स्व. श्री सूरज भान अग्रवाल मथुरा में डोलची वालों के नाम से मशहूर थे। राया (मथुरा) में उनकी लकडी की टाल थी। ये रास मण्डली में रसिया के गुरु थें। मथुरा के पास वेशवा गांव से संबंध रहा है वहाँ कोठी थी जिनको हमारे पूर्वजों ने दान किया था
BA00013	गांव गोंदिया	गांव गोंदिया	स्व श्री हरश्याम जी (गोत्र: बंसल जुमानपुरका पोतदार परिवार गांव गोंदिया) जी की वंशावली हमें श्री गोपाल अग्रवाल द्वारा ५ नंबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00014	बैढ़न, जिला सिंगरौली (मध्य प्रदेश)	नवलगढ़, जिला झुंझुनू, राजस्थान	स्व श्री केदार मल जी कारिवाल (गोत्र: बंसल पैतृक निवास: नवलगढ़, जिला झुंझुनू, राजस्थान वर्तमान स्थान : बैढ़न, जिला सिंगरौली (मध्य प्रदेश) भारत की वंशावली हमें श्री नारायण कारीवाल(नीरज) पुत्र श्री ताराचंद कारिवाल द्वारा हमें। २ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00015	बुरहानपुर मध्यप्रदेश	बुरहानपुर मध्यप्रदेश	स्व श्री हेमराज जी अग्रवाल (गोत्र: बंसल पैतृक निवास: बुरहानपुर मध्यप्रदेश) की वंशावली हमें श्री दिनेश अग्रवाल पुत्र श्री दगडूलाल अग्रवाल द्वारा १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00016			स्व श्री मुसद्दी लाल जी (बंसल गोत्र पोद्दार परिवार) की वंशावली १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00017	फतेहपुर	जमालपुर बिहार, कलकत्ता बंगाल	स्व श्री गोविन्द राम जी (बंसल गोत्र जालान परिवार पैतृक निवास: फतेहपुर वर्तमान स्थान: जमालपुर बिहार, कलकत्ता बंगाल) की वंशावली श्री विकास जालान द्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00018	जोधपुर के जालानी जलजीरा परिवार	जोधपुर के जालानी जलजीरा परिवार	स्व श्री चिमन दास जी अग्रवाल (बंसल गोत्र मारवाड़ी परिवार, जोधपुर के जालानी जलजीरा परिवार की शाखा) की वंशावली श्री शीतल अग्रवाल जी पुत्र श्री पुरुषोत्तम जी द्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई
BA00019	फतेहपुर झुंझुन	बंगलोर	स्व श्री रामकरण जी (बंसल गोत्र नौरंग पुर वाले बंसल परिवार पैतृक निवास: फतेहपुर झुंझुन वर्तमान स्थान: बंगलोर) की वंशावली श्री पूरन कुमार अग्रवाल से श्री अशोक गुप्ता जी द्वारा प्राप्त हुई।
BA00020	गाँव निलोठी बहादुरगढ़ ज़ज्जर	पूना - महाराष्ट्र	स्व श्री मक्खनलाल जी अग्रवाल (बंसल गोत्र बिहरोरिया/दादरी वाले पैतृक स्थान: गाँव: निलोठी बहादुरगढ़ ज़ज्जर पुराना गांव बड़ा थाना, खरखौदा के पास,सोनीपत वर्तमान स्थान: पूना - महाराष्ट्र) की वंशावली श्री सतीश बंसल जी पुत्र श्री बदलूरामजी अग्रवाल पौत्र श्री चान्दगी रामजी जी बंसल द्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00021			स्व श्री तुला राम जी (बंसल गोत्र) की वंशावली १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00022	बागढ़ झुंझुनू राजस्थान	रामगंज मंडी कोटा राजस्थान	स्व श्री बिरजमोहन जी (बंसल गोत्र केजरीवाल परिवार पैतृक स्थान: बागढ़ झुंझुनू राजस्थान से बांग्लादेश (पूर्वी पाकिस्तान) से डेहरी ऑन सोन (बिहार) से रामगंज मंडी कोटा राजस्थान) की वंशावली श्री कमल कुमार केजरीवाल जी पुत्र श्री दुर्गा प्रसाद केजरीवाल जी द्वारा २१ जून २०२३ को प्राप्त हुई
BA00023	सादुलपुर चूरू राजस्थान	सादुलपुर चूरू राजस्थान	स्व श्री जयकरण दास जी पंसारी (बंसल गोत्र पंसारी परिवार पैतृक स्थान: बजाज सादुलपुर चूरू राजस्थान) की वंशावली श्री जी द्वारा २२ जून २०२३ को प्राप्त हुई
BA00024	लक्ष्मणगड, राजस्थान	खामगांव , जिल्हा बुलढाणा, महाराष्ट्र	स्व श्री पन्नालालजी (बंसल गोत्र बजाज परिवार पैतृक स्थान: लक्ष्मणगड,राजस्थान, वर्तमान स्थान: बजाज "गोपुष्प" सिव्हिल लाईन , देशमुख प्लॉट,खामगांव , जिल्हा बुलढाणा, महाराष्ट्र) की वंशावली श्री पंकज गोपाल बजाज जी द्वारा १० जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई
BA00025			स्व श्री आशाराम बुधिया जी (बंसल गोत्र बुधिया परिवार पैतृक स्थान: , वर्तमान स्थान:) की वंशावली श्री रघुनन्दन बुधिया जी पुत्र श्री रामजी लाल बुधिया द्वारा २६ जून २०२३ को प्राप्त हुई
BA00026	श्री माधोपुर (रिंग्स) राजस्थान	चित्तूर (आंध्र प्रदेश)	स्व श्री नैणसुख दास (गोत्र: बंसल चौधरी परिवार पैतृक निवास : श्री माधोपुर (रिंग्स) राजस्थान, निवास स्थान: चित्तूर (आंध्र प्रदेश) जी की वंशावली हमें श्री भूषण बंसल पुत्र श्री श्याम सुंदर जी बंसल द्वारा १4 जून २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00027	गोरी दुधवा तहसील खेतड़ी	गोंदिया महाराष्ट्र	स्व श्री रामरतन जी (गोत्र: बंसल गोंदिया परिवार पैतृक निवास: गोरी दुधवा तहसील खेतड़ी वर्तमान निवास स्थान: गोंदिया महाराष्ट्र) जी की वंशावली हमें श्री मोहन बंसल जी पुत्र श्री देवकी नंदन बंसल पुत्र द्वारा ९ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00028	तहसील रानिया सिरसा हरियाणा		स्व श्री सवईमल जी (गोत्र: बंसल पैतृक निवास: तहसील रानिया सिरसा हरियाणा) जी की वंशावली हमें श्री रमन बंसल जी द्वारा १९ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00029	करी गांव (पोद्दार) शेखावाटी नवलगढ़ राजस्थान	मुंबई	स्व श्री रुपरामजी करीवाल जी (गोत्र: बंसल करीवाल परिवार पैतृक निवास: करी गांव (पोद्दार) शेखावाटी नवलगढ़ राजस्थान, वर्तमान:मुंबई) की वंशावली हमें श्री ललितकुमार पुरुषोत्तमलाल करीवाला जी द्वारा ०२ नवंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00030			श्री मुशदी लाल जी (गोत्र: पोद्दार परिवार पैतृक निवास: वर्तमान:) की वंशावली हमें श्री संजय बंसल पुत्र श्री मुंशी लाल बंसल जी द्वारा १२ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
BA00031			तुलसियान परिवार (गोत्र: बंसल) की ३३ पीढ़ियों की वंशावली हमें श्री गोपीराम गुप्ता द्वारा १२ नवंबर २०२२ को प्राप्त हुई।
BA00032	झुनझुन	झुनझुन	स्व श्री लाल चंद जी श्री (बंसल गोत्र झुनझुनवाला परिवार) की वंशावली श्री पृथ्वीराज रामनिवास झुनझुनवाला रचित पुस्तक से नवम्बर २०२३ प्राप्त हुई
BA00033			देवड़ा परिवार की वंशावली
BA00034 /1	बिहरोड़ हरियाणा	जयपुर राजस्थान	स्व श्री हनोता राय जी अग्रवाल (बंसल गोत्र बिहरोरिया/दादरी वाले पैतृक स्थान: बिहरोड़ हरियाणा वर्तमान स्थान: जयपुर राजस्थान) की वंशावली डॉ संजय बंसल जी पुत्र श्री ओमप्रकाश जी बंसल द्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई
BA00034 /2			स्व श्री प्रह्लाद राय बंसल जी अग्रवाल (बंसल गोत्र बिहरोरिया/दादरी वाले पैतृक स्थान: बिहरोड़ हरियाणा) की वंशावली श्री राज कुमार बंसल जी पुत्र श्री भगवान बंसल जी द्वारा १० नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
BA00034/3	भडोसी	भडोसी से नाहड़ से बिरोहड़	स्व श्री तुलसीराम बंसल जी अग्रवाल (बंसल गोत्र बिहरोरिया/दादरी वाले पैतृक स्थान: बिहरोड़ हरियाणा निकास: भडोसी से नाहड़ से बिरोहड़) की वंशावली श्री समी बंसल जी द्वारा ६ नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई
BA00035	झुनझुन		खेतान परिवार की वंशावली
BA00036	झुनझुन	झुनझुन	स्व श्री लाल चंद जी श्री (बंसल गोत्र झुनझुनवाला परिवार) की वंशावली श्री पृथ्वीराज रामनिवास झुनझुनवाला रचित पुस्तक से नवम्बर २०२३ प्राप्त हुई
BI00001	डीडवाना राजस्थान	डीडवाना राजस्थान	यह स्व श्री महरम दास जी (बिंदल गोत्र) की वंशावली हमें श्री अमर अग्रवाल जी पुत्र स्व श्री नटवरलाल जी पैतृक स्थान डीडवाना राजस्थान द्वारा १० अक्टूबर २०२२ को प्राप्त हुई
BI00002			लडिया परिवार की वंशावली श्री लीलाधर लडिया और श्री घनश्याम दास लडिया जी के सहयोग से हमें जून २०२३ को प्राप्त हुई।
BI00003	हाथरस घंटाघर	मुंबई	स्व श्री फुलचंद्र अग्रवाल (बिंदल गोत्र पैतृक स्थान: हाथरस घंटाघर वर्तमान स्थान:मुंबई) की वंशावली हमें श्री चंद्र प्रकाश जी अग्रवाल पुत्र श्री द्वारका प्रसाद जी अग्रवाल द्वारा १५ सितम्बर २०२३ को प्राप्त हुई
BI00004	फतेहपुर शेखावाटी जिला जयपुर राजस्थान	फतेहपुर शेखावाटी जिला जयपुर राजस्थान	स्व श्री जाजूराम जी (बिंदल गोत्र सराफ परिवार पैतृक स्थान: फतेहपुर शेखावाटी जिला जयपुर राजस्थान वर्तमान स्थान: कोतमा, जिला अनूपपुर (म.प्र.) की वंशावली हमें श्री नवल किशोर सराफ पिता स्व. जमुना प्रसाद सराफ से श्री श्याम सुन्दर बगड़िया निवासी अमलई जिला अनूपपुर (म.प.) द्वारा ९ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00001	फारुखनगर, ग़ाज़ियाबाद	फारुखनगर, ग़ाज़ियाबाद	श्री हंस राम जी गर्ग (फारुखनगर, ग़ाज़ियाबाद) की वंशावली हमें श्रीमति रेखा गुप्ता जी से १० जनवरी २०२१ को प्राप्त हुई है

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00002	दिल्ली	दिल्ली	श्री अवनीश अग्रवाल - (गोत्र गर्ग) दिल्ली वालो की वंशावली
GA00003	नारनौल , सिंहाने	ग्वालियर	स्व.श्री बिहारी लाल जी गर्ग जी ग्वालियर वालो की वंशावली पैतृक स्थान : नारनौल , सिंहाने यह वंशावली हमें श्री राजकुमार जी गर्ग (65 वर्ष) द्वारा श्री रवि जिंदल जी से १० जुलाई २०२२ प्राप्त हुई है
GA00004			श्री नटवर लाल अग्रवाल (गर्ग गोत्र) वंशावली यह वंशावली हमें श्री नटवर लाल अग्रवाल से श्री रवि जिंदल द्वारा जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
GA0005			श्री घुट्टू लाल जी गर्ग की वंशावली श्री रवि जिंदल द्वारा १५ जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
GA00006	जयपुर गाँव जसूपुरा धौलपुर राजस्थान	जयपुर गाँव जसूपुरा धौलपुर राजस्थान	यह वंशावली हमें श्री दीन दयाल जी (गर्ग गोत्र) पुत्र श्री छोटे लाल जी (वर्तमान निवास: जयपुर गाँव जसूपुरा धौलपुर राजस्थान गौत्र गर्ग निकास बसईया (लालू) से रवि जिंदल जी द्वारा ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GA00007	गाँव बेगा तहसील गन्नौर सोनीपत हरियाणा	गाँव बेगा तहसील गन्नौर सोनीपत हरियाणा	यह वंशावली हमें श्री अमित गर्ग उर्फ अंकित गर्ग (LG) पुत्र श्री वेदप्रकाश गर्ग जी पैतृक स्थान/निवास स्थान: गाँव बेगा तहसील गन्नौर सोनीपत हरियाणा से रवि जिंदल जी द्वारा ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GA00008	जगसौरा - जिला इटावा	गल्ला आढतिया , इटावा उ0प्र0 पिन कोड२०६००१	यह वंशावली हमें शिव प्रताप एण्ड संस, अनन्त प्रताप एण्ड संस (गर्ग गोत्र), गल्ला आढतिया , इटावा उ0प्र0 पिन कोड२०६००१, मूल निवासी ग्राम - जगसौरा -जिला इटावा से श्रीमती नेहा मित्तल द्वारा ६ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई है
GA0009	ग्राम तालहटा मोदीनगर, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश	न्यू भगवतपूरा, ब्रह्मपुरी, मेरठ, उत्तर प्रदेश	यह वंशावली हमें श्री अमित गर्ग पुत्र श्री राम किशोर गर्ग जी (पैतृक स्थान: ग्राम तालहटा मोदीनगर, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश , वर्तमान निवास न्यू भगवतपूरा, ब्रह्मपुरी, मेरठ, उत्तर प्रदेश से श्रीमती नेहा मित्तल द्वारा ०७ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00010	फतेहगढ़ पंचूर तहसील जीरा	लुधियाना	यह वंशावली हमें श्री हर्ष कुमार (गर्ग गोत्र पुत्र श्री सतपाल गर्ग जी (पैतृक स्थान: फतेहगढ़ पंचूर तहसील जीरा वर्तमान निवास लुधियाना से श्री सुरेश कुमार गोयल द्वारा ०८ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GA00011	मेहम	बटाला	यह श्री फेरामल अग्रवाल जी की वंशावली हमें श्री चंरणजीत अग्रवाल पुत्र श्री फूल चंद अग्रवाल जी (पैतृक स्थान: मेहम वर्तमान निवास स्थान: बटाला द्वारा श्री सुरेश कुमार गोयल जी २७ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GA00012	पख्खोक लां	तपा मंडी (बरनाला)	यह श्री फतिया मल्ल जी की वंशावली हमें श्री सतपाल गर्ग जी पुत्र श्री सरूप चंद जी (पैतृक स्थान: पख्खोकलां वर्तमान निवास स्थान: तपा मंडी (बरनाला) द्वारा श्री सुरेश कुमार गोयल जी से १ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00013	चरथावल मुज़फ़्फ़र नगर	अंकुरविहार लोनी गाज़ियाबाद	यह श्री तारा चंद् गर्ग जी की वंशावली हमें श्री उमेश अनुराग गर्ग पुत्र श्री नरेश चंद गर्ग जी (पैतृक स्थान: चरथावल मुज़फ़्फ़रनगर निवास स्थान: अंकुरविहार लोनी गाज़ियाबाद से ०२ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00014	लिंगा जिला बालाघाट	लिंगा जिला बालाघाट	यह स्व श्री मनहोरी लाल अग्रवाल (गर्ग गोत्र) वंशावली हमें श्री महेश अग्रवाल पुत्र स्व श्री बिसन दयाल अग्रवाल जी (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: लिंगा जिला बालाघाट से श्री रवि जिंदल जी द्वारा 5 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00015	भोपाल	भोपाल	यह श्री रामस्वरूप जी अग्रवाल (गर्ग गोत्र) (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: भोपाल) वंशावली हमें श्रीमति नमिता अग्रवाल जी से से सुश्री नमिता मंगल जी द्वारा 20 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00016	अजीतपुर बगवाला तहसील गुलावती, जिला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश	कृष्णा पार्क एक्सटेंशन, पो और थाना तिलकनगर, नई दिल्ली	यह श्री मान सिंह अग्रवाल (गर्ग गोत्र) (पैतृक स्थान: ग्राम अजीतपुर बगवाला तहसील गुलावती, जिला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश, वर्तमान - गली नंबर 11-12, कृष्णा पार्क एक्सटेंशन, पो और थाना तिलकनगर, नई दिल्ली - ११००१८) निवास स्थान: गाज़ियाबाद) वंशावली हमें श्री राज कुमार अग्रवाल द्वारा 21 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00017	गौतम बुद्ध नगर (उत्तरप्रदे श)	गौतम बुद्ध नगर (उत्तरप्रदेश)	यह स्वर्गीय श्री लाला टेकन मल जी गर्ग पैतृक स्थान/वर्तमान निवास स्थान: - गौतम बुद्ध नगर (उत्तरप्रदेश) वंशावली हमें श्री विनय गर्ग पुत्र श्री देवेंद्र गर्ग द्वारा 24 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00018	गामड़ोछ	दिल्ली	यह श्री राम गर्ग जी अग्रवाल (पैतृक स्थान -गामड़ोछ निवास स्थान - दिल्ली) की वंशावली हमें श्री ओजस अग्रवाल पुत्र श्री मनीष अग्रवाल से श्रीमति नेहा मित्तल जी द्वारा ९ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00019	ग्राम अजीतपुर बगवाला तहसील गुलावठी, जिला बुलंदशहर	तिलक नगर, नई दिल्ली	यह श्रीमान सिंह जी (गर्ग गोत्र) पैतृक निवास ग्राम अजीतपुर बगवाला तहसील गुलावठी, जिला बुलंदशहर वर्तमान निवास - तिलक नगर, नई दिल्ली -110018 की वंशावली हमें श्री राज कुमार अग्रवाल जी पुत्र श्री मिट्ठन लाल जी द्वारा १६ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GA00020	अग्रोहा हिसार	झुंझुनूं जिला, राजस्थान	यह स्वर्गीय श्री लाला तुहीराम जी की वंशावली (गर्ग गोत्र, पटौदीया परिवार पैतृक निवास: अग्रोहा हिसार, वर्तमान निवास: झुंझुनूं जिला, राजस्थान) श्री सुमित गर्ग पुत्र श्री हेतराम जी गर्ग १२ फरवरी को प्राप्त हुई।
GA00021	भूषण कला राजस्थान	अमलाई (Amlai) अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश एवं भाटापारा रायपुर छतीसगढ़	स्वर्गीय श्री बेगराज जी और श्री सीताराम जी भाइयों की वंशावली (गर्ग गोत्र पैतृक निवास: भूषण कला राजस्थान वर्तमान निवास: अमलाई (Amlai) अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश एवं भाटापारा रायपुर छतीसगढ़) श्री बनवारी लाल जी पुत्र श्री जयकरण जी एवं श्री अरुण कुमार अग्रवाल पुत्र श्री कलेश कुमार अग्रवाल जी द्वारा श्री श्याम सुन्दर बगड़िया के सहयोग से १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00022	शेरपुर खिलचीपुर जिला सवाई माधोपुर	कोटा	स्व श्री नारायण दास जी (गोत्र: गर्ग परिवार: कसेरा पैतृक: शेरपुर खिलचीपुर जिला सवाई माधोपुर वर्तमान निवास: कोटा) की वंशावली श्री ओम शंकर गर्ग पुत्र श्री बाबूलाल गर्ग १५ फरवारी २०२३ को प्राप्त हुई
GA00023	खामगाँव (Khamgaon) बुलढाणा जिला महाराष्ट्र	खामगाँव (Khamgaon) बुलढाणा जिला महाराष्ट्र	स्वर्गीय श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (गोत्र: गर्ग परिवार: गाड़ोदिया निवास: खामगाँव (Khamgaon) बुलढाणा जिला महाराष्ट्र) की वंशावली, श्री योगराज अग्रवाल पुत्र श्री ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा हमें १६ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00024	राजगढ़ चूरू राजस्थान	राजगढ़ चूरू राजस्थान	यह स्वर्गीय श्री पीढामल जी सरावगी (गोत्र: गर्ग परिवार: सरावगी पैतृक निवास: राजगढ़ चूरू राजस्थान) की वंशावली, श्री रतन अग्रवाल पुत्र श्री विश्वनाथ अग्रवाल द्वारा हमें १९ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00025	निदाना रोहतक हरियाणा	शक्तिनगर सोनभद्र उ प	यह स्वर्गीय श्री रामचंदर गर्ग जी (गोत्र: गर्ग पैतृक निवास: निदाना रोहतक हरियाणा , वर्तमान निवास: शक्तिनगर सोनभद्र उ प) की वंशावली, श्री सुरेश कुमार गर्ग जी पुत्र स्व श्री रामकुमार गर्ग जी द्वारा हमें ९ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00026			स्वर्गीय श्री लाला छबीलदास जी गर्ग गोत्र की वंशावली पुस्तक जून २०२३ में प्राप्त हुई
GA00027	गोविन्दपूरा पलसाना राजस्थान झेरिया परिवार	दोंडाईचा जिला धुलिया महाराष्ट्र	स्व श्री हुकमी चंद जी (गर्ग गोत्र गोविन्दपूरा पलसाना राजस्थान झेरिया परिवार) जी की वंशावली हमें श्रीमती कलावती अग्रवाल जी द्वारा २४ मई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00028	फरह, मथुरा	बल्केश्वर एवं शास्त्रीपुरम, आगरा	स्व श्री पन्नालाल गर्ग (प्रेमपुंज) (अग्रवाल गोत्र: गर्ग निवास:फरह, मथुरा वर्तमान निवास: बल्केश्वर एवं शास्त्रीपुरम, आगरा) की वंशावली हमें श्री अजय अग्रवाल पुत्र श्री हरेश चंद जी गर्ग द्वारा २५ मई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00029	सिंघाना, सीकर, राजस्थान		स्व श्री किरोड़ीमल जी (गोत्र: गर्ग पैतृक: सिंघाना, सीकर, राजस्थान) की वंशावली श्री शुभेष अग्रवाल पुत्र श्री बालगोविंद प्रसाद अग्रवाल दवार जून २०२३ में प्राप्त हुई
GA00030	कराड़ा, जिला कैथल हरियाणा		स्व श्री लाला नरूमल गर्ग (गोत्र: गर्ग पैतृक निवास: कराड़ा, जिला कैथल हरियाणा, महम जिला रोहतक, हरियाणा,) की वंशावली हमें श्री मोहित गर्ग द्वारा १४ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई। (1600-२०२० ईस्वी तक १७ पीढ़िया, स्व श्री लाला नरूमल गर्ग मुगल काल में दिल्ली में दरबारी थे। मुख्य व्यवसाय - व्यापार-महाजनी, कपड़ा व अनाज उत्पादन)
GA00031			स्व श्री (अधिवक्ता) परमेश्वरी सहाय जी अग्रवाल (वकील साहब) की वंशावली
GA00032			स्व श्री गोकुलचंद्र अग्रवाल जी (गोत्र: गर्ग परिवार) की वंशावली हमें श्री मोतीलाल जी (सिरोंज) जी द्वारा ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई।
GA00033			स्व श्री प्रभु राज अग्रवाल जी (गोत्र: गर्ग परिवार) की वंशावली हमें श्री दीनदयाल अग्रवाल जी पुत्र श्री छोटे लाल जी अग्रवाल री जी द्वारा ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00034	सलामपुरिया जिला झुंझुनू राजस्थान	सलामपुरिया जिला झुंझुनू राजस्थान	यह श्रीकिशन जी चौधरी जी (गोत्र: गर्ग परिवार सलामपुरीया चौधरी पैतृक निवास :सलामपुरिया जिला झुंझुनू राजस्थान) की वंशावली हमें श्री मनोहर सलामपुरिया पुत्र श्री बसेसर चौधरी जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00035			यह स्व श्री धनपत राय जी (गोत्र: गर्ग बुडाकिया परिवार) की वंशावली श्री आनंद कुमार गुप्ता पुत्र श्री त्रिलोकचंद गुप्ता जी द्वारा १८ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00036	बाबई से गुढ़ा (पोख) जिला झुंझुनू	कलकत्ता, सूरत, इंदौर, झारखंड	यह स्व श्री केसूराम जी (गोत्र: गर्ग पूर्वज: बाबई से गुढ़ा (पोख) जिला झुंझुनू के हैं वर्तमान: कलकत्ता, सूरत, इंदौर, झारखंड) की वंशावली हमें श्री महेश अग्रवाल जी द्वारा २ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00037	न्यांगल गांव (राजगढ़, चुरु)	भादरा (हनुमानगढ़) राजस्थान	यह स्व श्री उदयभान जी (गोत्र: गर्ग पूर्वज: न्यांगल गांव (राजगढ़, चुरु) वर्तमान: भादरा (हनुमानगढ़) राजस्थान) की वंशावली हमें श्री प्रिंस कुमार अग्रवाल जी पुत्र श्री Sh. रतन लाल जी अग्रवाल द्वारा २ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00038	सलामपुरिया बगड़ जिला झुंझुन राजस्थान	शेगाव बुलढाणा महाराष्ट्र	यह स्व श्री किशन चंद जी (गोत्र: गर्ग चौधरी परिवार पूर्वज: सलामपुरिया बगड़ जिला झुंझुन राजस्थान वर्तमान शेगाव बुलढाणा महाराष्ट्र) की वंशावली हमें श्री रजनीकांत राधेश्याम जी सलामपुरिया द्वारा ४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00039	सुजानगढ	सुजानगढ , नेपाल , मुंबई	यह स्व श्री टेकुचंद जी (गोत्र: गर्ग सुजानगढ निवासी बेडियाँ परिवार) की वंशावली हमें श्रीमती अरुणा बेडियाँ द्वारा १० जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00040	गंगाननगर राजस्थान	गंगाननगर राजस्थान	स्व श्री मनीराम जी भट्टेवाले (गोत्र: गर्ग भट्टेवाले परिवार स्थान: गंगाननगर राजस्थान) की वंशावली हमें १३ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00041	हरदौगंज, अलीगढ़	दिल्ली	यह स्व श्री रामप्रसाद जी (गोत्र: गर्ग पूर्वज: हरदौगंज, अलीगढ़) की वंशावली हमें श्री मनीष गर्ग जी द्वारा २८ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00043			यह स्व श्री विष्णु चंद्र गुप्त जी (गोत्र: गर्ग) की वंशावली हमें उनकी पुस्तक से प्राप्त हुई।
GA00044	डीडवाना राजस्थान	डीडवाना राजस्थान	स्व श्री कुशाली राम जी (गोत्र: गर्ग पटवारी परिवार पूर्वज: डीडवाना राजस्थान) की वंशावली हमें श्री मनीष पटवारी पुत्र श्री राजेंद्र पटवारी जी २१ अक्टूबर जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00045	रामगढ जिला सीकर राजस्थान	जिला अनूपपुर कोतमा मध्य प्रदेश बिलासपुर छत्तीसगढ़	स्व. श्री पेश राम जी (गोत्र: गर्ग गाड़ोदिया परिवार पूर्वज: रामगढ जिला सीकर राजस्थान वर्तमान:जिला अनूपपुर कोतमा मध्य प्रदेश बिलासपुर छत्तीसगढ़) की वंशावली हमें श्री गणेश अग्रवाल जी एडवोकेट पूर्व शासकीय अधिवक्ता (जिला अनूपपुर कोतमा मध्य प्रदेश) द्वारा २५ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00046	नोहर	अहमदाबाद	स्व. श्री बजरंगदास गोल्याण (गोत्र: गर्ग गोल्याण परिवार पैतृक स्थान: नोहर वर्तमान निवास स्थान: अहमदाबाद) की वंशावली हमें श्री नरेश गोल्याण जी द्वारा २ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00047			स्व श्री माधव राम जी (गोत्र: गर्ग परिवार) की वंशावली हमें श्री दिनेश गर्ग (पुल्लू) द्वारा १२ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00048	नदीगॉव जिला जालौन उत्तर प्रदेश	ग्वालियर मध्यप्रदेश	स्व: श्री पुन्नूलाल जी अग्रवाल (गोत्र: गर्ग पैतृक स्थान: नदीगॉव जिला जालौन उत्तर प्रदेश वर्तमान निवास स्थान: ग्वालियर मध्यप्रदेश) की वंशावली हमें श्री संतोष राज अग्रवाल पुत्र स्व: श्री कैलाश चंद्र जी अग्रवाल द्वारा ७ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00049	थाना भवन, जिला शामली उत्तर प्रदेश	कोटा राजस्थान	स्व: श्री बैजनाथ सहाय (गोत्र: गर्ग पैतृक स्थान: थाना भवन, जिला शामली उत्तर प्रदेश वर्तमान निवास स्थान: कोटा राजस्थान) की वंशावली हमें श्री राम निवास गर्ग पुत्र श्रीराम गर्ग अग्रवाल जी द्वारा ७ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00050	रतन नगर, राजस्थान	डोबसन लेन, हावड़ा पश्चिम बंगाल	स्व: श्री रत्ती राम जी (गोत्र: गर्ग पैतृक चमड़िया परिवार स्थान: रतन नगर, राजस्थान वर्तमान निवास स्थान: डोबसन लेन, हावड़ा पश्चिम बंगाल) की वंशावली हमें श्री पवन कुमार चमड़िया द्वारा ११ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00051	दौसद / अलवर / राजस्थान	मुंबई, महाराष्ट्र	स्व: श्री राम दयाल गुप्ता जी (गोत्र: गर्ग परिवार पैतृक निवास : दौसद / अलवर / राजस्थान वर्तमान निवास:मुंबई, महाराष्ट्र) की वंशावली हमें श्री नंदकिशोर अग्रवाल पुत्र श्री सत्यप्रकाश अग्रवाल जी द्वारा ११ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00052	नारेहड़ा राजस्थान	कोटपूतली जयपुर राजस्थान बुढ़ार (मप्र).	स्वर्गीय श्री भीमाराम जी की वंशावली (गर्ग गोत्र राडा परिवार पैतृक निवास: नारेहड़ा राजस्थान वर्तमान निवास: कोटपूतली जयपुर राजस्थान) श्री राजेन्द्र गर्ग जी, कोटपूतली (राज) व बुढ़ार (मप्र). जी द्वारा श्री श्याम सुन्दर बगड़िया के सहयोग से १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00053	डीडवाना राजस्थान	नांदेड़, महाराष्ट्र	स्व: श्री नाथमल जी भारतीया (गोत्र: गर्ग भारतीया परिवार पैतृक निवास : डीडवाना राजस्थान वर्तमान निवास:नांदेड़, महाराष्ट्र कुलदेवी: सफेदी माता : पुरोहित: गौड) की वंशावली हमें श्री अजय भारतीया पुत्र श्री शंकरलाल भारतीया जी से श्री रितेश भारूका द्वारा १७ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00054	देवलगांव राजा जिला बुलढाणा महाराष्ट्र	अग्रोहा से दिल्ली फतेहपुर से लाडनू दयालपुर से देवलगांव राजा जिला बुलढाणा महाराष्ट्र	स्व श्री शंकरलालजी धन्नावत (अग्रवाल) (गर्ग गोत्र धन्नावत परिवार पैतृक स्थान: देवलगांव राजा जिला बुलढाणा महाराष्ट्र (स्थान्तरण अग्रोहा से दिल्ली फतेहपुर से लाडनू दयालपुर से देवलगांव राजा जिला बुलढाणा महाराष्ट्र) की वंशावली श्री कैलाश शंकरलाल जी धन्नावत से श्री रितेश भारूका द्वारा १७ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00055		हनुमानताल जबलपुर मध्यप्रदेश	स्व श्री नंदलाल अग्रवाल (गर्ग गोत्र राजा कटारे परिवार पैतृक स्थान: वर्तमान स्थान: हनुमानताल जबलपुर मध्यप्रदेश) की वंशावली श्री निखिल अग्रवाल जीद्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GA00056/1	अमलाई (Amlai) अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश (अनूपपुर ज़िले के गठन से पूर्व यह शहडोल ज़िले के अंतर्गत आता था)	अमलाई (Amlai) अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश (अनूपपुर ज़िले के गठन से पूर्व यह शहडोल ज़िले के अंतर्गत आता था)	यह स्वर्गीय श्री लालचंद जी बगड़िया की वंशावली (गर्ग गोत्र, बगड़िया परिवार पैतृक निवास: अमलाई (Amlai) अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश (अनूपपुर ज़िले के गठन से पूर्व यह शहडोल ज़िले के अंतर्गत आता था) श्री श्याम सुन्दर बगड़िया पुत्र स्वर्गीय श्री गजानन्द जी बगड़िया द्वारा १४ फरवरी को प्राप्त हुई।
GA00056/2			यह स्वर्गीय श्री शिव लाल जी (गर्ग गोत्र, बगड़िया परिवार, चाऊ बीराजी सती माता, कुलदेवी पाड़ल माताजी, कुलदेवता नरसिंघ भगवान) की वंशावली हमें श्रीमती मीरा बगड़िया जी से १५ मई को प्राप्त हुई।
GA00056/3	चिड़ावा जिला झुंझुनू	चिड़ावा जिला झुंझुनू	यह स्वर्गीय श्री रामनिवास जी बगड़िया (गर्ग गोत्र, बगड़िया परिवार, पैतृक स्थान: चिड़ावा जिला झुंझुनू) की वंशावली हमें श्री एस के बगड़िया जी से १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00056/4	सलामपुरिया बगड़ जिला झुंझुन राजस्थान	श्रीगंगाननगर राजस्थान	यह स्वर्गीय श्री लक्ष्मण दास जी बगड़िया (गर्ग गोत्र, बगड़िया परिवार, पैतृक स्थान: बागड़, इस्लामपुर जिला झुंझुन राजस्थान, वर्तमान: श्रीगंगाननगर राजस्थान) की वंशावली हमें श्री अरुण बगड़िया जी पुत्र श्री अमर नाथ बगड़िया जी से १३ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GA00057			सती दादी माँ सोमती दादी की वंशावली स्व श्री सतियो चौधरी जी (गोत्र: गर्ग गोत्र कारीवाल परिवार बड़वा चौधरी परिवार करि गांव हरियाणा) की वंशावली हमें श्रीमती मधु अग्रवाल जी से श्री अशोक गुप्ता जी द्वारा २६ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई। सती विक्रमी सम्वत १६२९ विस्थापन १८०९ (विक्रमी सम्वत)

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00001	चिड़ी गांव , रोहतक हरियाणा से सराय से सिवाल खास मेरठ उत्तर प्रदेश	सिवाल खास मेरठ उत्तर प्रदेश/ दिल्ली	गोयल परिवार की वंशावली, उद्गम स्थल - चिड़ी गांव , रोहतक हरियाणा से सराय से सिवाल खास मेरठ उत्तर प्रदेश
GO00002	गॉव रमपूरा घतुराला, पोस्ट नियामतपुर वाया सिरसी तहसील बिलारी (राजा का सहसपुर) जिला मुरादाबाद (अब चंदौसी) उत्तर प्रदेश	जोधपुर राजस्थान	गोयल परिवार की वंशावली गॉव रमपूरा घतुराला, पोस्ट नियामतपुर वाया सिरसी तहसील बिलारी (राजा का सहसपुर) जिला मुरादाबाद (अब चंदौसी) उत्तर प्रदेश
GO00003	काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड	काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड	श्री विनय गोयल जी की वंशावली वर्तमान स्थल : काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड यह वंशावली हमें श्री विनय गोयल जी द्वारा श्री रवि जिंदल से ०१ जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
GO00004			श्री गंगाराम (गोयल गोत्र) जी की वंशावली हमें श्री अलोक गोयल द्वारा श्री रवि जिंदल से १० जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
GO00005	गुहाना जिला सोनीपत	ग्राम पंचायत कुडेकेला, जिला रायगढ़, धमंजगढ ब्लाक छत्तीसगढ़ राज्य	गोत्र गोयल , पूर्वज हरियाणा राज्य के गुहाना जिला सोनीपत, यह वंशावली श्री राजेश गोयल (जिला रायगढ़ के धमंजगढ ब्लाक के ग्राम पंचायत कुडेकेला में निवास , छत्तीसगढ़ राज्य) द्वारा तिथि १० जुलाई २०२२ को बनवाई
GO00006	ग्राम दौताइ जिला हापुड़ (उ प्र)	मेरठ उ प्र	पैतृक ग्राम; दौताइ जिला हापुड़ (उ प्र)) निवास (मेरठ उ प्र)) स्व० श्री हरसुख लाल गोयल जी की वंशावली, यह वंशावली हमें श्री महेश गोयल जी द्वारा १6 जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00007	नगला तुला (भरतपुर)	किशनगढ़ (अजमेर)	यह वंशावली हमें श्री अनिल गोयल पुत्र श्री रामप्रसाद गोयल जी पैतृक स्थान: नगला तुला (भरतपुर) निवास स्थान: किशनगढ़ (अजमेर) से श्री रवि जिंदल जी द्वारा ०४ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GO00008	बटाला, पंजाब	बटाला, पंजाब	यह वंशावली हमें श्री सुरेश कुमार गोयल पुत्र श्री राम मूर्ति अग्रवाल (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: बटाला, पंजाब) से रवि जिंदल जी द्वारा ०६ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GO00009	महम हरियाणा	महम हरियाणा	स्वर्गीय श्री भूरामल जी (गोत्र: गोयल कुटुंबनाम: नम्बरदार परिवार) जी की वंशावली हमें श्री विनोद गोयल जी द्वारा जनवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
GO0010	देवबंद	कांधला कस्बा जिला शामली उत्तर प्रदेश	श्री घमनलाल गोयल जी की वंशावली (वर्तमान स्थान: कांधला कस्बा जिला शामली उत्तर प्रदेश पैतृक स्थान: देवबंद (लगभग 550 वर्ष पूर्व) द्वारा रवि जिंदल जी से २५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई है
GO00011	लाहौर	बटाला	यह श्री बन्ना मल जी (गोयल गोत्र) वंशावली हमें श्री अश्वनी अग्रवाल पुत्र श्री कश्मीरी लाल जी से श्री सुरेश कुमार गोयल जी द्वारा १६ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
GO00012	मेहम	बटाला	यह श्री नानक चंद अग्रवाल जी (गोयल गोत्र) की वंशावली हमें श्री सुभाष चंद्र सुपुत्र श्री दरबारी लाल (मूल निवासी - मेहम वर्तमान निवास स्थान: बटाला से श्री सुरेश कुमार गोयल के सहयोग द्वारा १२ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00013			श्री कन्हैया लाल गोयल (गोत्र: गोयल) जी की वंशावली हमें श्री गोविंद गोयल जी द्वारा सितम्बर २०२२ में प्राप्त हुई।
GO00014	गाज़ियाबाद	गाज़ियाबाद	यह श्री चौधरी भाल सिंह अग्रवाल (गोयल गोत्र) (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: गाज़ियाबाद) वंशावली हमें श्री श्रवण कुमार (गोयल) अग्रवाल द्वारा 20 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00015	ग्राम बजना	बुलंदशहर	यह श्री खेम चंद अग्रवाल (गोयल गोत्र) (पैतृक स्थान: ग्राम बजना, वर्तमान - बुलंदशहर) वंशावली हमें श्री विष्णु गोयल पुत्र श्री केशव देव अग्रवाल से श्री रवि जिंदल द्वारा 22 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00016	अलोदा जमशेद पुर	अलोदा जमशेद पुर	यह श्री नाथु लाल मोदी जी (गोयल गोत्र) की वंशावली हमें श्री अशोक कुमार मोदी सुपुत्र श्री बजरंग लाल मोदी निवास अलोदा जमशेद पुर रवि जिंदल जी द्वारा १६ सिंतम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
G000017	आगरा	पीएसओ पुर	यह स्व० श्री मूलचंद्र गोयल जी की वंशावली हमें श्री अजय गोयल सुपुत्र स्व श्री रमेश चंद्र गोयल (पैतृक स्थान: काशीपुर निवास स्थान: काशीपुर (उत्तराखण्ड) से श्री रवि जिंदल जी द्वारा 23 सिंतम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00018	गाज़ियाबाद	गाज़ियाबाद	यह श्री चौधरी भाल सिंह अग्रवाल (गोयल गोत्र) (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: गाज़ियाबाद) वंशावली हमें श्री श्रवण कुमार (गोयल) अग्रवाल द्वारा 20 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00019	फतेहपुर (अलीगढ़)	फतेहपुर (अलीगढ़)	यह श्री गोविन्द राम अग्रवाल जी (गोयल गोत्र) पैतृक निवास: फतेहपुर (अलीगढ़) की वंशावली श्री पंकज अग्रवाल पुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल से ५ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00020	छारा	बहादुरगढ़	यह श्री बनवारी लाल जी अग्रवाल (पैतृक स्थान - छारा निवास स्थान - बहादुरगढ़) की वंशावली हमें श्री केशव गोयल पुत्र श्री मनोज गोयल से श्रीमति नेहा मित्तल जी द्वारा ११ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00021	हरदा, मध्य प्रदेश राज्य)	हरदा, मध्य प्रदेश राज्य)	यह श्री मटाबकस जी (गोयल गोत्र) (पैतृक स्थान - हरदा, मध्य प्रदेश राज्य) की वंशावली हमें श्रीमती सरोज गोयल जी से श्रीमती संजना अग्रवाल जी द्वारा २६ दिसम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
GO00022	चीडावा झुंझुनू जिला राजस्थान	चीडावा झुंझुनू जिला राजस्थान	यह स्व. श्री जानकी दास टिबड़ेवाल (गोयल गोत्र) जी की वंशावली हमें श्री अनिल कुमार टिबड़ेवाल पुत्र श्री रामचंद्र टिबड़ेवाल (निवास स्थान: चीडावा झुंझुनू जिला राजस्थान) द्वारा २४ जनवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00023	पौंख गांव (गुढा) भोजगढ़ , झुंझुनूं जिला, राजस्थान	झरिया धनबाद झारखंड/बैंगलोर	यह स्वर्गीय श्री मंगल चंद भोजगढ़रिया जी की वंशावली (गोयल गोत्र, पैतृक निवास: पौंख गांव (गुढा) भोजगढ़ , झुंझुनूं जिला, राजस्थान) श्री निर्मल कुमार जी भोजगढ़रिया (बैंगलोर) पुत्र श्री राधेशयाम जी भोजगढ़रिया (झरिया धनबाद झारखंड) द्वारा ७ फ़रवरी को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00024	अकोड़ा जिला-नागौर, राजस्थान	पचोरा जिला-जलगांव महाराष्ट्र	यह स्वर्गीय श्री गुलाबचंद जी मोर की वंशावली (गोयल गोत्र, पैतृक निवास: अकोड़ा जिला-नागौर, राजस्थान , वर्तमान निवास: पचोरा जिला- जलगांव महाराष्ट्र) श्री सुरेशजी मोर पुत्र श्री शंकरलालजी मोर द्वारा १२ फरवरी को प्राप्त हुई।
GO00025	ग्राम खेतड़ी जिल्हा शिखर राजस्थान	ग्राम खेतड़ी जिल्हा शिखर राजस्थान	यह स्वर्गीय श्री पीथालालजी लीलडीया जी (गोत्र: गोयल परिवार:लीलरिया पैतृक निवास: ग्राम खेतड़ी जिल्हा शिखर राजस्थान, कुल सती चुंडावत माता जी) की वंशावली, श्रीमति सुलेखा द्वारा हमें ०१ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00026	जोरावर नगर	कटंगी बालाघाट मध्यप्रदेश	यह स्वर्गीय श्री नारायण अग्रवाल जी (गोत्र: गोयल पैतृक निवास: जोरावर नगर, वर्तमान निवास: कटंगी बालाघाट मध्यप्रदेश) की वंशावली, श्री सुनील अग्रवाल पुत्र श्री शंकर लाल अग्रवाल द्वारा हमें ०३ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00027	बसावा जिला सीकर राजस्थान	भागलपुर	स्व श्री गुलाबराय जी (गोत्र: गोयल भारूका परिवार पैतृक निवास : बसावा जिला सीकर राजस्थान निवास स्थान: भागलपुर) जी की वंशावली हमें श्री अमरदीप भारूका पुत्र श्री स्व श्री केशर देव भारूका द्वारा १७ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00028	जयपुर मांडवा राजस्थान	अकोला महाराष्ट्र	यह स्वर्गीय श्री गंगाराम जी अग्रवाल (गोत्र: गोयल परिवार: गोयनका पैतृक निवास: जयपुर मांडवा राजस्थान, वर्तमान निवास: अकोला महाराष्ट्र) की वंशावली, श्री लालीकुमार अग्रवाल जी पुत्र श्री हरिकिसन अग्रवाल जी द्वारा हमें २५ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00029	सिंघाना राजस्थान	चांदवड जिला नासिक महाराष्ट्र	स्व श्री बोधराम जी (वैश्य अग्रवाल गोत्र: गोयल गोत्र सिंघानिया परिवार निवास:सिंघाना राजस्थान से प्रीतमपुर राजस्थान वहां से चांदवड जिला नासिक महाराष्ट्र) की वंशावली हमें श्री दिवेश अग्रवाल पुत्र श्री रामुलाल जी अग्रवाल द्वारा २५ मई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00030		दाहोद (गुजरात)	स्वर्गीय श्री रामलाल जी अग्रवाल (गोत्र: गोयल निवास: दाहोद (गुजरात) जी की वंशावली हमें श्री एन वी गोयल जी पुत्र श्री विजय भाई जगदीश चंद्र अग्रवाल द्वारा १४ जून २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00034	ग्राम महरोली	ग्राम महरोली	यह स्व श्री प्रताप सिंह जी (गोत्र गोयल ग्राम महरोली) की वंशावली श्री महेंद्र कुमार जी पुत्र श्री ईसरी प्रसाद जी द्वारा हमें १८ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00035		नीमच मध्य प्रदेश	यह स्व श्री फतेहराम जी की वंशावली (नीमच मध्य प्रदेश) श्री तरु जी द्वारा हमें १८ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00036		अहमदाबाद	यह स्व श्री फूलचंद जी (गोत्र: गोयल) की वंशावली श्री मनोज कुमार जी (निवास अहमदाबाद) द्वारा १७ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00037			श्री राधेश्याम गिनोडिया (गोत्र: गोयल कुटुंबनाम: गिनोडिया परिवार) जी की वंशावली हमें श्री सुमित गिनोडिया जी पुत्र श्री कमखया पसाद गिनोडिया द्वारा जून २०२३ में प्राप्त हुई।
GO00038	डीडवाना	जोधपुर	स्वर्गीय श्री नेनू राम जी (गोत्र: गोयल कुटुंबनाम: छितरका खांप पैतृक निवास:डीडवाना वर्तमान निवास: जोधपुर, सती माता: सत्ती दादी मुक्ता मां डीडवाना (राजस्थान) जी की वंशावली हमें श्री महेश गोयल पुत्र श्री ओम प्रकाशजी निवासी जोधपुर द्वारा २० जून २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00039	चिड़ावा राजस्थान	कलकत्ता	श्री भजन राम जी (गोत्र: गोयल पैतृक निवास : चिड़ावा राजस्थान, वर्तमान कलकत्ता) जी की वंशावली हमें श्री सौरभ अग्रवाल जी पुत्र श्री अशोक अग्रवाल जी द्वारा ३ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00040			स्वर्गीय श्री बुधा राम (गोत्र: गोयल कुटुंबनाम: बरासरिया गोयल) जी की वंशावली हमें श्री एस के गोयल जी द्वारा ७ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00041	गवंडी एक्सटेंशन मौजपुर दिल्ली	गवंडी एक्सटेंशन मौजपुर दिल्ली	यह श्री काशीराम जी (गोयल गोत्र) निवास गवंडी एक्सटेंशन मौजपुर दिल्ली की वंशावली श्री अशोक कुमार गुप्ता जी द्वारा से १८ अक्टूबर २०२२ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00042		मुथल हरियाणा	स्वर्गीय श्री ज्वाला प्रसाद जी (गोत्र: गोयल स्थान: मुथल हरियाणा) जी की वंशावली हमें श्रीमती निधि गोयल जी धर्मपत्नी श्री मनोज गोयल जी द्वारा १४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00043	सिरसा	हिसार	स्वर्गीय श्री धर्म राम जी (गोत्र: गोयल स्थान: हिसार) जी की वंशावली हमें श्री सुरेश कुमार गोयल जी पुत्र श्री अमरनाथ जी द्वारा १४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00044	गुढ़ा, महेंद्रगढ़, हरियाणा	बीकानेर, राजस्थान	स्वर्गीय श्री गेंदाराम जी गोयल जी (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान: गुढ़ा, महेंद्रगढ़, हरियाणा वर्तमान स्थान: बीकानेर, राजस्थान) जी की वंशावली हमें श्री नितेश गोयलजी पुत्र स्वर्गीय श्री प्रदीप गोयल द्वारा १४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00045	सिरसा	हिसार	स्व श्री बालक राम जी (गोत्र: गोयल स्थान सिरसा) की वंशावली श्री विनोद गोयल जी से जून २०२३ में प्राप्त हुई
GO00046	महम	महम	स्व श्री चौधरी जी (गोत्र: गोयल शरण परिवार की वंशावली श्री विनोद गोयल जी से जून २०२३ में प्राप्त हुई
GO00047	गांव लालसोट, हिंडौन सिटी	एबी रोड बीनागंज जिला गुना एमपी	स्वर्गीय श्री सॊजी रामजी गोयल जी (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान:गांव लालसोट, हिंडौन सिटी वर्तमान स्थान: एबी रोड बीनागंज जिला गुना एमपी) की वंशावली हमें श्री अंकित गोयल पुत्र श्री घनश्याम जी गोयल जी द्वारा १ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00048	परतापूरिया नीमराना अलवर राजस्थान	धमतरी, रायपुर आदि विभिन्न स्थान	स्वर्गीय श्री हुकुम चंद जी गोयल जी (गोत्र: गोयल परतापूरिया परिवार पैतृक स्थान:परतापूरिया नीमराना अलवर राजस्थान) की वंशावली हमें श्री अरुण लाठ जी द्वारा १ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00049	सिंघाना	सिंघाना	स्वर्गीय श्री दयाराम जी (गोत्र: गोयल जैन परिवार पैतृक स्थान: सिंघाना) की वंशावली हमें श्री ललित जैन जी द्वारा १ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00050	जोरावर नगर	कटंगी बालाघाट मध्यप्रदेश	स्वर्गीय श्री नारायण जी (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान: जोरावर नगर वर्तमान स्थान: कटंगी बालाघाट मध्यप्रदेश) की वंशावली हमें श्री सुनील जी पुत्र श्री शंकर लाल जी द्वारा ११ नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00051	लक्ष्मणगढ़ सीकर राजस्थान	लक्ष्मणगढ़ सीकर राजस्थान	स्वर्गीय श्री भोज राज जी (गोत्र: गोयल सुरेकापरिवार पैतृक स्थान:लक्ष्मणगढ़ सीकर राजस्थान) की वंशावली हमें श्री सुभाष सुरेखा पुत्र श्री राम निरंजन सुरेका द्वारा १६ नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00052	नागौद जिला सतना मध्य प्रदेश	लगभग ८० वर्षों से बुढ़ार जिला शहडोल	स्वर्गीय श्री राघव प्रसाद अग्रवाल (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान:नागौद जिला सतना मध्य प्रदेश वर्तमान स्थान: बुढ़ार जिला शहडोल - लगभग ८० वर्षों से) की वंशावली हमें श्री सतीश कुमार अग्रवाल पुत्र श्री रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल द्वारा २ दिसंबर २०२३ को श्री श्याम सुन्दर जी बगड़िया द्वारा प्राप्त हुई।
GO00053			स्वर्गीय श्री कुशली राम जी (गोत्र: गोयल बाजारी परिवार) की वंशावली हमें श्री मनीष पटवारी जी द्वारा १८ नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00054	पनियाली गाँव यू.पी.तहसील तलेडी जिला सहारनपुर	कोटा राजस्थान	श्री मंगत राय जी अग्रवाल (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान:पनियाली गाँव यू.पी.तहसील तलेडी जिला सहारनपुर वर्तमान स्थान: कोटा राजस्थान) की वंशावली हमें श्रीमती रचना गोयल द्वारा २ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00055	लक्ष्मण गढ़ शेखावाटी जिला राजस्थान	बिजुरी जिला अनूपपुर मप्र	श्री मगनी राम जी गोयनका (गोत्र: गोयल गोयनका परिवार पैतृक स्थान: लक्ष्मण गढ़ शेखावाटी जिला राजस्थान वर्तमान स्थान बिजुरी जिला अनूपपुर मप्र) की वंशावली हमें श्री बाल कृष्ण गोयनका द्वारा श्री श्याम सुन्दर बगड़िया निवासी अमलई से १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00056			स्व श्री अमीचंद हंसारिया जी (गोत्र: गोयल हंसारिया परिवार की वंशावली हमें श्री अशोक गुप्ता जी से १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
GO00057	लपावली तहसील बालघाट जिला गंगापुर सिटी राजस्थान	हिण्डोन सिटी जिला करौली राजस्थान	स्व श्री ईश्वर प्रसाद जी (गोत्र: गोयल पैतृक स्थान:लपावली तहसील बालघाट जिला गंगापुर सिटी राजस्थान वर्तमान स्थान: हिण्डोन सिटी जिला करौली राजस्थान) की वंशावली हमें श्री सुरेश चंद गुप्ता पुत्र स्व श्री दामोदर लाल गोयल द्वारा १२ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
GO00058		लगभग ८० वर्षों से बुढ़ार जिला शहडोल	स्व श्री तुहीराम (गोत्र: गोयल तुहीरामका परिवार) की वंशावली श्री पुरषोत्तम राम तुहीरामका की पुस्तक तुहीरामका वंश परिचय श्री पवन गोयल और श्री विनोद गोयल नम्बरदार जी के सहयोग से प्राप्त हुई
GO00059			मनसीखिरिया (Manshikiriya) परिवार की वंशावली
GO00060	रामगढ़ सीकर राजस्थान	कोतमा जिला अनूपपुर मध्यप्रदेश	स्व श्री भादुरमल जी गोयनका (गोत्र: गर्ग गोयनका परिवार पूर्वज: रामगढ़ सीकर राजस्थान वर्तमान: कोतमा जिला अनूपपुर मध्यप्रदेश) की वंशावली हमें श्रीमती किरण गोयनका पति श्री केशव कुमार गोयनका जी द्वारा श्री श्याम सुन्दर बगड़िया के सहयोग से ०३ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
GN00001	गावं उटवारा	बीकानेर, हिसार और अन्य स्थान	यह स्व श्री जयसी बाबा जी (गंगल परिवार गोत्र पैतृक निवास: गावं उटवारा वाला वर्तमान: बीकानेर, हिसार और अन्य स्थान) की वंशावली श्री भारत भूषण गुप्ता पुत्र श्री शंकर लाल जी गुप्ता द्वारा हमें १७ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
JI00001			श्री उमराव अग्रवाल (जिंदल गोत्र) जी की वंशावली यह वंशावली हमें श्री रवि जिंदल द्वारा ०१ जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
JI00002	मलेर कोटला	फगवाड़ा	यह श्री इधु मल अग्रवाल (जिंदल गोत्र) वंशावली हमें श्री राज कुमार जिंदल पुत्र श्री दर्शन लाल जिंदल जी (पैतृक स्थान: मलेर कोटला निवास स्थान: फगवाड़ा (१९६८ से) से श्री रवि जिंदल जी द्वारा 6 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
JI00003	भिखी जिला बठिंडा पंजाब	रानी बाजार बीकानेर	श्री भगवान दास गुप्ता (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : भिखी जिला बठिंडा पंजाब, वर्तमान: रानी बाजार बीकानेर) की वंशावली हमें श्री अनिल कुमार गुप्ता पुत्र श्री कोरसेन गुप्ता द्वारा हमें ५ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
JI00004	महरौली (राजस्थान)	नसीराबाद (राजस्थान)	श्री स्व श्री जैसराजजी जिंदल जी (गोत्र: जिंदल, लगभग 1830 से 1850 के मध्य महरौली (राजस्थान) से नसीराबाद (राजस्थान) आये) की वंशावली हमें श्री गोविन्द जिंदल जी पुत्र श्री छीतरमल जिंदल जी द्वारा १4 जून २०२३ को प्राप्त हुई।
JI00005	हिसार हरियाणा	हिसार हरियाणा	श्री स्व श्री मगनी राम जी जिंदल (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : नलवावाले हिसार हरियाणा) की वंशावली हमें श्री पंकज जिंदल पुत्र श्री ब्रिज मोहन जिंदल जी द्वारा १३ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
JI00006	सिधांवा भिवानी हरियाणा	सिधांवा भिवानी हरियाणा	स्व श्री जय लाल जी जिंदल (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : सिधांवा भिवानी हरियाणा) की वंशावली हमें श्रीमती कविता अग्रवाल द्वारा १९ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
JI00007	राजगढ़ चूरू राजस्थान		स्व श्री भेखमल मल जी (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : राजगढ़ चूरू राजस्थान) की वंशावली हमें श्री रतन जी पुत्र स्व श्री विश्वनाथ जी जिंदल द्वारा ८ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई। (राजगढ़ चूरू राजस्थान से निकास लगभग 100 पूर्व, कुछ परिवार के सदस्य अभी भी पुराने समय से ही राजगढ़ चूरू राजस्थान में निवास करते है परन्तु सम्पर्क में नहीं है)
JI00008	चांदपुर (बिजनौर) उत्तर प्रदेश	चांदपुर (बिजनौर) उत्तर प्रदेश	स्व श्री उमराव सिंह जी (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : चांदपुर (बिजनौर) उत्तर प्रदेश) की वंशावली हमें श्री विनीत कुमार जिंदल पुत्र श्री रघुनन्दन शरण जी जिंदल द्वारा ८ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
JI00009			श्री केवल राम खरकियाँ (गोत्र: जिंदल परिवार: खरकियाँ) जी की गोपाल जिंदल द्वारा पुस्तक में संकलित वंशावली श्री गोविन्द जिंदल जी द्वारा २१ अगस्त २०२३ को प्राप्त हुई
JI00010	हठूर पंजाब	अहमदाबाद)	स्व श्री अमर नाथ (गोत्र: जिंदल, पैतृक निवास : हठूर पंजाब, वर्तमान: अहमदाबाद) की वंशावली हमें श्री मोहित जिंदल पुत्र श्री कमल जिंदल द्वारा १२ अक्टूबर २०२३ को प्राप्त हुई।

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
KA00001	जहांगीराबाद जिला बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश	जहांगीराबाद जिला बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश	स्वर्गीय श्री गुरदयाल मल जी (गोत्र: कंसल गोत्र पैतृक स्थान: जहांगीराबाद जिला बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश) की वंशावली हमें श्री प्रदीप कुमार नागल पुत्र श्री ज्ञान चंद जी (लोनेवाला, पुणे) द्वारा २८ नवम्बर २०२२ को प्राप्त हुई।
KA00002	रायपुर राजस्थान	ग्वालियर मध्यप्रदेश	यह श्री सोहूराम जी (कंसल गोत्र) (पैतृक रायपुर राजस्थान वर्तमान निवास - ग्वालियर मध्यप्रदेश) की वंशावली हमें श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी द्वारा ८ दिसम्बर २०२२ को प्राप्त हुई। श्री सोहूराम जी जी का परिवार राजस्थान ब्यावर के पास रायपुर नामक स्थान से 200 वर्ष पूर्व ग्वालियर में आया. अजमेर ब्यावर एवं दिल्ली में निवास करने वाले रायपुर से निकले हुए परिवार के लोग अपना कुटुंब नाम "रायपुरिया" लिखते हैं यह एक प्रतिष्ठित समाजसेवी परिवार है।
KU00001	प्रयाग	प्रयाग	श्री प्रियदास अग्रवाल कुछल गोत्र (प्रयाग) जी की वंशावली हमें श्री संजय अग्रवाल से श्री रवि जिंदल द्वारा १० जुलाई २०२२ में प्राप्त हुई है
KU00002	सिरोली बहाली नारनौल	सिवनी मध्यप्रदेश	स्वर्गीय श्री मान सिंह (गोत्र: कुछल निवास: सिरोली बहाली नारनौल, वर्तमान निवास: सिवनी मध्यप्रदेश) की वंशावली, श्री तरुण जी पुत्र श्री भगवान दास अग्रवाल हमें २ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
KU00003	ग्राम छोटी खुर्द दिल्ली	ग्राम छोटी खुर्द दिल्ली	स्वर्गीय श्री पूर्ण चंद जी (गोत्र: कुछाल गोत्र पैतृक स्थान: ग्राम छोटी खुर्द दिल्ली - ३९) की वंशावली हमें श्री विजय कुमार कुछल द्वारा २६ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
MK00001	काशी	काशी	काशी मधुकुल गोत्र साह परिवार की वंशावली वर्ष २००७ में निर्मित
MA00001	सरहून खेड़ा, कोटपुतली, राजस्थान	सरहून खेड़ा, कोटपुतली, राजस्थान	श्री खेमचंद जी अग्रवाल (मंगल गोत्र) जी की वंशावली पैतृक स्थान : सरहून खेड़ा, कोटपुतली, राजस्थान कुल देवी - दैहमी माता - मनसा देवी गोत्र : मंगल यह वंशावली श्री अखिलेश अग्रवाल (मंगल गोत्र) द्वारा श्री रवि जिंदल जी से प्राप्त हुई (१० जुलाई २०२२)

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MA00002	सिरोंज, विदिशा, मध्य प्रदेश	सिरोंज, विदिशा, मध्य प्रदेश	यह वंशावली हमें श्रीमती कर्तिका अग्रवाल जी पैतृक और निवास स्थान: सिरोंज, विदिशा, मध्य प्रदेश से श्री रवि जिंदल जी द्वारा ०४ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
MI00003	ठाकुरगंज (बिहार)	किशनगढ़ (अजमेर)	यह वंशावली हमें श्री सुमित अग्रवाल (मंगल गोत्र) पुत्र श्री बिमल कुमार अग्रवाल पैतृक स्थान: ठाकुरगंज (बिहार) निवास स्थान: किशनगढ़ (अजमेर) से रवि जिंदल जी द्वारा ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई
MI00004	अलोदा जमशेद पुर	अलोदा जमशेद पुर	यह श्री नाथु लाल मोदी जी (मंगल गोत्र) की वंशावली हमें श्री अशोक कुमार मोदी सुपुत्र श्री बजरंग लाल मोदी निवास अलोदा जमशेद पुर रवि जिंदल जी द्वारा १६ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
MA00005	बमोरी जिला विदिशा	बमोरी जिला विदिशा	यह श्री मुकुंद राय जी (मंगल गोत्र) पैतृक निवास बमोरी जिला विदिशा वंशावली श्रीमति नमिता जी से २८ अक्टूबर २०२२ को प्राप्त हुई
MA00006	मुरादाबाद उत्तरप्रदेश राज्य)	हिसार हरयाणा	यह श्री सेठ राम सहाय मल जी (मंगल गोत्र) (स्थान - मुरादाबाद उत्तरप्रदेश राज्य) की वंशावली हमें श्री कैलाश चंद्र गुप्ता जी पुत्र श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता जी (निवास स्थान हिसार हरयाणा राज्य) से ०१ जनवरी २०२३ को प्राप्त हुई
MA00007	ततारपुर	सानिया (छोटी खाटू) राजस्थान	यह श्री सेठ माहाराम जी (मंगल गोत्र) (पैतृक स्थान: ततारपुर) की वंशावली हमें श्री गोविन्द अग्रवाल जी पुत्र श्री मांगीलाल अग्रवाल जी (निवास स्थान: सानिया (छोटी खाटू) राजस्थान) से ०६ जनवरी २०२३ को प्राप्त हुई
MA00008	मोहना जिला फरीदाबाद	मोहना जिला फरीदाबाद	यह स्व. श्री नानक चंद (मंगलगोत्र) जी की वंशावली हमें श्री ललित कुमार जी पुत्र श्री राम किशोर (मोहना जिला फरीदाबाद) द्वारा ५ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00009	कोटा	कोटा	यह स्वर्गीय श्री मीठालाल गुड़वाले जी (मंगल गोत्र वर्तमान स्थान: कोटा) की वंशावली हमें श्रीमती सरिता अग्रवाल जी द्वारा डॉ लोकमणि गुप्ता से ६ फ़रवरी २०२२ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MA00010	किरतपुर जिला बिजनौर उत्तर प्रदेश	किरतापुर जिला बिजनौर उत्तर प्रदेश	स्व श्री करोड़ीमल जी (गोत्र: मंगल, पैतृक स्थान: किरतपुर जिला बिजनौर उप) की वंशावली श्री सचिन अग्रवाल पुत्र श्री रजनीश अग्रवाल द्वारा हमें १७ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00011	श्री माधोपुर	चित्तोरगढ	यह स्व श्री देवी सहाय जी (गोत्र: मंगल पैतृक स्थान: श्री माधोपुर वर्तमान स्थान: चित्तोरगढ) की वंशावली श्री अशोक कुमार गुप्ता जी पुत्र श्री माखनलाल गुप्ता द्वारा हमें २४ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00012	गांव: पलासरा	मुंबई, सूरत	यह स्व श्री सेवाराम जी (गोत्र: मंगल मोदी परिवार पैतृक गांव: पलासरा कुलदेवता: बालाजी टपकेश्वर महादेव) की वंशावली श्री परमेश्वर लाल मोदी पुत्र श्री ज्वाला प्रसाद जी मोदी द्वारा २८ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00013	पैतृक स्थान (Parental place)	वर्तमान स्थल (Cuurent Place)	स्व श्री भेरू रामजी दासीवाला (गोत्र: मंगल पैतृक गांव:) की वंशावली श्री जवाहर लाल पुत्र श्री पुष्प चंद्र जी द्वारा ०९ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00014	उदयपुर धान मंडी राजस्थान	चित्तौड़गढ़ रेलवे स्टेशन के पास अग्रवाल किराना स्टोर निकट रंगीला हनुमान मंदिर उदयपुर , राजस्थान	स्व श्री कालू राम जी अग्रवाल (गोत्र: मंगल पैतृक गांव:उदयपुर धान मंडी राजस्थान वर्तमान स्थान: चित्तौड़गढ़ रेलवे स्टेशन के पास अग्रवाल किराना स्टोर) की वंशावली श्री हिमांशु जी पुत्र श्री उमा शंकर जी aur श्री कन्हैया लाल पुत्र स्व श्री जगन्नाथ अग्रवाल द्वारा २० दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई। द्वारा ०९ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
MA00015	जायल डीडवाना	चालीसगांव महाराष्ट्र	स्व श्री नानक राम जी (गोत्र: मंगल परसावत परिवार पैतृक गांव:जायल डीडवाना वर्तमान स्थान: चालीसगांव महाराष्ट्र) की वंशावली श्री रितेश भारूका द्वारा १५ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MI00004	कासगंज	कासगंज	यह वंशावली हमें श्री अवनीश मित्तल पुत्र स्व. श्री महेश चंद्र मित्तल जी कासगंज से श्री रवि जिंदल जी द्वारा २७ जुलाई २०२२ को प्राप्त हुई
MI00005	भोपाल	भोपाल	यह श्री लक्ष्मी नारायण मित्तल जी (पैतृक स्थान: भोपाल वर्तमान निवास स्थान: - भोपाल) की वंशावली हमें श्रीमती नेहा मित्तल से सुश्री नमिता मंगल जी द्वारा 24 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
MI00006	मूल निवास स्थान: वैर(भरतपुर) राजस्थान पैतृक स्थान: ब्रह्मबाद, बयाना (भरतपुर) राजस्थान	बड़ौदा , गुजरात	यह स्व श्री राम प्रसाद मित्तल जी की वंशावली (मूल निवास स्थान: वैर(भरतपुर) राजस्थान पैतृक स्थान: ब्रह्मबाद, बयाना (भरतपुर) राजस्थान वर्तमान निवास स्थान : बड़ौदा , गुजरात) हमें श्री देवेन्द्र मित्तल पुत्र श्री सत्येन्द्र मित्तल द्वारा श्री रवि जिंदल से 20 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
MI00007	शेख रिसायत पटियाला (पंजाब)	शेख रिसायत पटियाला (पंजाब)	यह वंशावली हमें अग्रवंश पुस्तक से प्राप्त हुई है जो डॉ रामचंद्र गुप्ता (पुत्र श्री शोभाराम अग्रवाल) शेख रिसायत पटियाला (पंजाब) द्वारा १९२१ ईस्वी में लिखी गयी थी
MI00008	हांसी चानौतिया	हांसी चानौतिया	यह लाला लिच्छीराम अग्रवाल जी (मित्तल गोत्र) निवास हांसी चानौतिया परिवार की वंशावली श्री ब्रह्मराजपुत्र श्री हरिचन्द्र जी से २१-सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
MI00009	बांशी नैनवा जिला बूंदी राजस्थान	कोटा राजस्थान	श्री राम लाल जी आलवाला (मित्तल गोत्र,आलवाला परिवार पैतृक निवास बांशी नैनवा जिला बूंदी राजस्थान वर्तमान कोटा राजस्थान) की वंशावली प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MI000010	सादुलपुर - राजगढ़	गिरिडीह ज़िला झारखण्ड/ रिशरा (पश्चिमी बंगाल)	यह स्वर्गीय श्री जोध राज जी (मित्तल गोत्र) की वंशावली, श्री गोपाल बागरिया जी पुत्र श्री गिरधारीलाल जी बागरिया (पैतृक निवास सादुलपुर - राजगढ़ लगभग १५० वर्ष पूर्व (~१८५० ईस्वी में गिरिडीह ज़िला भारत के झारखण्ड राज्य में विस्थापन हुआ यह वंशावली हमें श्री सुरेश कुमार बागरिया (पुत्र स्वर्गीय श्री रामेश्वर लाल बागरिया) अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पा और पुत्र सहित रिशरा (पश्चिमी बंगाल) में निवास कर रहे है के सहयोग से हमें ६ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई। (सिवनी से सादुलपुर आए सादुलपुर से गिरडीह गए)
MI00011	किशन पूरा (निकट रींगस सीकर (राजस्थान)	बीकानेर	श्री बंसी लाल (गोत्र: मित्तल पैतृक निवास :किशन पूरा (निकट रींगस सीकर (राजस्थान)) की वंशावली हमें श्री राकेश मित्तल (जन्मस्थान: सबाथू हिमाचल प्रदेश , वर्तमान निवास:बीकानेर) पुत्र श्री हरीचंद मित्तल द्वारा हमें ५ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00012	सिंग्रोरे ,गुढ़ा गौड़जी जिला झुंझुन, राजस्थान	अकोला	श्री केदारमलजी अग्रवाल (गोत्र: मित्तल पैतृक निवास: सिंग्रोरे ,गुढ़ा गौड़जी जिला झुंझुन, राजस्थान, वर्तमान निवास: अकोला) की वंशावली, श्री दीपक अग्रवाल पुत्र श्री ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा हमें १० मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00013	अजीतपुरा जिला हनुमानगढ़ राजस्थान	जलगांव, महाराष्ट्र	यह स्वर्गीय श्री रूपचंद जी सरावगी (गोत्र: मित्तल परिवार: सरावगी पैतृक निवास: अजीतपुरा जिला हनुमानगढ़ राजस्थान वर्तमान निवास: जलगांव, महाराष्ट्र) की वंशावली, श्री पवन कुमार जी पुत्र श्री संतलाल अग्रवाल जी द्वारा हमें १३ मार्च २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00014	सरमथुरा (राजस्थान)	राजस्थान	स्व श्री सेडूराम जी अग्रवाल (परिवार: अंगारके गोत्र: मित्तल पैतृक निवास : सरमथुरा (राजस्थान) जी की वंशावली हमें श्री दाऊ दयाल गुप्ता जी पुत्र श्री श्रवण कुमार मित्तल जी से २६ अप्रैल २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00015	धुलिया	धुलिया	स्व श्री बिसनराम जी ग्रवाल (गोत्र: मित्तल निवास : धुलिया, फर्म का नाम: पूरणमलजी बालूरामजी) जी की वंशावली हमें श्रीमती मीरा जी १४ मई २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MI00016	शादुलपुर	शादुलपुर	श्रीधर जी (गोत्र: मित्तल कंदोई परिवार शादुलपुर) की वंशावली श्री टीकम चंद नागरमल अग्रवाल जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00017	गांव - बुआना लाखु जिला सोनीपत हरियाणा	गांव - बुआना लाखु जिला सोनीपत हरियाणा	स्व श्री भूरामल जी जैन (गोत्र: मित्तल गांव - बुआना लाखु जिला सोनीपत हरियाणा) की वंशावली श्री आकाश जैन पुत्र श्री अशोक जैन जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00018	पुराना गांव राजगढ़, सादुलपुर जिला चूरु राजस्थान	नई दिल्ली	श्री गजानंद जी (गोत्र: मित्तल पैतृक स्थान: पुराना गांव राजगढ़, सादुलपुर जिला चूरु राजस्थान वर्तमान स्थान: नई दिल्ली) की वंशावली श्री ज्ञानेश्वर अग्रवाल पुत्र श्री सागर मल अग्रवाल जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00019	चूरु राजस्थान	पिलानी	श्री गोपीरामजी सफर (गोत्र: मित्तल सफर परिवार पैतृक स्थान: चूरु राजस्थान वर्तमान स्थान: पिलानी) की वंशावली श्री महेश कुमार अग्रवाल पुत्र श्री रतन लाल सफर द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00020	स्यालकोट	स्यालकोट	श्री महाराजमल जी महमिये (गोत्र: मित्तल महमिये परिवार पैतृक स्थान: स्यालकोट) की वंशावली श्री अशोक गुप्ता द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00021	बहु जलेरी गांव जिला रोहतक हरियाणा	अबोहर पंजाब	श्री परसराम मित्तल जी (गोत्र: मित्तल पैतृक स्थान: बहु जलेरी गांव जिला रोहतक हरियाणा, वर्तमान: अबोहर पंजाब) की वंशावली श्री सुशील जी पुत्र श्री मदन लाल जी द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई
MI00022	झुंझूनू	पाटोदा	स्व श्री पूरणमल जी (गोत्र: मित्तल थरडं/पाटोदिया परिवार पैतृक स्थान: झुंझूनू में पाटोदा) की वंशावली श्री पवन पाटोदिया पुत्र श्री डूंगर मल द्वारा ४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MI00023	उमरा गांव (ब्लॉक/तहसील हांसी जिला हिसार हरियाणा)	टिटलागढ़ (Titlagarh) (जिला बलांगिर ओड़िशा)	स्व श्री (श्रेष्ठी) भोपामलजी चौधरी जी (गोत्र: मित्तल पैतृक निवास: उमरा गांव (ब्लॉक/तहसील हांसी जिला हिसार हरियाणा) वर्तमानस्थान: टिटलागढ़ (Titlagarh) (जिला बलांगिर ओड़िशा) की वंशावली हमें श्री धनराज जैन द्वारा १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00024		फिरोजाबाद उत्तरप्रदेश)	स्व श्री नन्नू मल जी मित्तल (गोत्र: मित्तल स्थान: फिरोजाबाद उत्तरप्रदेश) की वंशावली श्री दीपक कुमार जैन मित्तल पुत्र श्री सुरेश चंद जैन अधिवक्ता द्वारा ४ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई
MI00025	सफड़ राजस्थान	सतना मध्यप्रदेश	स्व श्री लल्लूमल जी मित्तल जी (गोत्र: मित्तल सफड़िया परिवार पैतृक स्थान: सफड़ राजस्थान, वर्तमान: सतना मध्यप्रदेश) की वंशावली श्रीमती कविता अग्रवाल जी द्वारा १२ नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00026	खोरी, राजस्थान, तहसील शाहपुरा जिला जयपुर राजस्थान	कोटा, राजस्थान	स्व श्री गोरधन दास जी (गोत्र: मित्तल पैतृक स्थान: खोरी, राजस्थान, तहसील शाहपुरा जिला जयपुर राजस्थान, वर्तमान: कोटा, राजस्थान) की वंशावली श्री बी एल मित्तल जी द्वारा २१ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई
MI00027			परसरामपुरीया मित्तल परिवार की वंशावली
MI00028			श्री भगवती प्रसाद गुप्ता (गोत्र: मित्तल) की वंशावली हमें जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई
MI00029	नैनवा जिला. बूंदी राजस्थान	नैनवा जिला. बूंदी राजस्थान	स्व श्री ग्यारसी लाल जी (गोत्र: मित्तल (कागला) पटवारी परिवार (नैनवा जिला. बूंदी राजस्थान) की वंशावली हमे २० अगस्त २०२३ को प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
MI00030			स्व श्री तुलसीराम जी (गोत्र: मित्तल परिवार पैतृक निवास : वर्तमान निवास:) की वंशावली हमें श्रीमती मधु जी धर्मपत्नी श्री अशोक जी (पुत्र श्री स्व श्री सुवालाल जी) द्वारा ३० नवम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00031			स्व श्री लाला मौजीराम जी (गोत्र: मित्तल परिवार पैतृक निवास : वर्तमान निवास:) की वंशावली हमें श्री उदय जी पुत्र श्री प्रकाश चंद जी द्वारा ११ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00032	खोरी तहसील साहपुरा जिला	कोटा राजस्थान	स्व श्री रामरतन जी जी (गोत्र: मित्तल घीवाला परिवार पैतृक निवास : खोरी तहसील साहपुरा जिला (लगभग 1910 के आसपास खोरी, जयपुर से कोटा आगमन, वर्तमान निवास: कोटा राजस्थान) की वंशावली हमें श्री मुकेश गुप्ता पुत्र श्री मोहन लाल गुप्ता जी द्वारा १५ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00033	आगरा	कोटा	स्व श्री राधेलाल जी (गोत्र: मित्तल जैन परिवार पैतृक निवास: आगरा निवास: कोटा) की वंशावली हमें श्री गोविन्द प्रसाद जैन (मित्तल) द्वारा १५ दिसम्बर २०२३ को प्राप्त हुई।
MI00035	भासारी (अलवर) से भगवतगढ़ फिर भदलाव-श्यामपुरा आ कर रहे फिर कुण्डेरा सवाई माधोपुर रहे	कोटा	मण्डीवाला मित्तल परिवार की वंशावली - मण्डीवाला मित्तल परिवार की दसवीं पीढ़ी के पूर्वज शाह शालिगराम जी, रखावचंद जी का मूल निवास भासारी (अलवर) से भगवतगढ़ फिर भदलाव-श्यामपुरा आ कर रहे फिर कुण्डेरा सवाई माधोपुर रहे साह रामरतन जी के ४ पुत्र हुए उन्होंने ३ हवेलीओं का निर्माण लगभग १५० वर्ष पूर्व करवाया और वही बस गए, यह विस्तृत वंशावली हमे श्री जगदीश प्रसाद मित्तल कोटा से २०२३ में प्राप्त हुई
MI00036	माठ (उत्तरप्रदेश) महावन (उत्तरप्रदेश) सूरोठ टोढाभीम	भुसावर और मथुरा	स्व श्री निर्मल जी (गोत्र: मित्तल तिरखा परिवार पैतृक निवास : माठ (उत्तरप्रदेश) महावन (उत्तरप्रदेश) सूरोठ टोढाभीम भुसावर और मथुरा) की वंशावली हमें श्री विजय कुमार मित्तल जी से २२ अक्तूबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
NA0001	फतेहपुर तहसील: हटा जिला दमोह	जबलपुर	स्व श्री गोरेलाल जी (गोत्र: नागल फतेहपुर तहसील: हटा जिला दमोह, वर्तमान जबलपुर) की वंशावली श्री निखिल अग्रवाल जी द्वारा हमें १८ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
NA0002	दयानतपुर गावं, जिला बुलंदशहर उत्तर प्रदेश	लोनेवाला, पुणे	स्व श्री तिरखाराम जी (गोत्र: नागल दयानतपुर गावं, जिला बुलंदशहर उत्तर प्रदेश) की वंशावली हमें श्री प्रदीप कुमार नागल पुत्र श्री ज्ञान चंद जी (लोनेवाला, पुणे) द्वारा २७ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00001	किल्होड़ा, हापुड़ उत्तर प्रदेश	किल्होड़ा, हापुड़ उत्तर प्रदेश	श्री लाला श्री बनारसी दास जी (सिंघल गोत्र , निवास: किल्होड़ा, हापुड़ उत्तर प्रदेश) की वंशावली
SI00002	लोहिया नगर गाज़ियाबाद	लोहिया नगर गाज़ियाबाद	श्री खचेडूमल सिंघल जी (सिंघल गोत्र वर्तमान लोहिया नगर गाज़ियाबाद) यह श्री संतोष कुमार सिंघल पुत्र श्री रघुबर दयाल जी से प्राप्त हुई
SI00003	सलामपुर (राजस्थान)	देवइया / हैदराबाद	यह लाठ परिवार सिंघल गोत्र (पैतृक निवास: सलामपुर (राजस्थान) की वंशावली श्री बद्री नारायण (देवइया / हैदराबाद) द्वारा हमें १९ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00004	काशी	काशी	बाबू हरिश्चंद्र जी की वंशावली
SI00005	नोहटा (म.प्र.) निवास स्थान: रायपुर (छ.ग.)	नोहटा (म.प्र.) निवास स्थान: रायपुर (छ.ग.)	यह वंशावली हमें श्री दीपक अग्रवाल जी (सिंघल गोत्र) पुत्र श्री धनेश अग्रवाल जी पैतृक स्थान: नोहटा (म.प्र.) निवास स्थान: रायपुर (छ.ग.) से ०५ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
SI00006	हिसार ,हरियाणा	हिसार ,हरियाणा	यह वंशावली सुलतान पुर, जिला हिसार ,हरियाणा से प्रोफ़ेसर सत्य सुरेन्द्र सिंगला द्वारा २१ अगस्त को प्राप्त हुई
SI00007	रोहतक	ईस्ट पंजाबी बाग नई दिल्ली	यह लाला हरलाल सिंघल जी की वंशावली हमें श्री अजय सिंघल जी पुत्र श्री भगवान दास सिंघल जी पैतृक स्थान रोहतक निवास स्थान ईस्ट पंजाबी बाग नई दिल्ली-110026 द्वारा २३ अगस्त २०२२ को प्राप्त हुई , लाला हरलाल सिंघल 1700 वर्ष में गांव किनाना से प्रस्थान करते हुए 1800 में शोमलो से कलानौर पहुंचे।
SI00008	हरसोरा (राजस्थान)	रेवाड़ी	यह श्री माथुरा प्रशाद (सिंघल गोत्र) वंशावली हमें श्री नवीन सिंघल पुत्र श्री बालमुकंद हर्सोरिया जी (पैतृक स्थान: हरसोरा (राजस्थान) निवास स्थान: रेवाड़ी से श्री रवि जिंदल जी द्वारा 6 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
SI00009	बासेड़ा रानी का (मुज्जफनगर)	बासेड़ा रानी का (मुज्जफनगर)	यह श्री छज्जू मल अग्रवाल (सिंघल गोत्र) वंशावली हमें श्री अजय अग्रवाल पुत्र श्री बृजमोहन अग्रवालजी (पैतृक स्थान/ निवास स्थान: बासेड़ा रानी का (मुज्जफनगर) से श्री रवि जिंदल जी द्वारा 6 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
SI00010	मुजफ्फनगर उत्तर प्रदेश	मुजफ्फनगर उत्तर प्रदेश	यह श्री जनार्दन दास अग्रवाल (सिंघल गोत्र) वंशावली हमें श्री संजीव अग्रवाल पुत्र श्री अग्रवाल जी (वर्तमान निवास स्थान: मुजफ्फनगर उत्तर प्रदेश से श्री सुरेश कुमार गोयल जी द्वारा 7 सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
SI00011	बाबेल (पानीपत) हरियाणा	ऊंचा गाँव (कैराना) उत्तर प्रदेश	यह श्री माना मल अग्रवाल जी (सिंघल गोत्र) की वंशावली हमें श्री विकास अग्रवाल जी पुत्र श्री दीपक अग्रवाल जी (मूल निवासी - बाबेल (पानीपत) हरियाणा वर्तमान निवास स्थान: ऊंचा गाँव (कैराना) उत्तर प्रदेश द्वारा १४ सितम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
SI00012	हरसोला गांव कैथल हरियाणा	दिल्ली रोहिणी	यह श्री कपूर चंद जी (सिंघल गोत्र) पैतृक निवास हरसोला गांव कैथल हरियाणा वर्तमान निवास स्थान: दिल्ली रोहिणी की वंशावली श्री नवीन गोयल जी से २ अक्टूबर २०२२ को प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
SI000013	सिराली (Sirali) हरदा ज़िला मध्य प्रदेश राज्य	सिराली (Sirali) हरदा ज़िला मध्य प्रदेश राज्य	यह श्री त्रिलोक चंद्र जी अग्रवाल (पैतृक स्थान - सिराली (Sirali) हरदा ज़िला मध्य प्रदेश राज्य) की वंशावली हमें शिखा अग्रवाल से श्रीमती संजना अग्रवाल द्वारा २६ दिसम्बर २०२२ को प्राप्त हुई
SI00014	मकराना बोरावद नागौर राजस्थान	मालेगांव वाशिम महाराष्ट्र	यह स्वर्गीय श्री कालूरामजी कंदोई जी की वंशावली (सिंघल गोत्र, पैतृक निवास: मकराना बोरावद नागौर राजस्थान, वर्तमान निवास: मालेगांव वाशिम महाराष्ट्र) श्री प्रेमकुमार अग्रवाल (वाशिम महाराष्ट्र) पुत्र श्री गोविंदराम जी अग्रवाल द्वारा १२ फरवरी को प्राप्त हुई।
SI00015	बड़वा गांव	रायगढ़, छत्तीसगढ़	स्व श्री चाचाराम जी अग्रवाल (गोत्र: सिंघल कुटुंबनाम: जगतरामका निवास: बड़वा गांव सती माता: धानी सती माता बीबी सती माता) जी की वंशावली हमें श्री अनंत कुमार जगतरामका पुत्र श्री गणेश कुमार जगतरामका निवासी श्याम टॉकीज रोड रायगढ़, छत्तीसगढ़ द्वारा २६ मई २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00016			यह स्व श्री दयाकिशन जी अग्रवाल (गोत्र: सिंघल परिवार: चौकड़ायत) की वंशावली, श्री दिलीप अग्रवाल जी पुत्र श्री जी द्वारा हमें ३० मई २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00017	पिंनाना, सोनीपत, हरियाणा	कमला नगर, दिल्ली	यह स्व श्री देवाराम जी अग्रवाल (गोत्र: सिंघल परिवार: चौकड़ायत पैतृक निवास:पिंनाना, सोनीपत, हरियाणा , स्थानांतर: कमला नगर, दिल्ली, परिवार का विस्तार: देहली, मुंबई, कोलकत्ता, तिनसुकिआ) की वंशावली, श्री दिनेश गुप्ता पुत्र श्री लालचंद जी द्वारा हमें १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00018	मोतिहारी	भागलपुर	स्व श्री माधव लुंडिया (गोत्र: सिंघल ढांढणिया परिवार पैतृक निवास : मोतिहारी निवास स्थान: भागलपुर) जी की वंशावली हमें श्रीमती राशिका ढांढणिया जी द्वारा १० जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00019			यह स्व श्री मोतीराम बेरीवाल जी अग्रवाल (गोत्र: सिंघल परिवार: बेरीवाल)की वंशावली, श्री सुरेंद्र अग्रवाल जी द्वारा हमें १५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
SI00020	श्री गंगानगर राजस्थान	श्री गंगानगर राजस्थान	श्री हनुमान प्रसाद चनाणी (गोत्र: सिंघल निवास : श्री गंगानगर राजस्थान) जी की वंशावली हमें श्री मनोज कुमार चनाणी पुत्र श्री हनुमान प्रसाद चनाणी ५ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00021			यह स्व श्री हेमराज पंसारी जी (गोत्र: सिंघल, पंसारी परिवार) की वंशावली श्री विष्णु कुमार पुत्र श्री मंगत राम जी पंसारी द्वारा १७ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00022		ग्राम समराया तहसील वैर जिला भरतपुर राजस्थान	यह स्व श्री टोडर मल जी (सिंघल गोत्र निवास स्थान: ग्राम समराया तहसील वैर जिला भरतपुर राजस्थान) की वंशावली श्री वैभव अग्रवाल जी द्वारा हमें ३ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00023	रघुनाथगढ़, सीकर शेखावाटी, राजस्थान	नेर (यवतमाल) महाराष्ट्र)	स्व श्री चाचाराम जी (सिंघल गोत्र खोवाला परिवार पैतृक निवास: रघुनाथगढ़, सीकर शेखावाटी, राजस्थान वर्तमान निवास:नेर (यवतमाल) महाराष्ट्र) की वंशावली प्रकाशक श्री माणिकलाल संकलनकर्ता श्री किशोर अग्रवाल, श्री राजेश अग्रवाल पुत्र श्री बनवारी लाल जी द्वारा हमें १९ फरवरी २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00024			स्व श्री रतनसी दास जी अग्रवाल जी (गोत्र: सिंघल कुटुंबनाम: भावथड़ी वाले पैतृक निवास: भावठड़ी गांव (निकट सादुलपुर) वर्तमान निवास: सिलीगुड़ी पश्चिम बंगाल(सं १९५५ से) की वंशावली हमें श्री मुरारीलाल पुत्र श्री भीष्म चंद द्वारा २३ जून २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00025	सुरजगढ / चिड़ावा	विशाखापत्तनम	स्व श्री प्रमेश्वर लालजी जी (गोत्र: सिंघल पैतृक: सुरजगढ / चिड़ावा वर्तमान निवास: विशाखापत्तनम) की वंशावली श्री जे पी अग्रवाल द्वारा २३ जून २०२३ को प्राप्त हुई
SI00026	रामपुर जिला जींद	जींद	स्व श्री भूरामल जी (गोत्र: सिंघल पैतृक: रामपुर जिला जींद वर्तमान निवास: जींद) की वंशावली चौधरी बृंदावन कानूनगो द्वारा लिखित पुस्तक "अग्रवालो का इतिहास" से प्राप्त हुई

|| वंशावली सूची ||

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
SI00027	जींद	जींद	स्व श्री जीवनामल जी (गोत्र: सिंघल वर्तमान निवास: जींद) की वंशावली श्री महेश कुमार सिंघल जी पुत्र श्री राम प्रताप सिंघल द्वारा २० जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई
SI00028	सिरोही (नीम का थाना) सीकर जिला, राजस्थान	पुणे महाराष्ट्र)	स्व श्री करणी राम जी (गोत्र: सिंघल वर्तमान निवास: सिरोही (नीम का थाना) सीकर जिला, राजस्थान वर्तमान: पुणे महाराष्ट्र) की वंशावली श्री अनिल अग्रवाल पुत्र श्री राम अवतार जी द्वारा २ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई
SI00029	कावत,सीकर	हावड़ा, पश्चिम बंगाल	स्वर्गीय श्री धनराज जी (गोत्र: सिंघल पैतृक स्थान: कावत,सीकर वर्तमान निवास: हावड़ा, पश्चिम बंगाल) की वंशावली श्री शंभु अग्रवाल पुत्र स्वर्गीय श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल (कुशातरा) जी द्वारा ३ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई
SI00030	गांव सिवाह,पानीपत, हरियाणा		यह स्व श्री सदनमल जी (सिंघल गोत्र निवास स्थान: गांव सिवाह,पानीपत, हरियाणा) की वंशावली श्री नरेश कुमार सिंघल पुत्र श्री भगत राम जी द्वारा हमें ३ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00031			यह स्व श्री मनसाराम जी (सिंघल गोत्र नवेटिया परिवार) की वंशावली श्री लक्ष्मण नवेटिया द्वारा हमें २८ जुलाई २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00032	बासनी,राजस्थान	कलकत्ता	स्व श्रीजगन्नाथ जी डाँड़निया (सिंघल गोत्र वासनिवाल परिवार पैतृक स्थान: बासनी,राजस्थान वर्तमान निवास स्थान: कलकत्ता) की वंशावली श्री पवन के वासनिवाल पुत्र श्री पन्नालालजी बासनिवाल द्वारा हमें ८ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।
SI00033		टीकरा पारा, बिलासपुर, छतीसगढ	स्व श्री रतिराम जी (सिंघल गोत्र वर्तमान निवास स्थान: टीकरा पारा, बिलासपुर, छतीसगढ) की वंशावली श्री संतोष अग्रवाल पुत्र श्री राम निवास जी द्वारा हमें ८ दिसंबर २०२३ को प्राप्त हुई।

।। वंशावली सूची ।।

कुल - क्रमांक	पैतृक स्थान	वर्तमान स्थल	विवरण
TASP001	झज्जर हरयाणा	गांव चौराली	यह स्वर्गीय श्री बालूशाह जी की वंशावली (तायल गोत्र सेढ्ढ परिवार पैतृक निवास: झज्जर हरयाणा , रन्हेरा बुलंदशहर वर्तमान: गांव चौराली) श्री दिनेश बंसल द्वारा पुस्तक 'सेढ्ढ परिवार की वंशावली' (प्रकाशन तिथि ०७ दिसंबर २००३) से ली गयी है
TA00001	ग्राम असमोली, जिला संभल, उत्तर प्रदेश	महरौली, न्यू दिल्ली	यह स्वर्गीय श्री बंसीधर अग्रवाल जी की वंशावली (तायल गोत्र, पैतृक निवास: ग्राम असमोली, जिला संभल, उत्तर प्रदेश वर्तमान निवास: महरौली, न्यू दिल्ली) श्री जे के अग्रवाल पुत्र श्री भगवानदास अग्रवाल द्वारा ५ फ़रवरी को प्राप्त हुई।
TA00002	ग्वालियर (म.प्र.)	भोपाल	यह श्री फूलचंद जी अग्रवाल जी (गोत्र तायल पैतृक निवास: ग्वालियर (म.प्र.), वर्तमान निवास:भोपाल) जी की वंशावली हमे श्री नरेश चंद्र तायल जी पुत्र श्री शिव प्रसाद अग्रवाल से फरवरी २०२३ में प्राप्त हुई।

।। अग्रवालों के कुटुंबनाम।।

अग्रवालों के कुटुंबनाम भी अन्य भारतीय पारिवारिक नाम के अनुसार ही अनेक प्रकार की जटिल प्रणालियों व नामकरण पद्धतियों पर आधारित हैं जो किसी कुटुंब के निवास स्थान, निकास स्थान अथवा विस्थापन स्थान के आधार पर, व्यक्ति के पद, व्यवसाय या धार्मिक आस्था पर आधारित होते हैं।

किसी भी व्यक्ति का पूरा नाम प्रायः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है - औपचारिक नाम, मध्य भाग और पारिवारिक नाम। नाम का प्रथम भाग अर्थात औपचारिक नाम- नाम का वह भाग है जो व्यक्तिगत सम्बोधन के लिए प्रयुक्त होता है। यह प्रायः जन्म के पश्चात नामकरण के समय दिया जाता है, सनातन मान्यता में जन्म का नाम किसी ऐसे वर्ण से प्रारंभ होता है, जो उस व्यक्ति की जन्म-कुंडली के आधार पर उसके लिये शुभ हो। अथवा यह परिवार के किसी बुजुर्ग व्यक्ति, माता या पिता द्वारा अथवा कुलगुरु के द्वारा उचित लक्षण देख कर दिया जाता है यह भाग व्यक्तिगत होता है जो किसी व्यक्ति के नाम को जाति, कुल या पारिवारिक नाम से जुड़कर विशिष्टता प्रदान करता है। विद्वान इस बात से सहमत हैं कि व्यक्तिगत नामों का उपयोग मानव विकास के अत्यंत प्रारंभिक काल में हुआ।

नाम का मध्य भाग - यह एक ऐच्छिक भाग है। यह कई प्रकार का होता है जैसे कि

(१) औपचारिक नाम का पूरक - उदाहरण शत्रुघ्न यहाँ 'घ्न' शब्द शत्रु का पूरक है अन्य उदाहरण - आनंद प्रकश, हर्ष वर्धन।

(२) तटस्थ नाम - जाति-आधारित भेद-भाव के कारण या जाति के प्रति तटस्थ रहने के लिये, कई लोगों ने मध्य नाम कुमार, लाल आदि का प्रयोग करते हैं जैसे राम कुमार, मोहन लाल।

(३) पिता का नाम - कुछ प्रांतों में मध्य भाग में पिता का औपचारिक नाम का प्रयोग होता है।

तीसरा भाग कुटुंबनाम- नाम का यह भाग जिसे पारिवारिक नाम भी कहा जाता है। आमतौर पर कुटुंबनाम/पारिवारिक नाम, नाम के अंत में प्रयोग किया जाता है, जो किसी व्यक्ति को विरासत में मिला होता है, कुटुंब और परिवार के सभी सदस्यों द्वारा प्रयोग किया जाता है। नामों का क्रम किन्ही-किन्ही स्थानों पर भिन्न हो सकता है।

पारिवारिक नाम, किसी व्यक्ति के कुल का सूचक होता है इसका प्रयोग प्रायः जातियों की पहचान के लिये किया जाता है। कुछ संस्कृतियों में, कुटुंबनाम, परिवार का नाम, या अंतिम नाम, व्यक्ति के व्यक्तिगत नाम का वह भाग होता है जो किसी के परिवार, जाति या समुदाय को इंगित करता है। प्राचीन काल से ही कुटुंबनाम अलिखित-लिखित रूप में अस्तित्व में रहा है जैसे प्रभु श्री राम का वंश रघुकुल कहलाता था

पारिवारिक नाम को प्रायः शिष्टता पूर्वक कभी-कभी प्रथम नाम की तरह भी उपयोग किया जाता है जैसे गुप्ता जी, अग्रवाल जी आदि।

अन्य वर्गों की भांति अग्रवाल समाज के विभिन्न परिवार भी अपने गोत्र के साथ-साथ अपने निवास स्थान, अपने कुल के प्रसिद्ध पुरुष के नाम, व्यवसाय, पद अथवा धार्मिक आस्था सूचक नामों से पहचाने जाने लगे और समय के साथ उन परिवारों ने इन्हीं सूचक नामों को अपने कुटुंबनाम की भांति प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया ये कुटुंबनाम (व्योम, अल्ल, बंक, फांक, सम्बोधन आदि) उन परिवारों की विशिष्टता पर आधारित थे जैसे कि उद्गम स्थान, निकास स्थान, विस्थापन स्थान, पद, व्यवसाय इत्यादि।

कुछ कुटुंबनामों में समय-समय पर कुछ बदलाव भी हुए हैं। कुछ नामों के अर्थ अभी भी अज्ञात और अस्पष्ट हैं। इस प्रकार वर्गीकरण की कई और श्रेणियाँ इसमें जोड़ी जा सकती हैं। समय के साथ, उत्प्रवास और विस्थापन के साथ वर्तनी और उच्चारण बदलने के साथ, कुटुंबनामों में भी कई परिवर्तन हुए हैं, कदाचित आपके संज्ञान में कोई भी वंशावली अथवा कुटुंब नाम से सम्बंधित कोई भी जानकारी आये तो हमसे अवश्य साझा करें।

हमारी महान सनातनी परम्परा में विज्ञान आधारित गोत्र परम्परा प्रारंभ से रही है सभी अपनी गोत्र परम्परा का पूर्ण ज्ञान रखते थे, व्यक्ति को कर्मों को चुनने की स्वतंत्रता थी सभी जातियों में सामान गोत्र हुआ करते थे क्योंकि सभी सनातन कुलों के आदि पुरुष हमारे ऋषि ही थे, विवाह के लिए अपने गोत्र से अलग गोत्र में विवाह का प्रावधान था किन्तु जातीय बंधन न था कोई व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से कोई भी कार्य चुनने के लिए स्वतंत्र था। समय के साथ-साथ, समाज में पीढ़ी उपरांत पीढ़ी में पुत्र द्वारा पिता के व्यवसाय को चुनने से समाज में जातियों का उद्भव हुआ किन्तु एक जाति के व्यक्ति द्वारा अन्य जाति के कार्य को अपनाने के असंख्य उदाहरण हमारी पुस्तकों में वर्णित हैं।

।। अग्रवाल कुटुंबनामों का वर्गीकरण ।।

अग्रवालों में विभिन्न जाति सूचक नामों और गोत्रो के साथ अन्य सहस्त्रों व्योम, अल्ल, बँक, अटक, शाखा और उपनाम का भी प्रयोग किया किया जाता है। यह कुटुंबनाम अग्रवालों के व्यवसाय, स्थान, वंश, आदि के भेद से उत्पन्न हुए हैं और इनका अपना समग्र और विस्तृत इतिहास है। इस भाग में उन्हीं कारकों के आधार अग्रवालों के विभिन्न कुटुंबनामों का वर्गीकरण, गोत्र, मूलस्थान, अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी सती माता आदि विवरण दिया है।

कुटुंबनाम का वर्गीकरण

कुटुंबनाम का निम्नलिखित वर्गीकरण (अल्ल, बंक, फांक आदि) परिवारों की विशिष्टता पर आधारित है जैसे- परिवार के उद्गम स्थान, निकास स्थान, विस्थापन स्थान, पद, व्यवसाय अथवा उनके परिवार में हुए प्रसिद्ध पुरुष इत्यादि।

वर्ण/जाति आधारित कुटुंबनाम

वर्ण/जाति आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपनी वर्ण अथवा जाति का नाम अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है।

उदाहरण: गुप्त (अपभ्रंश: गुप्ता), वैश्य, अग्रवाल, (अपभ्रंश : अग्रवाला, अगरवाला) अग्रवंशी, अग्रकुल, अग्रहरि, सेठ, साहू इत्यादि।

कुटुंबपुरुष आधारित कुटुंबनाम

अग्रवाल परिवारों में अनेको व्यक्तियों ने अपने वंश में विशेष नाम और ख्याति प्राप्त की, जिससे उन्हीं के नाम से उनका वंश प्रसिद्ध हो गया तथा परिवार के लोग उनका नाम कुटुंबनाम के रूप में प्रयोग करने लगे। कुटुंबपुरुष आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपने कुलपुरुष का नाम अपने पारिवारिक नाम की तरह प्रयोग करता है। यहाँ विशेष बात यह है कि जहाँ पूर्वजों के नाम पर कुटुंबनाम चलता है वहाँ उस से सम्बंधित परिवार का गोत्र एक ही होता है।

उदाहरण: कहनानी, तनमुखरामका, राजारामका, संतरामजीका, हिम्मतसिंहका, मानसिंहका, हरलालका, टिकमाणी, भावसिंहका होल्लमल इत्यादि।

स्थान आधारित कुटुंबनाम

अनेक अग्रवाल अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्यत्र बस गये, किंतु मूल स्थान से संबंध बनाये रखने के लिये, उस स्थान का प्रयोग अपने नाम के साथ करने लगे। स्थान आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब निवास/प्रवास/विस्थापन स्थान के नाम या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है। प्राय: स्थान आधारित कुटुंबनाम, व्यक्ति से जुड़े स्थान से सम्बंधित होते हैं। इस तरह के स्थान किसी भी प्रकार की गांव/नगर आदि जहाँ व्यक्ति का घर, खेत कार्य या व्यवसाय हो। कुछ अग्रवालों ने अपने निकास स्थान गाँव अथवा नगर के नाम से अपने कुटुंबनाम रखे हैं।

उदाहरण: कानोडिया, कासलीवाल, केजड़ीवाल, केडिया, गनेरीवाल, गाड़ोदिया, झुनझुनवाला, टीबड़ेवाल, डालमिया, तोदी, हलवासिया, धानुका, जयपुरयिा, हिसारिया, केड, केड़िया इत्यादि।

व्यवसाय आधारित कुटुंबनाम

व्यवसाय आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपने व्यवसाय का नाम या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है। पूर्व काल में जिस कार्य से जिस परिवार को जिस कार्य के लिए प्रसिद्ध था उस परिवार ने उसी व्यवसाय को अपने कुटुंबनाम की तरह प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

उदाहरण: पंसारी, पोद्दार, बजाज, लोहिया, सराफ, घीवाला, बाल्टीवाला, कसेरा, कंदोई, जौहरी, कोड़ीवाले इत्यादि।

पद आधारित कुटुंबनाम

पद आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपने पद का नाम या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है।

उदाहरण: कानुनगो, ख़ज़ांची, पोद्दार, पटवारी, सेठ, चौधरी, रत्नाकर, भारतेंदु, नंबरदार इत्यादि।

पदवी आधारित कुटुंबनाम

पदवी आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब राजा या प्रश्न से प्राप्त पदवी/सम्मान आदि का नाम या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है।

उदाहरण: राय, रईस इत्यादि।

आस्था आधारित कुटुंबनाम

आस्था आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपनी धार्मिक श्रद्धा के आधार पर अपने इष्ट देव/देवी/धार्मिक गुरु/धार्मिक स्थान के नाम का या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है, इस प्रकार के कुटुंबनाम के गोत्र का अनुमान लगाना कठिन है। इस प्रकार के एक से कुटुंबनाम प्राय: कई समुदायों में पाए जाते हैं।

उदाहरण: दादू, जैन, आर्य इत्यादि।

प्रथा आधारित कुटुंबनाम

प्रथा आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब किसी विशेष प्रथा के कारण प्रसिद्ध होने पर उसी प्रथा को आधार मान या उसमें कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है, इस प्रकार के एक से कुटुंबनाम प्राय: कई समुदायों में पाए जाते हैं।

उदाहरण: गिंदोड़िया इत्यादि।

घटना आधारित कुटुंबनाम

घटना आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब किसी विशेष घटना अथवा परिस्थितियों के आधार के कारण प्रसिद्ध होने से, उसी घटना को या उसमे कुछ संशोधन कर उसे अपने कुटुंबनाम के लिए प्रयोग करता है।

उदाहरण: टांटिया, सूगला, चिड़ीपाल, मोर इत्यादि।

स्वभाव विशेषता आधारित कुटुंबनाम

स्वभावगत विशेषता के आधार पर कई पारिवारिक नामों का प्रचलन उनके परिवार की स्वभावगत विशेषता के कारण भी हो गया।

उदाहरण: मजाकिया स्वभाव के कारण मसखरा, असम में बनिये को अति चतुर स्वभाव के कारण काईया, भक्ति स्वभाव के कारण भगत इत्यादि।

आकृति आधारित कुटुंबनाम

समाज में कुछ पुरुष अपनी कुछ विशेष आकृति/बनावट होने के कारण भी विख्यात हुए, इन कुटुंबनाम का प्रचलन उन पुरुषों की विशेष आकृति के कारण माना गया।

उदहारण: भूत कुटुंबनाम उस कुटुंब में सदस्यों की भूतनुमा आकृति के कारण प्रचलित हुआ।

कुछ कुटुंबनाम का गुणों के आधार पर वर्गीकरण किया गया जैसे - बीसा, दस्सा, पंजा आदि किन्तु समय के साथ उसका कोई औचित्य नहीं रहा है और इस प्रकार के कुटुंबनामों का प्रयोग नगण्य है।

।। गोत्र आधारित कुटुंबनाम ।।

हमारी महान वैदिक संस्कृति में किसी व्यक्ति का परिचय उसके गोत्र, प्रवर, वेद, उपवेद, शाखा, सूत्र, छन्द, शिखा, पाद, देव, द्वार आदि एकादश बिंदुओं से होता हैं जिन्हें एकादश परिचय भी कहा जाता है। इस विधि से सभी जनों को उनके मूल का ज्ञान रहता था और इनका उपयोग सभी धार्मिक और सामाजिक कार्यों में संकल्प के समय किया जाता था।

1 गोत्र- गोत्र का आशय उस ऋषि परंपरा से है जिससे व्यक्ति अपने वंश की उत्पत्ति मानता है। वैदिक ज्ञान प्राचीन वैज्ञानिक ऋषियों को ध्यानावस्था में प्राप्त हुआ। उन ऋषियों की संतानें अथवा उनके शिष्य उस ऋषि परंपरा के माने गए। यह ऋषि परंपरा ही गोत्र है। गोत्र के कई अर्थ हैं- 'गो' का अर्थ है गुण सूत्र और 'त्र' का अर्थ है रक्षा करना।

प्राचीन काल में मात्र चार ही गोत्र थे कालांतर में वे सात हो गए। जो इस प्रकार हैं- वशिष्ठ, विश्वमित्र, भारद्वाज, कश्यप, गौतम, अत्रि, और जमदग्नि। विष्णु पुराण में इन्हें सप्त-ऋषि कहा गया है। इन्हीं के नाम पर सात नक्षत्रों के समूह को सप्त ऋषि मंडल भी कहा गया है।

विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतम:।

अत्रिवर्सष्ठि: कश्यपइत्येतेसप्तर्षय:॥

सप्तानामृषी-णामगस्त्याष्टमानां

यदपत्यं तदोत्रामित्युच्यते॥

विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप- इन सप्तऋषियों और आठवें ऋषि अगस्त्य की संतान गोत्र कहलाती है। कालांतर में अनेक और मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुए जिनसे अन्य गोत्र अस्तित्व में आये।

2. प्रवर- प्रवर शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। अर्थात उस कुल में ऐसे कौन से श्रेष्ठजन हुए हैं जो कुल प्रवर्तक बने, जिन्होंने आचरण के लिए कुछ नियम दिए अथवा वे वेद मंत्र के दृष्टा ऋषि हुए, प्रवर के आधार पर जनेऊ के धागों का निर्धारण होता है। पांच धागों से निर्मित जनेऊ धारण करने वाले पंचप्रवर और तीन धागों वाले जनेऊ धारण करने वाले त्रिप्रवर कहलाये।

आपस्तंब आदि ऋषि के मत से सभी गोत्रों के तीन प्रवर होते हैं।

त्रीन्वृणीते मंत्राकृतोवृणीते॥ 7॥

अथैकेषामेकं वृणीते द्वौवृणीते त्रीन्वृणीते न चतुरोवृणीते न

पंचातिवृणीते॥ 8॥

वैश्यों के भी तीन मंत्रद्रष्टा ऋषि हुए, भलंदर, प्रांशु और संकील (मंकील), अतः वैश्य त्रिप्रवर हुए।

3. वेद- विषय में दक्षता और उच्च कोटि की विशिष्टता के लिए गोत्रों के लिए वेदों की शाखाओं का निर्धारण किया गया, गोत्र प्रवर्तक ऋषि जिस वेद का चिन्तन, व्याख्यादि के अध्ययन एवं वंशानुगत निरन्तरता पढ़ने की प्रेरणा अपने वंशजों को देता है, उस गोत्र का वही वेद माना जाता है। वेद का अभिप्राय यह है कि उस गोत्र के ऋषि ने उसी वेद के पठन-पाठन या प्रचार में विशेष ध्यान दिया और उस गोत्रवाले प्रधानतया उसी वेद का अध्ययन और उसमें कहे गए कर्मों का अनुष्ठान करते आए हैं। चार वेद इस प्रकार हैं-यजुर्वेद, सामवेद, ऋग्वेद, अथर्ववेद।

4. उपवेद- वेदों के विस्तार और कलाकौशल का प्रचार कर संसार की सामाजिक उन्नति का मार्ग बतलाने वाले शास्त्र का नाम उपवेद है। उपवेद सब विद्याओं का संग्रह कहा जाता है, यह वेदों से ही निकले होते हैं। जैसे - धनुर्वेद (वेद: यजुर्वेद ऋषि: विश्वामित्र), गन्धर्ववेद (वेद: ऋषि: भरतमुनि), आयुर्वेद(वेद:ऋग्वेद ऋषि: धन्वंतरि), स्थापत्य (वेद: अथर्ववेद ऋषि: विश्वकर्मा), हर गोत्र का अपना अलग अलग उपवेद होता है।

5. शाखा - वेदों का ज्ञान बहुत विस्तृत है। चारों वेदों की लगभग 1131 शाखाएँ प्राप्य हैं इसलिए महर्षियों ने विषय में विशिष्टा के लिए प्रत्येक गोत्र के लिए वेद की शाखा का निर्धारण किया। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी वेद शाखा का ज्ञान होना चाहिए।

6.सूत्र - ऋषियों की शिक्षाओं को सूत्र कहा जाता है। वेदों की शाखाओं को सूत्र रूप में विभाजित किया है, जिसके माध्यम से उस शाखा में प्रवाहमान ज्ञान व संस्कृति को कोई क्षति न हो और ज्ञान अक्षुण्ण रहे, उन वेदानुकुल संस्कारी कर्मों का वर्णन और विधि बतलाने वाले ग्रन्थ ऋषियों ने सूत्र रूप में लिखे हैं और वे ग्रन्थ भिन्न-भिन्न गोत्रों के लिए निर्धारित वेदों के भिन्न-भिन्न सूत्र ग्रन्थ हैं। प्रत्येक वेद का अपना सूत्र है।

सामाजिक, नैतिक तथा शास्त्रानुकुल नियमों वाले सूत्रों को धर्म सूत्र कहते हैं आनुष्ठानिक वालों को श्रौत सूत्र तथा विधिशास्त्रों की व्याख्या गृह् सूत्र कहा जाता है। ऋषियों ने विभिन्न गोत्रों के लिए वैदिक सूत्र निर्धारित किये ताकि वे सूत्रों का विस्तृत अध्ययन कर सकें। उदाहरण पारस्कर सूत्र, बौधायन सूत्र, ब्रह्म सूत्र, कात्यान सूत्र, गोभिल सूत्र आदि।

7. छन्द - वेदों के मंत्रों में प्रयुक्त श्लोकों में मात्राओं की संख्या और उनके उच्चारणों (लघु-गुरु) के क्रमों के समूहों को छंद कहते हैं - वेदों में अनेको प्रकार के छंद प्रयुक्त हुए हैं।

अत्यष्टि, अतिजगती, अतिशक्करी, अनुष्टुप, अष्टि, उष्णिक्, एकपदा विराट (दशाक्षरा), गायत्री, जगती, त्रिषटुप, द्विपदा विराट, धृति, पंक्ति, प्रगाथ, प्रस्तार, बृहती, महाबृहती, विराट और शक्करी इत्यादि प्रत्येक गोत्र का एक परम्परागत छंद है।

8.शिखा और जनेऊ- प्रत्येक पुरुष के मुंडन संस्कार के समय सिर पर शिखा/चोटी रखना एक सनातनी परम्परा है। अपनी कुल परम्परा के अनुरूप शिखा को दक्षिणावर्त अथवा वामावार्त्त रूप से बांधने की परम्परा शिखा कहलाती है। शिखा में ग्रंथि बाईं ओर अथवा दाहिनी ओर तरफ घुमा कर देने नियम था जो किसी व्यक्ति का गोत्र निरूपित करने में सहायक होता है। सामवेदियों की बाईं शिखा और यजुर्वेदियों की दाहिनी शिखा कही गयी है।

इसी प्रकार जो लोग वैदिक नियम धर्म का पालन कर जनेऊ धारण करते थे, जनेऊ के धागों की गणना से उस कुल के प्रवर का ज्ञान हो जाता है। जनेऊ पर लगने वाली ब्रह्म गांठ में कितनी गांठें लगाई जा रही हैं उससे भी व्यक्ति के वंश के बारे में ज्ञात होता है। वैश्य कुल में ३ प्रवर हुए हैं अतः अग्र कुल के व्यक्ति ३ धागे वाला जनेऊ धारण कर सकते हैं। शिखा और ब्रह्म गांठ के बारे के शोध शेष है।

9.पाद- अपने-अपने गोत्रानुसार लोग अपना पाद प्रक्षालन करते हैं। यह एक पहचान बनाने के लिए बनाया गया नियम है। अपने-अपने गोत्र के अनुसार लोग पहले अपना बायाँ पैर या दायाँ पैर धोते हैं, सामवेदियों का बायाँ पाद और इसी प्रकार यजुर्वेदियों की दाहिना पाद माना जाता है।

10. देवता- प्रत्येक कुल का देवता भी निर्धारित होता था। कुल देवता, स्थान देवता, इष्ट देवता कुल की रीति के अनुसार पूजे जाते रहे हैं। उदाहरण विष्णु भगवान, कृष्ण भगवान, अग्नि देवता, समस्त अग्रवालों की कुल देवी महालक्ष्मी देवी हैं।

कुटुम्बों में सतियों, ऊतकों और पितरों का भी पूजन विधि विधान से किया जाता है। प्रत्येक वेद या शाखा का पठन, पाठन करने वाले किसी विशेष देव की आराधना करते हैं वही उनके कुल देवता (गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य इत्यादि पञ्च देवों में से कोई एक) उनके आराध्य देव है। इसी प्रकार कुल के भी संरक्षक देवता या कुलदेवी होती हैं। इनका ज्ञान कुल के वयोवृद्ध अग्रजों (माता-पिता आदि) के द्वारा अगली पीढ़ी को दिया जाता है।

11. द्वार- यज्ञ मण्डप में अध्वर्यु (यज्ञकर्त्ता) जिस दिशा अथवा द्वार से प्रवेश करता है अथवा जिस दिशा में बैठता है, वही उस गोत्र वालों की द्वार होता है। यज्ञ मंडप तैयार करने की कुल 39 विधाएं हैं और हर गोत्र के व्यक्ति के प्रवेश के लिए अलग द्वार होता है।

धार्मिक कार्यों में एकादश परिचय का बहुत अधिक महत्व होता है। विवाह संस्कार के अवसर पर वंश परंपरा परिचय का विशेष महत्व है। कन्या और वर पक्ष के पुरोहित मंगलाचरण के साथ और संकल्प के समय गोत्र आदि का विवरण उच्चारित किया जाता है। यह परंपरा अभी भी व्यवहार में है।

गोत्र आधारित कुटुंबनाम में कुटुंब अपने गोत्र का प्रयोग करता है। अग्रवालों की कुलदेवी माता महालक्ष्मी की कृपा से महाराज श्री अग्रसेन के अपने पुत्रों के साथ-साथ १८ यज्ञ किये और यज्ञों में बैठे १८ गुरुओं के नाम पर ही अग्रवाल समाज में १८ गोत्रों की स्थापना हुई और उसी आधार पर महाराज अग्रसेन ने अग्रोहा के गणतंत्र राज्य की स्थापना की। अग्रोहा में 18 राज्य इकाइयाँ सम्मिलित थीं।

गोत्र विचार- महाराज अग्रसेन द्वारा बनाए गए नियम और सनातन संस्कारों के अनुसार एक ही गोत्र में विवाह एक नूतन गठबंधन नहीं हो सकता है। अन्तः स्वगोत्रीय विवाह शास्त्र सम्मत नहीं माना गया है व्याकरण के जनक पाणिनि ने प्रयोजनों के लिये में गोत्र की परिभाषा कुछ इस प्रकार प्रस्तुत की है 'अपात्यम पौत्रप्रभ्रति गोत्रम्' (४.१.१६२), अर्थात गोत्र शब्द का अर्थ है कि पुत्र के पुत्र के साथ शुरू होने वाली संतान्। गोत्र, कुल या वंश की संज्ञा है जो उसकी ७ पीढ़ी तक चलती है, मनुस्मृति के अनुसार भी सात पीढ़ी बाद प्रभाव समाप्त हो जाता है अर्थात सात पीढ़ी बाद गोत्र का मान बदल जाता है और आठवी पीढ़ी का पुरुष का ८ पीढ़ी पूर्व अलग हुए वंश की कन्या से विवाह शास्त्रों में उचित है। किंतु गोत्र की गणना का सही पता न होने के कारण अज्ञानतावश सनातन लोग भ्रमित हैं और सहस्त्रों वर्ष प्राचीन पूर्वजों के नाम का प्रयोग कर विवाह आदि सम्बन्ध में कर रहे हैं इसमें समाज के गुणी वर्ग को आगे आना चाहिए और भ्रांति दूर करनी चाहिए ।

अग्रवाल समाज के १८ गोत्र निम्नलिखित हैं। गर्ग, गोयल, गोयन, मित्तल, बंसल, जिंदल, कुच्छल, तायल, मधुकुल, तिंगल, बिंदल, धारण, ऐरण, मंगल, भंदल, नागल, सिंघल, तायल (पूर्ण जानकारी के लिए अग्रवाल कुटुंबनामों का विवरण देखिये।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: ऐरन (Airan)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: एरन, एरण, इन्दल, एयरन, एरोन, Airan, Aeron

ऋषि: अत्रि (Atri)/औौर्वा(Aaurva)

गोत्रपति: इन्द्रमल (Indramal)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: ऐरन एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

इस गोत्र में सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता मेठ जमनालाल बजाज, कमलनयन बजाज, राहुल बजाज, श्री प्रताप जी सेट अमलनेर, रायरामप्रताप आली. राजा इन्दमन, राजा ख्यालीराम बहादुर, राजा पटनीमल, प्रवीणचन्द्र एरण, रायकृष्णादास, सीताराम राय, गोविन्दचंद जैसे अनेक यशस्वी व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने अपने कार्यों द्वारा अग्रवाल समाज को गौरवान्वित किया है।

डीग में दिल्ली रोड पर ऐरन गोत्री अग्रवाल परिवार (कुंडा वालों कुटुंबनाम से के नाम से जाना जाता है) ने एक विशाल कुंडा का निर्माण सम्वत १८३३ में करवाया था जिसमें आज भी आस-पास के गांव के लोग नहाने और पीने के लिए पानी लेने आते है

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: ऐरन (Airan)

पृष्ठ: 2

आली (Aali)

आलमाल (Aalmal)

आलवाले (Aalwale)

अमलनेर (Amalner)

बड़ेगांववाला (Badegavwala)

बैराठी (Bairathi)

बजाज (Bajaj)

बांववाले (Banvwale)

बराजलवाला (Barajalwala)

बैरती (Barati)

बेरीवाल (Beriwal)

भादहला (Bhadahala)

भागेरिया (Bhageriya)

भालोटिया (Bhalotiya)

बुधासिया (Budhasia)

चवसरिया (Chavsariya)

छपरिया (Chhaparia)

चिरालिया (Chiralia)

चिरानिया (Chirania)

चिरमिया (Chirmiya)

डीगवाले (Deegwale)

धचरमिया (Dhacharamiya)

ढंढारिया (Dhandariya)

ढवारिया (Dhavariya)

गुजरवासिया (Gujaravasia)

हरभजनका (Harbhajanka)

इन्दमन (Indman)

इटरावाल (Itarawal)

इटावावाले (Itawawale)

इटावावाला (itwawala)

झाजरिया (Jhaajariya)

कायना (Kaayna)

काहनोरिया (Kahnoria)

काईया (Kaiya)

कसेरा (Kasera)

कयाल (Kayal)

कयाण (Kayan)

केडिया (Kedia)

कुंडावाला (Kindawala)

मोरीजवाला (Morijwala)

मुंशी (Munshi)

नाहड़िया (Nahadiya)

नहडिया (Nahdiya)

नासिकवाले (Nasikwale)

राय (Rai)

साहा (Saha)

सहरिया (Sahariya)

साय (Say)

सेदपुरिया (Sedpuria)

सेठप्रतापजीका

(Sethpratapjika)

सेठपुरिया (Sethpuriya)

शाह (Shah)

सोमका (Somka)

सोनका (Sonaka)

सोंथालिया (Sonthaliya)

उणियारावाले (Uniyarawale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: . बंसल (Bansal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: बांसल, बांसिल

ऋषि: वत्स्य (Vatsya)/Vishist/ Vats

गोत्रपति: वीरभान (Virbhan)

वेद (Veda): सामवेद: (Samaveda)

शाखा (Branch): कौथमी (Kouthmi)/कौथमी(Kauttham)

सूत्र (Sutra): गोभिल (Gobhil)

विवरण: बंसल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। इस गोत्र के लोग प्रायः पूरे भारत में फैले हुए हैं इस गोत्र में भी अनेक बड़े-बड़े प्रतिष्ठित महानुभाव हुए हैं, जिन्होंने अपने यशस्वी कार्यों से समाज का नाम ऊँचा किया हैं। इसी गोत्र ने देश को रामनाथ पोद्दार, रामप्रसाद पोदार, रामनारायण रूइया, सरजमल जालान ताराचंद घनश्यामदास, हनुमान प्रसाद धानुका जैसे उद्योगपति और ईश्वरदास जालान, विमल जालान, डॉ. सत्यकेत विद्यालंकार, शिवचंद भरतिया, हनुमान प्रसाद पोदार, घनश्यामदास जालान, सूरजमल झंझनवाला, घनश्यामदास जयनारायण पोद्दार, रामेश्वर टाटिया, गिरीश साँधी, देवकीनंदन जटिया, पवन बंसल, मुरली देवड़ा, जैसे महान समाज सेवी, राजनीतिक, अर्थशास्त्री, साहित्यकार, धर्मपरायण व्यक्तित्व, सांसद, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के सूत्रधार कलाविद सुयोग्य नेता एवं प्रशासक देश को प्रदान किए हैं, जो पूरे समाज के ही नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र के भी गौरव हैं ।

बंसल गोत्र आधरित कुटुंब नाम -

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: . बंसल (Bansal)

पृष्ठ: 2

अड़ूकिया (Adukiya)	बुधिया (Budhiya)	चोमूवाला (Chomuwala)
बाँसवाला (baanswala)	बुराना (Burana)	चूड़ीवाल (Chudiwal)
बाड़ेसिया (Badesiya)	भूवाना (Buwana)	कूटपीवाले (Cutpeewale)
बदूका (Badooka)	चाचाण (Chachan)	दादरी वाले (Dadriwale)
बदुका (Baduka)	चौधरी (Chaudhary)	डाकीडा (dakida)
बगियावाले (Bagiyawale)	चौधरी (Chaudhary)	डाकिया (Dakiya)7
बैराग्डा (Bairagda)	चौखानी (Chaukhani)	दानी (Dani)
बजाज (Bajaj)	चेजन्दका (Chejandaka)	दारूका (Daruka)
बांसवाल (Banswal)	चेनावत (chenawat)	डग्ला (Degla)
बैरागदा (Baragada)	चेनकदीका (Chenkdika)	देर्ड़ा (Derda)
बेरगढ़ा (Bergada)	चेतार्त (Chetart)	देवड़ा (Devada)
बेरोवाड़ा (Berowada)	चिड़ावावाले (Chidawawale)	धचड़ारावाल (Dhachadarawal)
भागेर (Bhager)	चिडिपाल (Chidimaar)	ढ़हरखानवाल (Dhaharakhanaval)
भज्जिका (Bhajjika)	चिड़ियावाले (Chidiyawale)	ढ़हम्मतरामका (Dhahmmatramaka)
भारतिया (Bharatiya)	चिग्निवाले (Chigniwale)	धम्मीवाले (Dhammiwale)
भोजंगरवाल (Bhojangarwal)	चिंतावत (Chintawat)	
बिहरोरिया (Bihroria)	चिंतवाला (Chintwala)	
बूबना (bubna)	चोखानी (Chokhani)	

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: . बंसल (Bansal)

पृष्ठ: 3

धमोड़ (Dhamod)

धानुका (Dhanuka)

धीरसरिया (Dhirasaria)

धोईवाले (dhoiwale)

धूत (Dhoot)

डिग्गीवाल (Diggiwal)

दिग्गीवाले (Diggiwale)

दीखणी (Dikhani)

दिमादिया (dimadia)

दिनोदिया (Dinodiya)

डॉक्टीवाल (Doctiwale)

फतेहचंदका (Fatehchandka)

फतेहपुरिया (Fatehpuriya)

गाड़ोदिया (Gaadodiya)

गढ़िया (Gadhiya)

गाडिया (Gadiya)

गाँधीवाले (Gandhiwale)

घालरीवाला (ghalriwala)

घामीवाले (Ghamiwale)

गीदड़ा (Gidda)

हाड़ा (Haada)

हांडा (Handa)

हिम्मतरामका (Himmatramka)

हीराखानवाला (Hirakhanwala)

जालान (Jaalan)

जाजोदिया (Jajodiya)

जालानी (jalani)

जटिया (Jatiya)

झालकारीवाला (Jhaalkariwala)

झझुका (Jhajhuka)

झालेरीवाला (Jhaleriwala)

झामवाल (Jhamwal)

झंझनूवाला (Jhanjhanuwala)

झारीबुरीवाला (Jhariburiwala)

झावरीवाल (Jhavariwal)

झुनझुनवाला (Jhunjhunuwala)

कामटिया (Kaamtiya)

कहा (Kaha)

कामठिया (kamthia)

कन्दोई (Kandoi)

करवीवाले (Karaviwale)

कारीवाला (kariwal)

कसेरा (Kasera)

कटपीसवाले (Katpieswale)

कयाल (Kayal)

केजड़ीवाल (Kejdiwal)

केसरा (kesara)

खैलिडा (Khailida)

खेतान (Khaitan)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: . बंसल (Bansal)

पृष्ठ: 4

खालडा (khalda)

खराड़ी (Kharaadi)

खवाला (Khawala)

ख़ज़ांची (Khazanchi)

खेमका (Khemka)

खेरीबांसवाले

(Kheribanswale)

खोवाला (Khowala)

खूबना (Khubana)

कोसलीवाले (Kosaliwale)

कुचमनीय (Kuchamaniya)

कुचामणिया (kuchmania)

कूटपीवाल (Kutpiwal)

लाट (Laat)

लाठ (Lath)

लोयलका (Loyalaka)

मधुरिया (madhuria)

मामेरीवाल (Mameriwal)

मंढावाले (mandhawale)

मण्डवाल (Mandwal)

मंगलूनेवाले

(Mangalunewale)

मंजमार्ले (Manjamarle)

माँजमावाले (Manjmawale)

मरोदिया (Marodia)

मसखरा (Maskhara)

माथुरिया (Mathuriya)

माउडिया (maudia)

मौंदिया (Maundiya)

मोदी (Modi)

मोजवाले (Mojwale)

मुहाहिब (muhahub)

मुंडिया (Mundia)

मुसाहिब (Musaahib)

नागौरी (Nagauri)

नागौर (Nagor)

नागोरी (Nagori)

नरेड़ी (Naredi)

नाउका (Nauka)

नेमाणी (Nemani)

नोहरिया (Nohariya)

नेपानी (Nopani)

पाटोदिया (Paatodiya)

पावतावाले (Paavtawale)

पार्तावाल (Partawal)

पाथरवाले (Patharwale)

पटरारी (Patrari)

पत्थरका (Pattharaka)

पटवारी (Patwaari)

पअवारी (pawari)

फतेहरिया (Phatehariya)

पोद्दार (Poddhar)

प्रहलादका (Prahaladka)

प्रवादका (Pravadaka)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: . बंसल (Bansal)

पृष्ठ: 5

राजगढिया (Rajgadiya)

रामलालका (Ramlalka)

रामुका (Ramuka)

रुइया (Ruiya)

संधध (Sadhdh)

साहू (Sahu)

संधि (Sandhi)

संघी (Sanghi)

सार्ंड़ड़या (Sardiya)

सांवड़िया (Savdiya)

सावड़िया (Sawandiya)

शाह (Shah)

शाहू (shahoo)

शैख्वाटिया (Sheikhvatiya)

सिगलिया (siglia)

सिखरा (Sikhara)

सिंगलिया (Singaliya)

सिसोदिया (Sisodiya)

सोमनाथवाला (Somnathwala)

सुद्राणिया (Sudrania)

सुल्तानिया (Sultania)

टालीवाला (Taliwala)

टांटिया (Tantiya)

ततीवाला (Tatiwala)

तेजावत (Tejavat)

थोईवाले (Thoiwale)

तितवाल (Titwal)

तोपरवानावाले (topewanawale)

तोपखानावाले (Topkhanawale)

तुलस्यान (Tulsian)

वैद (Vaid)

योहार (Yohar)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: बिंदल (Bindal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: विंदल, Vindal

ऋषि: यवस्या या वशिष्ठ Yavasya or Vashista

गोत्रपति: वृन्ददेव (Vrinddev)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: बिंदल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: बिंदल (Bindal)

पृष्ठ: 2

आर्य (Aary)

बागला (Bagla)

बालोजी (Baloji)

बारवाले (Barwale)

भीमसारवाला (Bhimsariya)

चैनानिया (Chainaniya)

चांदीवाल (Chandiwala)

चौकसी (Chaukasi)

दौडतीवाले (Daudatiwale)

दोहतिवाले (Dhohtiwale)

धोतीवाले (Dhotiwale)

फतेहपुरिया (Fatehpuriya)

फतेहपुरवाले (Fatehpurwale)

गन (Gan)

घोड़तीवाले (Ghodatiwale)

घोहतीवाले (Ghohatiwale)

जयपुरिया (Jaipuriya)

कांर्ततया (Kanrtataya)

काँवटिया (Kanwatiya)

खेमका (Khemka)

लडिया (Ladia)

लक्कर (Lakkar)

लटिया (latia)

लोढ़ा (Lodha)

मंडावेवाला (Mandavewala)

माण्डरेवाल (Mandrewal)

मुसद्दी (Musaddi)

पपरिवाल (Papapriwal)

फतेहरिया (Phatehariya)

पिपरावावाले (Pipravawale)

पिपरीवाल (Pipriwal)

सांवलका (sanwalka)

सर्राफ (Saraf)

सरावगी (Sarawagi)

सवालका (Sawalka)

शोरवाले (Shorawale)

सीघई (Sighai)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: भंदल (Bhandal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: डिंगल, भंदल, भंडाल

ऋषि: भारद्वाज (Bhardwaj)/धौम्य (Dhaumy)

गोत्रपति: वासुदेव (Vasudev)

यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): मध्यादिनी (Madhyadini)/माधुरी(Madhuri)

सूत्र (Sutra): कात्यायनी (Kaatyayni)

विवरण: भंडाल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

भंदल गोत्र का एक परिवार महेन्द्रगढ़ (पूर्व में कानोड़) में निवास (सन् 1884 के लगभग) करता था। परिवार में श्री जगन्नाथ के चार पुत्र - जोकीराम, गंगाराम, दयाराम, मयाराम हुए। गंगाराम के पुत्र रूड़मल व रूड़मल के पुत्र सुषदेव हुए। बाद में इनका परिवार राजस्थान के अलवर जिले की तहसील कोट कासिम में निवास करता रहा। (पुस्तक- अग्रवाल समाज की विरासत)

जाजोदिया

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: धारण (Dharan)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: धरान, डेरानी, ठालन, Deran

ऋषि: भेकर या घुम्या Bhekaar or Ghaumya/धन्यासी (Dhanyas)

गोत्रपति: धवनदेव (Dhavandev)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: धारण एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। जाजोदिया धारण गोत्र आधरित कुटुंब नाम है

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: गर्गस्य (Gargasy), गार्गेया, Gargeya

ऋषि: गर्गाचार्य (Gargacharya)

गोत्रपति: पुष्पदेव (Pushpadev)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: गर्ग एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। अग्रवालों में गर्ग गोत्र की संख्या भी सर्वाधिक पाई जाती है।

इस गोत्र को अनेक महान् विभूतियों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है। प्रभुदयाल मुरारका, वसंत लाल मुरारका जैसे महान् क्रांतिकारी, डॉ. राममनोहर लोहिया जैसे विपक्षी दल के महान शासन के जनक, डॉ. धर्मवीर, आनंदीलाल रूंगटा जैसे कुशल प्रशासक, राज्यपाल जयदयाल डालमिया, रायबहादर सेठ हरदत्तराय रामप्रताप चमड़िया, आर.पी.मोदी राधेश्याम मुरारका (महान उद्योगपति), सर सीताराम, राजा ज्वालाप्रसाद, आनरेबल सुखवीर सिंह जैसे विद्वान, बाबू देवी प्रसाद खेतान मातादीन खेतान (विधिवेता) एवं सोलीसीटर जनरल, जगन्नाथप्रसाद रत्नाकर, काका हाथरसी, बालचंद मोती, राधाकृष्णदास बाबू वृंदावनदास, श्रीमती दिनेशनंदिनी डालमिया (साहित्य जगत् की विभूतियाँ), रायबहादर विश्वेश्वर लाल हालवासिया, बाबू पदमचंद (दानवीर समाजसेवी) उत्पन्न हुए, जिन्होंने राष्ट्र एवं समाज सेवा के क्षेत्र में महान् नाम कमाया और अग्रवाल समाज को गौरव के शिखर पर प्रतिष्ठित किया।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 2

आलवाले (Aalwale)
आमेरिया (Aameriya)
आर्य (Aary)
आसामवाले (aasamwale)
अड्डूकिया (Adukiya)
अगानिया (Aganiya)
अजीतसरिया (Ajithsariya)
अजितसरिया (ajitsaria)
असामवाले (Assamwale)
बादीकुईवाले (Baandikuiwale)
बधवानिया (Badhvaniya)
बड़वावाला (Badwawala)
बगड़िया (Bagadiya)
बागरवाले (Bagarawale)
बगरोडिया (Bagarodia)
बागधर (Bagdhar)
बाजला (Bajala)

बाजारी (Bajari)
बालड़ा (Balada)
बामणीवाल (Bamaniwal)
बनडिया (banadia)
बांगटवाले (Bangatawale)
बानूड़ा (Banuda)
बराढ़ी (baradhi)
बरासिया (barasia)
बरासिका (Barasika)
बरसिया (Barasiya)
बारातवाले (Baratwale)
बासदवाले (basadwale)
बीड़ासरिया (Beedasariya)
बीपीधारिया (Beepeedharyia)
बेरीवाल (Beriwal)
बेरिया (Beriya)
भगत (Bhagat)
भाजारी (Bhajari)

भकरके (Bhakarke)
भौतिका (Bhautika)
भुकरका (bhkarka)
भूकरेड़ी वाला (bhkrediwala)
भोजारी (Bhojari)
भोजनगरवाला (Bhojnagarwala)
भूत (Bhoot)
भूकरदीवाला (Bhukarediwala)
भूखमारिया (bhukhmariya)
भुसारवाल (Bhusarwal)
भूषानिया (Bhushania)
भूतेरा (bhutera)
बीदासरिया (Bidasaria)
बीपीपरिया (Bipiparia)
बोपोसरिया (Boposaria)
बोरडीवाला (Bordiwala)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 3

बुड़ाकिया (budakiya)

बुकरेड़ीवाला (bukarediwala)

बुवाले (Buwale)

चमड़िया (Chamadiya)

चाँदगोठिया (Chandgothiya)

चांदीवाल (Chandiwala)

चाँदीवाले (Chandiwale)

चराईवाला (Charaiwala)

चरैवाले (Charaiwale)

चौड़ले (Chaudale)

चौधरी (Chaudhary)

चौखानी (Chaukhani)

चवसरिया (Chavsariya)

चेजन्दका (Chejandaka)

चेनकदीका (Chenkdika)

चितवत (Chetawat)

छारसरिया (Chharsariya)

छावछरिया (Chhavachhariya)

छिगानीवाले (Chhiganiwale)

छापोलिका (Chhopolika)

चिडिपाल (Chidimaar)

चिडीपाल (chidipal)

चिग्निवाले (Chigniwale)

चिलका (Chilka)

चिरानिया (Chirania)

चोड़ेले (Chodele)

चोखानी (Chokhani)

चोमूवाला (Chomuwala)

चूड़ीवाल (Chudiwal)

चीमूवाला (chumuwala)

डांगवाले (daangwala)

दलाल (Dalal)

डालमिया (Dalmia)

डांगवाल (Dangwal)

दशरापुरिया (Dasarapuriya)

दतुलीवाले (Datuliwale)

दौलतपुरवाले (Daulatpurwale)

दीपचंद (Deepchand)

दीवान (Deewan)

डेरावाले (Derawale)

धचडिपाल (Dhachadipal)

धचगनीवाल (Dhachganiwal)

ढ़हमातनया (Dhahamatnaya)

ढ़हम्मतसिंघका (Dhahammatasinghaka)

धन्नावत (Dhanawat)

ढेरीवाल (Dheriwal)

ध्रुव (Dhruv)

ढूंढ़ाड़िया (Dhundadiya)

धुन्दडिया (Dhundadiya)

डिडरातनया (Didratanya)

डिडवानिया (Didwaniya)

दिग्गीवाले (Diggiwale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 4

दीरान (Diran)

डॉक्टीवाल (Doctiwale)

दोलतपरिया (Dolatapariya)

दोसिहला (Dosihala)

डोवटीवाले (Dovatiwale)

इलाचीवाले (Elachiwale)

फागीवाले (Faagiwale)

फासीवाले (fasiwale)

गाड़ोदिया (Gaadodiya)

गंगारपुरवाले (Gangaarpurwale)

गंगापुरवाल (Gangapurwal)

गरेरेवाल (Garerewal)

गावाला (Gawala)

गवेराईवाला (Gaweraiwala)

गेवराईवाला (gevraiwala)

घोड़ेगांव (Ghodegaavwale)

घोड़ेगांववाले (Ghodegaavwale)

घोड़ेगाररले (Ghodegararale)

घोड़ीवाले (Ghodiwale)

गिंदोड़िया (Gindodiya)

गोहल्याण (Golyan)

गोटेगांववाले (Gotegaavwale)

गोटेगाराले (Gotegarale)

गोटेवाले (Gotewale)

गुढ़ावाले (Gudhawale)

गुड़वाले (Gudwale)

गुलालवाले (Gulalwale)

गुरारेवाले (Gurarewale)

हलरासिया (Halarasia)

हलवासिया (Halwaasiya)

हरेलिया (Harelia)

हरवासिया (Harvasia)

हाथीदांतवाले (Hathidantwale)

हवेलिया (Haveliya)

हिमाणिया (Himaniya)

हिम्मतसिंहका (Himmatsinghka)

इजारदार (Ijardar)

इलायचीवाले (Ilayachiwale)

इज़रदार (Izardar)

जालोंवाले (Jaalonwale)

जाजोदिया (Jajodiya)

जालोंवाल (Jalonwal)

जालोनवाले (Jalonwale)

जमालिया (Jamaliya)

जटिया (Jatiya)

जीतमलका (Jeetamalaka)

झाइका (Jhaika)

झझुका (Jhajhuka)

झमजीवाले (Jhamajiwale)

झामवाल (Jhamwal)

झारूका (Jharuka)

जिंतरवाल (Jithurwala)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 5

जिवुरवाला (jivurwala)

जोगनी (Jogani)

जोखानी (jokhani)

कादमावाले (Kadamawale)

कागज़ी (Kagzi)

कामद (Kamad)

कमलिया (Kamalia)

काननगो (Kananago)

कन्दोई (Kandoi)

कानूनगो (Kanungo)

कपाल (Kapal)

कसेरा (Kasera)

कयाल (Kayal)

केचरीवाले (Kechariwale)

केडिया (Kedia)

केथरीवाल (Kethariwal)

कॅथीवाले (Kethriwale)

खेतान (Khaitan)

खाकोलिया (Khakoliya)

खारकिया (Kharakiya)

खराकिया (kharkia)

खाटूवाल (khatuwal)

खाटूवाले (Khatuwale)

खेडिया (Khediya)

खेरिया (Kheriya)

खिरोडिया (Khirodiya)

खुजावाल (Khujawal)

खुर्जावाले (Khurjawale)

किला (kila)

किल्ला (Killa)

किश्तवाले (Kishtwale)

कोडीवाल (Kodiwal)

कोड़ीवाले (kodiwale)

कोठीवाले (Kothiwale)

कोटीवाले (Kotiwale)

कौडीवाले (Kowdiwale)

कोयलेवाले (KoyleWale)

कशीवाले (Kshiwale)

कुम्पावत (Kumpavat)

लड्डूढ़ा (ladhudha)

लड़ीवाला (Ladiwala)

लालड़ा (Lalda)

लोढ़ा (Lodha)

लोडिया (lodia)

लोहिया (Lohia)

लुहारका (Luharaka)

लुहारीवाल (Luhariwal)

मार (maar)

मंगीवाले (Magiwale)

मढ़हपाल (Mahadpal)

महिपाल (Mahipal)

महमिया (Mahmiya)

मंगोड़ीवाल (Mangodiwal)

मंगतेड़िया (Mangotedia)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 6

मौंदिया (Maundiya)
मेहणसरिया (Mehansariya)
मित्या (Mitya)
मोड़ा (Moda)
मोदी (Modi)
मोहनसरिया (Mohansariya)
मोर (Mor)
मोठया (Mothia)
मुगीवाले (Mugiwale)
मुंहवाले (muhwale)
मुंगीवाले (Mungiwale)
मुरारका (Murarka)
नागलिया (Nagaliya)
नागरका (Nagarka)
नाजवाले (Najwal)
नकारवाले (Nakaarwale)
नखरोदिया (Nakharodiya)
नांगलिया (Nangaliya)

नर्लगढ़ढया (Narlagadhaya)
नारनौलिया (Narneliya)
नाथका (Nathka)
नवलगाडिया (Navalgadiya)
नीमावाले (Neemawale)
निड़ीपाल (Nideepaal)
निडानिया (nidhaniya)
पंसारी (Pansari)
परगनवाले (Paragnawale)
परीतावाले (Paritawale)
परिवावाले (parivawale)
पतसवाले (Patasawale)
पटवारीनाथका (Patavarinathka)
पाथरवाले (Patharwale)
पटोदिया (Patodiya)
पटरारी (Patrari)
पत्थरका (Pattharaka)

पटवारी (Patwaari)
फागीवाल (Phagiwal)
प्राणसुखका (Pransukhka)
रेलवाल (railwal)
राजा कटारे (RajaKatare)
राजपुरिया (Rajpuriya)
रमनवमिवाला (Ramanvamiwala)
रामीकासिया (Ramicasia)
रामनवमीवाले (Ramnavamiwale)
रंगटा (Rangta)
रानीवाल (Raniwala)
रारधथ (Rardhath)
रासीवासिया (Rasiwasia)
रईस (Rayis)
रूंगटा (Rungta)
सालगनी (saalgani)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गर्ग (Garg)

पृष्ठ: 7

साडू (sadu)

सागानेरिया (Saganaria)

साह (Sah)

साहू (Sahu)

संकरद (Sakrad)

साल्हावसिया (Salhavasia)

सांगनेरिया (Sanganeriya)

संघी (Sanghi)

सनकार्ड (Sankard)

सराणी (sarani)

सरावगी (Sarawagi)

सरना (Sarna)

सतनानी (Satnani)

शाह (Shah)

शरण (Sharan)

शश्न (Shashan)

शोरवाले (Shorawale)

श्रीया (Shriya)

सिदी (Sidi)

सिंदा (Sinda)

सिंघी (Singhi)

सोनावाले (Sonawale)

सूगला (Soogla)

सूटवाले (Sootwale)

सुरेका (Sureka)

सूतवाले (Sutwale)

टाईंवाला (Taiwala)

तालुका (Taluka)

तानका (Tanka)

थेग्या (Thegya)

तोपणी (Topani)

तोपखानावाले

(Topkhanawale)

तोशमी (Toshami)

तोशखानेवाल

(Toshkhanewale)

उमरेहा (Umeraha)

वामणीवाला (Vamniwala)

वराठी (Varathi)

वर्गाडया (Vargadaya)

वसरिया (Vasaria)

वारवोलिया (Warvolia)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: गोयनका, गोलयन, गोयले, गोयेल, गोभिल, गोइल, Goenka

ऋषि: गौतम या गोभी (Gautam or Gobhil)/गोमिल (Gomil)/Gautam/Gobhil

गोत्रपति: गेंडुमल (Gendumal)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: गोयल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। इस गोत्र के लोग उद्योग-व्यवसाय, दान-धर्म, सेवा, शिक्षा, मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में छाये हुए हैं एवं देश के सभी भू-भागों में फैले है। इसी गोत्र में सेठ रामजीलाल गुड़वाले, रायबहादुर नारायणदास, सेठ नादोमन, सेठ रघुवरदयाल, सेठ गोपल, पार्वती देवी डीडवानिया जैसे क्रांतिकारी हुए, जिन्होंने राष्ट्र के स्वाधीनता आदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिवप्रसाद गुप्त का घर तो स्वतंत्रता सेनानियों का केन्द्र बिन्दु ही बन गया था। देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में गोयल परिवारों ने जी.टी.वी. के चेयरमैन सुभाषचंद्र, जेट एयरवेज के नरेश गोयल, मोदी घराने के सेठ मुलतानोमल, गुजरमल मोदी, चाय जगत् के हनुमानवक्स कनोई, ट्रांसपोर्ट जगत् के प्रभुदयाल भोड्का अग्रवाल, घनश्यामदास गोयल जैसे अनेक उद्योगपति इस देश को दिए हैं, जिन पर कोई भी समाज गौरव का अनुभव कर सकता है।

गोयल गोत्र आधरित कुटुंब नाम -

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 2

आर्य (Aary)

आवास्य (Aavasy)

अडूकिया (Adukiya)

अजमलगढ़ (Ajamalagadh)

अकूड़िया (akudia)

बादीकुईवाले (Baandikuiwale)

बचचाला (Bachachala)

बधवारी (Badhawari)

बहेडीजी (Bahediji)

बैराठी (Bairathi)

बजाज (Bajaj)

बालड़ा (Balada)

बाँचवाल (Banchawal)

बंचवाला (banchwala)

बांदीकुईवाले (bandikuiwale)

बाणवाले (Banwale)

बारासरिया (Barasariya)

बैरती (Barati)

बथवाल (Bathwal)

भगत (Bhagat)

भॊदूका (Bhanduka)

भारुका (Bharuka)

भौतिका (Bhautika)

भिण्डा (bhinda)

भिवानीवाला (Bhiwaniwala)

भोड्का (Bhodka)

भोदूका (Bhodooka)

भोजगढ़िया (Bhojgaria)

बुधरारी (Budharari)

बुधवारी (Budhwari)

बुकरेड़ीवाला (bukarediwala)

चकरे (Chakare)

चाकरे (Chakere)

चाँदगोलिया (Chandagoliya)

चाँदगोठिया (Chandgothiya)

चांदीवाल (Chandiwala)

चाँदीवाले (Chandiwale)

चार्लवाल (Charlwal)

चौधरी (Chaudhary)

चौकड़ीका (Chaukadika)

चौखानी (Chaukhani)

चावलवाला (Chawalwala)

चेकड़ीका (chekdika)

चेनकदीका (Chenkdika)

छीतरका (Chhitrka)

चिड़ावावाले (Chidawawale)

चिरमाले (Chirmale)

चिरमोले (Chirmole)

चितर्का (Chitarka)

चोकडीवाल (Chokadiwal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 3

चूड़ीवाल (Chudiwal)
चुरूवाले (churuwale)
चुरवाल (Churwal)
दजम्बवाल (Dajambwal)
दलाल (Dalal)
डम्बीवाले (Dambiwale)
देजलीवाला (Dejaliwala)
देरालीवाल (Deraliwal)
देवलांवाला (Devalanwala)
देवालीवाला (Devaliwala)
देवरलीवाले (Devaraliwale)
धचरमोले (Dhacharamole)
धचतरका (Dhachataraka)
धामवाल (Dhamwal)
धानोटी (Dhanoti)
धनवाला (Dhanwala)
धीवाले (dhiwale)
डिडरातनया (Didratanya)

डिडवानिया (Didwaniya)
दिग्गीवाले (Diggiwale)
दीखणी (Dikhani)
दिनोदिया (Dinodiya)
फर्शीवाला (Farshiwala)
गाड़ोदिया (Gaadodiya)
गढवाला (gadhwala)
गढ़वाल (Gadwala)
घीराले (Ghirale)
घीवाल (Ghiwal)
घीवाले (Ghiwale)
गोविल (Govil)
गोयलका (Goyalaka)
गोयनका (Goyanaka)
गुड़वाले (Gudwale)
गुड्यानिया (Gudyaniya)
गुटगुटिया (Gutgutiya)
हड़ोदिया (Hadodiya)

हलराई (Halrai)
हलवाई (Halwai)
हेतमसरिया (Hetmasaria)
होल्लमल (Hollmal)
इजारदार (Ijardar)
इकाड़िया (Ikadiya)
जमनका (Jamanaka)
जसरपुरिया (Jasarapuriya)
झंडेवाला (Jhandewala)
झारीबुरीवाला (Jhariburiwala)
झोरवाड़ावाले (Jhoravadawale)
झूमियावाले (Jhumiyawale)
झूमजीवाले (Jhumjiwale)
झरीबुरीवाला (jhuriburiwala)
जिलोका (Jiloka)
कांचेवाले (Kaanchewale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 4

कारीवाल (Kaariwal)
काबरिया (kabaria)
कागलीवाला (Kagliwala)
कहनानी (Kahnani)
काहनोरिया (Kahnoria)
काकड़ावाले (Kakadawal)
काण्डा (Kanda)
कन्दोई (Kandoi)
कांकरिया (Kankariya)
कानोडिया (Kanodiya)
करपरराले (Karaparale)
करना (Karna)
करुडिया (Karudiya)
करविवाले (Karviwale)
कसदिया (kasdia)
कसेरा (Kasera)
काउड़ा (Kauda)
कयाल (Kayal)

खाकोलिया (Khakoliya)
कोचवाले (Kochwale)
कोंचवाले (Konchwale)
कोटावाले (Kotawale)
लदद्दा (Ladda)
लडिया (Ladia)
लांड (land)
लंडूका (Landuka)
लारा (Lara)
लावा (Lava)
लाया (Laya)
लिहिला (Lihila)
लीला (Lila)
लोड (Lod)
लोला (Lola)
लोंद (Lond)
लूणवाला (Lunawala)
मभर्नीवाल (Mabharniwal)

मकीम (Makim)
ममंडा (Mamnda)
मंगालीवाले (Mangaliwale)
मनक्सीया (Manxia)
मिण्डा (Minda)
मोदी (Modi)
मोहनका (Mohanka)
मोर (Mor)
मोठा (Motha)
मुकीम (Mukim)
नानूहाला (Nanuhala)
नानूशाला (Nanushala)
नानुवाला (Nanuwala)
निवाली (Nivali)
पालीवाल (Paliwal)
पंसारी (Pansari)
परगनावाले (Paraganawale)
पातलिया (Pataliya)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 5

पतंगवाले (Patangwale)
पटरारी (Patrari)
पट्टीवाले (Pattiwale)
पटवारी (Patwaari)
फसीवाला (Phasiwala)
पिलखुआ (Pilakhua)
प्रहलादका (Prahaladka)
रादीजोड़ीवाल (Radijodiwal)
राईया (Raia)
रेद (Raid)
राईका (Raika)
रायजादा (Raizada)
राणा (Rana)
रंगवाले (Rangwale)
रानवाल (Ranwal)
रेजीमेंटवाला (Regimentwala)
रोहिला (Rohila)
रुराटिया (Ruratia)

रूवाटिया (Ruvaatiya)
सहारूका (Saharuka)
साहरामजीका (Sahramjika)
साहूवाला (Sahuwala)
सैदपरिया (Saidpariya)
सलमेवाला (Salmewala)
समयराइवाले (Samayraiwale)
सम्भारवाले (Sambharwale)
समरायवाले (samraiwale)
सांघी (Sanghi)
संतरामजीका (Santramjika)
सराईका (Saraika)
सवाईका (Sawaika)
सेठ (Seth)
सिरसलीवाला (Sirsaliwala)
शीशवालिया (Siswaliya)
सोनावाले (Sonawale)
सुरेका (Sureka)

तार्रेवाल (Taarrewal)
टकरवाले (Takarwale)
टकसाली (taksali)
टकसारी (Taksari)
तनमुखरामका (Tanamukharaamaka)
तवरेवाला (Tavrewala)
टेकड़ीवाल (Tekadiwal)
टेकडीवाल (tekdiwal)
थार्ररया (Tharrarya)
ठठेरी (Thateri)
थावरिया (Thavariya)
टीबड़ेवाल (Tibadewal)
टिबडेवाल (tibdewala)
तिजौरेवाले (Tijaurewale)
टिकरिया (Tikariya)
टिरिया (Tiriya)
तोदी (Todi)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयल (Goel/Goyal)

पृष्ठ: 6

टोरिया (Toriya)

टुकड़ीवाल (Tukadiwal)

उमरेहा (Umeraha)

वाडीजोड़ीवाले

(Vaadijodiwale)

वाड़ीजोड़ीवाले (vadijodiwale)

वैद (Vaid)

वाणवाले (Vanwale)

वयवाल (Vaywal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: गोयन/ गंगल (Goyan/Gangal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: गंगा, गौण, गावल, Gangal,Goin, Goyanor, Gangal,

ऋषि: पुरोहित (Purohit) /गौतम (Gautam)

गोत्रपति: गोधर (Godhar)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: गोयन एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: जिंदल (Jindal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: जीतल

ऋषि: बृहस्पति या जैमिनी (Bruhaspati or Jaimini) जेमिनी (Gemini)

गोत्रपति: जैत्रसंघ (Jaitrasangh)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: जिंदल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

इस गोत्र को महान स्वाधीनता सेनानी लाला लाजपतराय, सुप्रसिद्ध उद्योगपति ओम प्रकाश जिन्दल, सीताराम जिन्दल, राष्ट्रवासियों को तिरंगा ध्वज फहराने का अधिकार दिलाने वाले सांसद नवीन जिन्दल, विश्व की सबसे धनी माताओं में से एक सावित्री जिंदल, राजाबहादुर सर सेठ बंशीलाल, आनरेबल सेठ गोविंदलाल पित्ती (हैदराबाद), सुप्रसिद्ध समाजसेवी सीताराम सेक्सरिया कल्याण के सम्पादक राधेश्याम खेमका, महान गौभक्त सीताराम खेमका आदि अनेकानेक विभूतियों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: जिंदल (Jindal)

पृष्ठ: 2

बारवाले (Barwale)

भाकरीवाले (Bhakriwale)

बूवानीवाला (buvaniwala)

कलकत्तेवाले (Calcuttewale)

गाँधीवाले (Gandhiwale)

हरलालका (Harlalka)

झुंथरा (Jhunthara)

झूरिया (jhuria)

झुरिया (Jhuriya)

कावटिया (Kavatiya)

खेमका (Khemka)

नागलिया (Nagaliya)

नागौरी (Nagauri)

नागोरी (Nagori)

नलवावाले (Nalwawale)

पपरिवाल (Papapriwal)

पपत्ती (Papatti)

पिपरीवाल (Pipriwal)

सर्राफ (Saraf)

सेक्सरिया (Seksariya)

सेठमेघराजका

(Sethmeghrajka)

शाह (Shah)

शम्भुका (Shambhuka)

तापड़िया (Tapadiya)

तुकासर्ले (Tukaasarle)

टुकड़ावाला (Tukadawala)

टुकडावाला (tukdwala)

तुरकासवाले (Turkaswale)

तुर्कावाले (Turkawale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: कंसल (Kansal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: कांसिल, कांसल

ऋषि: कौशिक (Kaushik)

गोत्रपति: मणिपाल (Manipal)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: कंसल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

इस गोत्र में सेठ गयाप्रसाद आगरा लाला संगमलाल बनवारीलाल कानपुर, लाला उमरावमल देहली, लाला निहालसिंह आदि नाम प्रमुख हैं। लाला गायाप्रसाद का आगरा में पुस्तक व्यवसाय है। सेठ संगमलाल का कानपुर के प्रतिष्ठित पुरुषों में विशेष स्थान है। कानपुर में इनके द्वारा बनवाया गया मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। लाला निहालसिंह के बारे में प्रसिद्ध है कि इन्होंने पानीपत में अपने मकान को नीव में केशर डलवाई, जिसके कारण आज भी वहाँ उनका केसरिया भवन प्रसिद्ध है। लाला उमरावमल, दिल्ली के प्रसिद्ध अग्रवाल में हुए हैं, जिन्होंने गढ़मुक्ततेश्वर में धर्मशाला, मंदिर आदि बनवाए।

कंसल गोत्र आधरित कुटुंब नाम -

अडूकिया (Adukiya), डूडवेवाला (Doodvewala), दोसिहला (Dosihala), दोसीवाला (Dosiwala),रायपुरिया (Raipuria)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: कुच्छल (Kuchhal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: कक्चल, कुच्छल, कुच्छली, Kachal, Kuchchal

ऋषि: कश्यप (Kashyap)

गोत्रपति: कर्णचंद (Karanchand)

वेद (Veda): सामवेद: (Samaveda)

शाखा (Branch): कोसामी (Kosami) / कौत्थम(Kauttham)

सूत्र (Sutra): कोमली (Komaal)

विवरण: कुच्छल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

हरियाणा के सोनीपत और महेन्द्रगढ़ में इस गोत्र के कुछ परिवार आज भी रहते हैं। सोनीपत नगर व इसके आस-पास के गांवों में बसने वाला कुच्छल गोत्र के सभी जन एक ही परिवार से हैं। महेन्द्रगढ़ में भी कुच्छल मारवाड़ी परिवार रहते थे जो बाद में स्थान बदलते-बदलते कोलाकाता पहुंच गये। सेठ अमर चंद कुच्छल (कोषाध्यक्ष, श्री अग्रवाल क्षेत्री महासभा, आबूरोड), श्री रोशन लाल गुप्ता कुच्छल (रोहतक रोड, नांगलोई, नई दिल्ली), श्री सुभाष गुप्ता कुच्छल(दक्षिणपुरी, नई दिल्ली), श्री नरेश चंद्र अग्रवाल कुच्छल (शाहदरा, दिल्ली), मनोहर लाल गुप्ता(कुच्छल नांगलोई, नई दिल्ली), विजय शंकर गुप्ता(कुच्छल - शाहदरा, दिल्ली) मीना कुच्छल (समाज सेवी)।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मधुकुल (Madhukul)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: मुदगल, मुद्गल, Mudgal

ऋषि: मुद्रगल/मांडव्य Mudragal/Mandavya/आश्वलायन/मुद्गल (Aashvalayan/Mudgal)

गोत्रपति: माधवसेन (Madhavsen)

वेद (Veda): ऋग्वेद: (Rigveda)/ यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): सालाया (Saalaya)/साकल्या (Sakalya)

सूत्र (Sutra): आश्वलायन श्रौतसूत्र (Ashvlayan)

प्रयागराज में भी कई मधुकुल परिवार रहते हैं। यह परिवार सौ वर्ष पहले इलाहबाद के निकट भाखरी गांव में रहता था, बाद में वह प्रयागराज आकर बसा। गांव में यह परिवार महाजनी का काम करते थे। लाला जगदीश प्रसाद (सुपुत्र छगन लाल) ने नगर में करीब 3 बीघा क्षेत्रफल में (सन् १९३५) दाल मिल और तेल मिल स्थापित की थी। जगदीश प्रसाद के पुत्र सीताराम व पौत्र राजकुमार अग्रवाल हुए जो आजकल वहीं रहते हैं। (पुस्तक: अग्रवाल समाज की विरासत), वाराणसी का सुप्रसिद्ध शाह परिवार मुदगल गोत्री है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मंगल (Mangal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: मंगला

ऋषि: मांडव (Maandav)

गोत्रपति: अमृतसेन(Amritsen)

वेद (Veda): ऋग्वेद: (Rigveda)/ यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): सकल्य(Sakalya)

सूत्र (Sutra): आपस्तम्ब (Aapstambh)

विवरण: मंगल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

विवरण: मुद्गल (मधुकुल/मुदगल) एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

इस गोत्र में भारत रत्न डॉ श्री भगवानदास शाह, श्री गोपाल दास शाह, श्री मनोहर दास शाह, श्री मुकुंदलाल शाह, बाबू गोपालदास शाह, बाबू माधोदास शाह , गोविन्ददाम आदि गणमान्य विभूतियां हुईं जिन्होंने अपनी उदारता और परोपकार जैसे गुणों द्वारा और साहित्य, संस्कृति आदि सभी में अपनी विशिष्ट माप अंकित की और भारतमाता के मस्तक को ऊंचा किया। इन परिवारों का मूल निवास स्थान आगरा और करनाल हुआ। साह मनोहरदास के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने टीपू सुल्तान से एक मूल्यवान तलवार को हस्तगत किया था। कोलकाता में मोहनदास कटला ने विशाल उद्यान की स्थापना की थी। श्री दामोदरदास उत्तरप्रदेश विधान परिषद के सदस्य रहे। बाबू गोपालदान शाह ने श्री श्याम जी का भव्य मंदिर बनवाया। बाब मनोहरदास शाह का एडवर्ड अस्पताल बनाने में योगदान रहा। श्री गोविन्द शाह ने अनेकानेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया। हिन्दू कॉलेज नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना में भी आपका योगदान रहा। डॉ. भगवानदास, श्रीप्रकाश, चन्दमान, श्रीनाथ गाह भी उच्च पदों पर रहे है। यह वंश बहुत प्रभावी और महान विभूतियों से संपन्न रहा है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मंगल (Mangal)

पृष्ठ: 2

आबुवाले (Aabuwale)
आर्य (Aary)
बाबी (babi)
बैराठी (Bairathi)
बायेरैठी (Bairethi)
बाझेजोडीवाले (Bajhejodiwale)
बैरती (Barati)
बेरी (Beri)
चौधरी (Chaudhary)
चौकसी (Chaukasi)
चौखानी (Chaukhani)
छींटावाला (Chhentawala)
चिंतवाला (Chintwala)
दलहान (Dalhan)
धचंटवाल (Dhachantwal)
धोलीवाल (Dholiwal)
फिरोज़वाले (Firozawale)

गाँधीवाले (Gandhiwale)
घीराले (Ghirale)
घीवाल (Ghiwal)
घीवाले (Ghiwale)
गोपर्न्द (Goparnd)
गोविंदगढ़वाले (Govindgadhwale)
इन्दौरिया (Indauriya)
इंद्रानेवाले (Indranewale)
जगनानी (Jagnani)
जाजोदिया (Jajodiya)
जयलय (Jayalya)
जुलासारिया (Julasariya)
कामनी (Kaamani)
कागाणी (kagani)
कहा (Kaha)
काकड़ावाले (Kakadawal)
काकड़ेवाला (Kakadewala)

कमानी (Kamani)
कानसरिया (Kanasariya)
कन्दोई (Kandoi)
कनोडिया (kanodia)
कानोडिया (Kanodiya)
कनोई (Kanoi)
कफरोजावाल (Kapharojawal)
करौलीवाले (Karauliwale)
कसेरा (Kasera)
केकड़ीवाले (KekdiWale)
खंडेलिया (Khandeliya)
खेमका (Khemka)
खोयावाल (Khoyawal)
खुरडीकर (Khuradikur)
खुरड़ीकटु (khurdikatu)
कितनिया (Kitaniya)
किठानिया (kithnia)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मंगल (Mangal)

पृष्ठ: 3

लच्छूका (Lacchuka)
लुनका (Lunaka)
माखरिया (makharia)
माङोदीया (Mandodia)
मांगलिक (Mangalik)
मंगलूनेवाले
(Mangalunewale)
मंगलुनिया (Mangalunia)
मंगला (mangla)
मोदी (Modi)
नौबतका (Naubataka)
नाउका (Nauka)
नाउवाला (nauwala)
निमुचरिया (nimucharia)
पच (pach)
पंच (Panch)
पंर् (Panr)
पंसारी (Pansari)

पापारतनया (Papartanaya)
पपनिया (papnia)
परगनावाले (Paraganawale)
परगनवाले (Paragnawale)
परितावाला (Paritawala)
रामुका (Ramuka)
रसीरासिया (Rashirasiya)
रसिवासिया (Rasivaasiya)
सनगई (sangai)
सौभासारिया (Saubhasaria)
शोबासरिया (Shobasariya)
शोभा (Shobha)
शोभासरिया (Shobhsaria)
सीपरिया (Sipiriya)
सीयोटीया (siyotia)
टेमानी (Temani)
थाईवाले (Thaiwale)
टिकमाणी (Tikamani)

वाची (Vachi)
ववि (Vavi)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मित्तल (Mittal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: मीतल

ऋषि: मैत्रेय (Maitreya)

गोत्रपति: मंत्रपति (Mantrapati)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयी शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: मित्तल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। देश के आर्थिक औद्योगिक विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी मित्तल गोत्र को लक्ष्मी मित्तल जैसे महान् उद्योगपति को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है, जो भारत ही नहीं विश्व क्षितिज के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। इसी मित्तल गोत्र में मोबाईल मेन श्री सुनील भारती मित्तल, सोम मित्तल, शांतिप्रसाद जैन, साहू श्रेयांसप्रसाद जैन, साहू रमेशचंद्र जैन, बृजकृष्ण चाँदी वाले, प्रभुदयाल मित्तल, सतपा मित्तल, पद्मश्री ओ.पी. मित्तल, आदित्य मित्तल जैसे अनेक व्यक्तित्व पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व द्वारा देश और समाज का नाम ऊँचा किया है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मित्तल (Mittal)

पृष्ठ: 2

आडछेवाले (aadchewal)
आलवाले (Aalwale)
आरसीवाल (Aarsiwale)
आर्य (Aary)
अलसीसर (Alsisar)
अंगारके (Angarke)
बगड़िया (Bagadiya)
बागड़का (Bagadka)
बागरवाले (Bagarawale)
बगरुवाले (Bagruwale)
बहूवाले (Bahuwale)
बंगलवाले (bangalwale)
बंगरुवाल (Bangaruwal)
भगेरिया (bhageria)
भागेरिया (Bhageriya)
भोड़की (Bhodki)
भूत (Bhoot)

भूतका (Bhootka)
बोहरा (Bohra)
बृजवासी (Brijwasi)
बुधासिया (Budhasia)
चालीसिया (Chalisiya)
चानौतिया (Chanautiya)
चाँदगोठिया (Chandgothiya)
चाँदीवाले (Chandiwale)
चौकसी (Chaukasi)
चावलवाला (Chawalwala)
चेजल्सया (Chejalsaya)
चेनानिया (Chenaniya)
छावछरिया (Chhavachhariya)
चिरानिया (Chirania)
दाबड़ीवाल (Dabadiwal)
डाबडीवाला (dabadiwala)

दंगलवाले (Dangalwale)
ढ़हसारिया (Dhahsariya)
धरनीधरका (Dharnidharka)
धेलिया (Dheliya)
धोलिया (Dholiya)
ध्रुव (Dhruv)
डुलानिया (Dulania)
गढैय्या (Gadaiyya)
गढ़िया (Gadhiya)
गदैया (gaidia)
गांठवाले (ganthwale)
गरोठवाला (Garothwala)
घेलिया (Gheliya)
घीवाल (Ghiwal)
घीवाले (Ghiwale)
गोटेवाले (Gotewale)
ग्रोथवाल (Grothwal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: मित्तल (Mittal)

पृष्ठ: 3

जडतायो (Jadatayo)
जयपुरिया (Jaipuriya)
जसरासरीया (jasrasariya)
जटिया (Jatiya)
जौहरी (Jauhari)
कागलावाले (Kaglawale)
कन्दोई (Kandoi)
कनोई (Kanoi)
कसेरा (Kasera)
खनानिया (Khananiya)
खाटुवाला (khatuwala)
कोकड़ा (Kokda)
कोटरावाले (Kotarawale)
कोत्रवाले (Kotrawale)
कोयलेवाले (KoyleWale)
लड़ीवाला (Laadiwala)
लुदीवासिया (Ludivasiya)
मडीवाल (madiwal)
माखरिया (makharia)

मखरिया (Makhariya)
मल्लावत (Mallawat)
मंगनीराम (Manganiram)
माररिया (Mararia)
मरोदिया (Marodia)
मारोठिया (Marodiya)
मोटवाल (Motwale)
मुंशिमालवाले (Munshimalwale)
मुरोदिया (Murodia)
मुसद्दी (Musaddi)
नर्लगढ़ढया (Narlagadhaya)
नवलगाडिया (Navalgadiya)
ओड़छेवाले (Odachewale)
पालदीवाला (Paaldiwala)
पहाड़िया (Pahaadiya)
पंगरूवाले (pangruwale)
परसरामपुरिया (Parsarampuriya)
रेदिका (Radika)

रींगसीया (Ringsia)
सफाड़िया (Safadia)
साह (Sah)
साहू (Sahu)
सतनालीका (Satnalika)
शाहपुरावाले (Shahpurwale)
श्रारड़ (shard)
शोरवाले (Shorawale)
श्रीवाले (shriwale)
सीकरिया (Sikaria)
सिंगडोदिया (Singdodia)
सिसोदिया (Sisodiya)
तम्बाकूवाले (Tambakuwale)
ठाकुरद्वारावाले (Thakurdwarewale)
ठरड़ (Tharad)
तोरका (Torka)
वैदिक (vaidik)
वेदिका (Vedika)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: नागल, नंगल, नागला, Nagal, Naagil, Nagal

ऋषि: नागेन्द(Naagend)

गोत्रपति: नरसेव Narsev

वेद (Veda): सामवेद: (Samaveda)

शाखा (Branch): कौथमी (Kouthmi)/कौथमी (Kauttham)

सूत्र (Sutra): असलयिन Aslayin

विवरण: नागल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

नागल गोत्र के कई परिवार दिल्ली, आसाम और मुंबई क्षेत्रो में रहते हैं। अग्रवाल समाज तेलंगना की दोमलगुड़ा शाखा की अग्रमहिला मंच की मंत्री तथा विजय पलवल-हरियाणा जिले के होडल के नजदीक बहीन गांव में नागल गोत्र के अग्रवाल कई पीढ़ियों तक निवास करते रहे। यह परिवार करीब 800 साल पुराना है। बाद में इस परिवार की एक शाखा पिनगवां गांव में जा बसी। इस परिवार के लोग सोहना, जिला गुड़गांव व जयपुर में भी फैल गये थे। हसनपुर जिला फरीदाबाद में नागल गोत्रीय निवास करते हैं।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: सिंहल (Singhal)

पृष्ठ: 1

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: सिंघला, सिंघल, सिंगल, संघल, सिंघले, सिंगला, संदल, संगल Singla, Singhal, Singla

ऋषि: शांडाल्य (Shandalya)

गोत्रपति: सिंधुपति (Sindhupati)

वेद (Veda): सामवेद: (Samaveda)

शाखा (Branch): कोयुमी (Koyum)/कौथम (Kauttham)

सूत्र (Sutra): गोभिल(Gobhil)

विवरण: सिंघल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है। इस गोत्र के लोग प्राय: राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि विभिन्न प्रांतों में फैले हुए है। अग्रवाल समाज में सिंघल गोत्री अग्रवालों ने उद्योग व्यवसाय दान-धर्म-सेवा, साहित्य, राजनीति सभी क्षेत्रों में अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं क्षमता के बल पर विशेष स्थान बनाया है। इस गोत्र में लाला झनकूमल सिंघल, सेत खूबराम सत्यनारायण सर्राफ जैसे क्रांतिकारी एवं देशभक्त हुए, जिन्होंने आजादी के आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उद्योग-व्यवसाय के क्षेत्र में तो सिंघल गोत्र में जुग्गीलाल कमलापत सिंघानिया, गौतमहरि सिंघानिया (जे.के. उद्योग समूह), लाला श्रीराम, चरतराम, लाला भरतराम (डी.सी.एम. समूह), सेठ गणपतराय चाँदमल राजगढ़िया जैसे अनेक उद्योगपति हुए हैं, जिनका राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। दान-धर्म परोपकार, समाज सेवा के क्षेत्र में तो सिंघल गोत्र ने विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष एवं राम जन्म भूमि आंदोलन के प्रवर्तक अशोक सिंघल, लाला हरप्रसाद आरा, महावीरप्रसाद सर्राफ, मुंबई, रामजीदास बाजोरिया, बलदेवदास रामेश्वरदास, नाथानी, सेठ पूर्णमल गनेड़ीवाला, भक्त ललितकिशोरी ललितमाधुरी (वृंदावन में शाहबिहारी जी मंदिर के निर्माता), हजारीमल दूदवेवाला जैसे असंख्य व्यक्तित्वों को जन्म देकर एक से एक बढ़कर प्रतिमान स्थापित किया है।

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: सिंहल (Singhal)

पृष्ठ: 2

आजाद (Aajaad)

आमेरिया (Aameriya)

आरसीव (aarsiv)

आरसीवाल (Aarsiwale)

बगड़िया (Bagadiya)

बागड़का (Bagadka)

बगडोदिया (bagdodia)

बागड़ोदिया (Bagdodiya)

बाजोरिया (Bajoriya)

बकरा (Bakra)

बंका (Banka)

बतासे (Batase)

बेरलिया (Beraliya)

बेरोलिया (Beroliya)

भजनका (Bhajanka)

भांडेरवाले (Bhanderwale)

भारतेंदु (Bharatendu)

भार्मसंघका (Bharmsanghka)

भऊवाले (Bhauwale)

भावसिंगका (Bhavsinghka)

भावथड़ीवाले (Bhavthadiwale)

भूतिया (Bhootiya)

भूतला (Bhootla)

भूखमारिया (bhukhmariya)

बिरमीवाल (Birmiwal)

चनानी (Chanani)

चारिया (Chariya)

चौकड़ाइट (Chaukdait)

छारिया (Chhariya)

छोलिया (Chholiya)

छोआवाला (choawala)

ददरेवाला (Dadarewala)

दतियावाले (Datiyawale)

ढांडणिया (Dhadhaniya)

ढ़हसारिया (Dhahsariya)

धनदानिया (Dhandaniya)

ढांढतनया (Dhandhatanya)

धुन्दडिया (Dhundadiya)

डूडवेवाला (Doodvewala)

डूडरेवाल (Dudarewal)

दुदवावाला (Dudvawala)

गडीवाला (Gadiwala)

गजबी (Gajabi)

गनेड़ीवाला (Ganediwala)

गोरखपुरी (Gorakhpuri)

गोविंदगढ़वाले (Govindgadhwale)

गुमन्त (Gumant)

हरसोरया (Harsoriya)

हाथीवाले (Hathiwale)

हिसारिया (Hisaria)

हुण्डीवाला (Hundiwala)

जगतरामका (Jagatramka)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: सिंहल (Singhal)

पृष्ठ: 3

जग्गूका (Jagguka)
जाजोदिया (Jajodiya)
जौहरी (Jauhari)
जयरिका (Jayarika)
झाजरिया (Jhaajariya)
जीदगर (Jindgar)
जोहरी (Johari)
काजड़िया (Kaajdiya)
काबरिया (kabaria)
कजारिया (Kajaria)
कन्दोई (Kandoi)
केशान (Keshan)
खंडेलिया (Khandeliya)
खेमका (Khemka)
खोयावाल (Khoyawal)
किसनाका (Kisanaka)
किनाका (Kisnaaka)
कोतवाल (Kotwal)

लड्ढा (Laddha)
लालपुरिया (Lalpuriya)
लाठ (Lath)
लुहारका (Luharaka)
मंडावेवाला (Mandavewala)
माण्डरेवाल (Mandrewal)
मंगोड़ीवाल (Mangodiwal)
मंगतेड़िया (Mangotedia)
मौवाल (Mauwal)
मऊवाले (Mauwale)
मोड़ा (Moda)
मोठवाले (Mothwale)
नगीमा (Nagima)
नझोई (Najhoi)
नाथानी (Nathani)
नेर्ततया (Nertataya)
नेवटिया (Nevatia)
निम्बोदिया (Nimbodiya)

पांचोतासवाले
(Panchotasawale)
पंसारी (Pansari)
पाथरवाले (Patharwale)
पटरारी (Patrari)
पत्थरका (Pattharaka)
पटवारी (Patwaari)
राजगढिया (Rajgadiya)
रामुका (Ramuka)
रसीरासिया (Rashirasiya)
रसिवासिया (Rasivaasiya)
रासीवासिया (Rasiwasia)
रतेरिया (Rateria)
रेखान (Rekhan)
संगल (sangal)
सर्राफ (Saraf)
सेठ (Seth)
शाह (Shah)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

गोत्र: सिंहल (Singhal)

शाह(राय) (Shah)

सीघई (Sighai)

सिमपूरिया (Simpooriya)

सिनाका (sinaka)

सिंघानिया (Singhania)

सिंगला (singla)

सुनारीवाल (Sunariwal)

सुंरीवाले (Sunariwale)

सुतरेशाही (Sutreshahi)

टाईंवाला (Taiwala)

तलवाड़िया (Talavadiya)

तनम्बोदिया (Tanambodiya)

टीबड़ेवाल (Tibadewal)

टिबडेवाला (tibdewala)

तोलारामका (Tolaramaka)

टोरिया (Toriya)

तोतरामका (Totaramka)

वासनीवाल (Vasniwal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(गोत्र: तायल (Tayal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: तित्तल

ऋषि: साकल/तैतरेय Saakal/Taitireya/तैतिरेया (Taitireya)

गोत्रपति: ताराचंद (Tarachand)

वेद (Veda): यजुर्वेद: (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयि शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: तायल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

तायल गोत्र में रायसाहब लाला सरयूप्रसाद (फैजाबाद), रायबहादुर बनवलराम तायल (हिसार), डॉ. विमलेंदु तायल (श्रीगंगानगर), लाला जयदेव रईस आदि हुए, इस गौत्र के विमलेंदु तायल ने महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति पद को सुशोभित किया। इसी गोत्र में सेठ गोपीराम भगतराम टिकमाणो कोलकाता का परिवार हुआ। इस परिवार में सेठ टोकन प्रसिद्ध पुरुप हुए, जिनके नाम पर इस परिवार का कुटुंब नाम टिकमाणी पड़ा। इस परिवार के सेठ गोपीराम एवं कोलकाता तथा राजगढ़ में दान धर्म, परोपकार के कार्यों में पर्याप्त यशार्जन किया।

तायल गोत्र आधरित कुटुंब नाम -

आलवाले, आर्य, भीमराजका, ईशरवाल, करड़वाल, पातलिया, टिकमाणी

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(गोत्र: तिंगल (Tingal)

अन्य प्रचलित नाम/वर्तनी: तुंगल, तिंगल, तुंघाल, तुन्दल, Tunghal

ऋषि: शांडिल्य / तांड्या (Shandilya/Tandya)/तांडव (Taandav)

गोत्रपति: तंबोलकर्ण (Tambolkarna)

वेद (Veda): यजुर्वेदः (Yajurveda)

शाखा (Branch): माध्यंदिन वाजसनेयी शाखा (वाजसनेयी संहिता माध्यंदिन)

सूत्र (Sutra): कात्यायन (Kaatyayn)

विवरण: तिंगल एक गोत्र आधरित कुटुंब नाम है यह अग्रवालों के 18 गोत्रों में से एक है।

।। आमंत्रण ।।

अग्रवालों में अनेको कुटुंबनाम एक से अधिक गोत्र में पाए जाते है विशेषकर स्थान आधारित कुटुंब नामो में, अथक प्रयासों के फलस्वरुप १८०० कुटुंबनाम का संकलन हुआ है अभी भी अनेको स्रोतों से अग्रवालों के कुटुंबनाम प्राप्त हो रहे है यदि आपका कुटुंबनाम इस सूचि में सम्मिलित नहीं है अथवा आप इस विषय में रूचि रखते है और अपनी सनातनी परंपरा को जीवांत रखना चाहते है तो हमसे संपर्क करें

हर्ष वर्धन गोयल

अध्यक्ष

अग्र वंशवली शोध परिषद्

agrvanshawali@gmail.com

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 1

आडा (Aada)
आडतिया (Aadatiya)
आदेवाले (Aadewale)
आदोरिया (Aadoriya)
आगीवाला (Aagiwala)
आँजनिया (Aanjaniya)
आरंगवाले (Aarangawale)
अचारवाले (Acharawale)
अगढ़वाले (Agadhawale)
अगोसवाले (Agosawale)
अजादिरिया (Ajadiriya)
अजमेरवाले (Ajamerwale)
अखैगढ़वाले (Akhaigadhawale)
अखरोटवाले (Akharotawale)
अलपसरिया (Alapasariya)
अलवरवाले (Alavarawale)
अमरसरिया (Amarasariya)
अमरावतीवाले (Amaravatiwale)

अंगोछावाले (Angochhawale)
अंगूठीवाले (Anguthiwale)
अटेचोवाले (Atechowale)
अत्तार (Attar)
औलख (Aulakh)
औरेटयावाले (Auretayawale)
बड़बोलिया (Badaboliya)
बादकोठरीवाले (Badakothariwale)
बाराकुलीवाला (Badakuliya)
बड़वेवाले (Badavewale)
बाढ़ावाले (Badhawale)
बड़ोपलिया (Badopaliya)
बागड़ (Bagada)
बगड़ी (Bagadi)
बगलावाले (Bagalawale)
बागोला (Bagola)
बहादुरगढिया (Bahadurgaria)
बजीतपुरिया (Bajeetapuriya)

बखालिया (Bakhaliya)
बाल (Bal)
बलपुरवाले (Balapurwale)
बल्ल (Ball)
बालोतरिया (Balotariya)
बाल्टीवाला (Baltiwala)
बापोड़िया (Bapodiya)
बापूवाले (Bapuwale)
बारबड़ावाले (Barabadawale)
बारड (Barad)
बारदानावाले (Baradanawale)
बरहरवा (Baraharava)
बारजेवाला (Barajewala)
बराकड़वाले (Barakadawale)
बराकावाले (Barakawale)
बरखेड़ावाले (Barakhedawale)
बरसुआँवाला (Barasuanwala)
बरवालिया (Baravaliya)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 2

बरियकवाले (Bariyakwale)
बसईवाल (Basaiwal)
बसावावाले (Basavawale)
बासोतिया (Basotiya)
बटोदावाले (Batodawale)
बावलीवाला (Bavaliwala)
बावरी (Bavari)
बायला (Bayala)
बायती (Bayati)
बायेवाल (Bayewal)
बेड़िया (Bedia)
बेगनिया (Begonia)
बेरासरिया (Berasaria)
बेसवाल (Beswal)
भडेलिया (Bhadelia)
भदेव (Bhadev)
भाड़ेवाला (Bhadewala)

भादरावाले (Bhadrawale)
भदसानावाले (Bhadsanawale)
भादूडीवाले (Bhadudiwale)
भागचन्दका (Bhagchandka)
भगोलावाले (Bhagolawale)
भगूका (Bhaguka)
भालूसरिया (Bhalusaria)
भानगढ़का (Bhangarhka)
भापनका (Bhapanka)
भापड़ोदिया (Bhapdodia)
भट्टेवाले (Bhattewale)
भटूवाले (Bhatuwale)
भटवारावाले (Bhatwarawale)
भावपुरका (Bhavpurka)
भावसिद्धका (Bhavshidhka)
भड़ेच (Bhedech)
भीवापुरका (Bhivapurka)

भीवानिया (Bhiwaniya)
भूतड़ा (Bhootda)
भूतस्ता (Bhootshya)
भोपालपुरिया (Bhopalpuria)
भोरूका (Bhoruka)
भूड़ोदिया (Bhudodia)
भुजियावाला (Bhujiawala)
भूषणवाला (Bhushanwala)
भुवानिया (Bhuvaniya)
भुवालका (Bhuwalka)
भुवानेवाला (Bhuwanewala)
बीबीपुरिया (Bibipuria)
बिचोलीवाले (Bicholiwale)
बिदातनका (Bidatanka)
बिदावतका (Bidavataka)
बिडोलिया (Bidoliya)
बिझलिया (Bijhaliya)

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

बिझलिया (Bijhaliya)
बीकानेरिया (Bikaneria)
बींदसरिया (Bindasaria)
बिरकलीवाले (Birkaliwale)
बिरोलिया (Biroliya)
बिसाऊका (Bissauka)
बीसूका (Bisuka)
बिसूसरिया (Bisusaria)
बोडा (Boda)
बोदिया (Bodiya)
बोजराजका (Bojrajka)
बोलोनारे (Bolonnare)
बोनेटा (Boneta)
बोसाडू (Bossadu)
ब्रजवाले (Brajwale)
बुकनसरिया (Bucansaria)
बुकालिया (Buccalia)

बुकानिया (Buchania)
बुचासिया (Buchasia)
बुडानिया (Budania)
बुधरामका (Budhramka)
बुदोलिया (Budolia)
बुरागाड़ावाले (Buragadawale)
बूरेवाले (Burewale)
बुरिया (Buria)
बुरजवाले (Burjwale)
चाचा (chacha)
चचेरीवाल (Chacheriwal)
चाकसूवाले (Chakasuwale)
चन्दनका (Chandanaka)
चन्द्रवाजीवाले (Chandravajiwale)
चाँदसेन (Chandsen)
चन्दुका (Chanduka)
चापानवाले (Chapanwale)

चरखारीवाले (Charakhariwale)
चसहाला (Chashala)
चश्मेवाले (Chashmewale)
चटाईवाले (Chataiwale)
चौकड़िया (Chaukadiya)
चीपवाले (Cheepwale)
चेला (Chela)
चेलानी (Chelani)
चेम्बरवाले (Chembarwale)
चेनवाले (Chenwale)
छाजड़िया (Chhajdiya)
छाजूका (Chhajuka)
छाजुसरिया (Chhajusariya)
छामनिया (Chhamaniya)
छमासी (Chhamasi)
छांदीवाले (Chhandiwale)
छानीवाला (Chhaniwala)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 4

छापरिया (Chhapariya)
छावनिका (Chhavanika)
चिलवारस (chilwaras)
चिमनका (Chimanaka)
चिनानिया (Chinaniya)
चीनीकी (Chinike)
चितलांगिया (Chitalangiya)
चोकीवाले (Chokiwale)
चोरूका (Choruka)
चोरवानी (Chorwani)
चूनेवाले (Chunewale)
चूरयांवाले (Churayawale)
चुरूका (Churuka)
दाचानिया (Dachaniya)
दादरीवाले (Dadariwale)
दादुर (Dadur)
दड़वावाले (Dadvawale)
डगेड़िया (Dagediya)

डहरवाले (Daharwale)
दहीवाले (Dahiwale)
दाहियावाले (Dahiyawale)
दहोडावाला (Dahodawala)
दजोदवाला (Dajodwala)
डाकवाला (Dakwala)
दलानिया (Dalaniya)
दलेल (Dalel)
दलिया (Daliya)
दलपलिया (Dalpaliya)
डंगायच (Dangayach)
दाँतलीवाला (Dantaliwala)
दांतुरी (Danturi)
दरीबावाले (Daribawale)
दरिया (Dariya)
डरोलिया (Daroliya)
दस्था (Dastha)
दतिरवाला (datirwala)

दयालपुरिया (Dayalapuriya)
देबूका (Debuka)
डेगराजका (Degarajaka)
देलोनिया (Deloniya)
डेनिया (Deniya)
देशवाने (Deshwane)
देवादानका (Devadanaka)
देवगाँवका (Devagavaka)
देवनलिया (Devanaliya)
देवनिया (Devaniya)
देवराग्निया (Devaragniya)
देवरालिया (Devaraliya)
देवर्गायका (Devargayka)
देवीदानका (Devidanaka)
धाड़ीवाल (Dhadiwal)
ढैया (Dhaiya)
ढाकलिया (Dhakaliya)
धालीवाल (Dhaliwal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 5

धामनोदवाले (Dhamanodwale)

धामोरिया (Dhamoriya)

धनजीपंजीवाले (Dhanajipanjiwale)

धनानीवाले (Dhananiwale)

धनानिया (Dhananiya)

धनपतसिंहका (Dhanapatasinhaka)

धांवलिया (Dhanvaliya)

धौलपुरवाले (Dhaulapurwale)

धौलावाला (Dhaulawala)

धानोठीवाला (Dhauthiwala)

ढेढ़िया (Dhedhiya)

धीणा (Dheena)

ढेलासरिया (Dhelasariya)

धींगरपुरवाले (Dhigarpurwale)

धीमपुरिया (Dhimpuriya)

धींगपुरिया (Dhingpuria)

धीरवासिया (Dhirvasiya)

ढोकानिया (Dhokaniya)

ढोलकिया (Dholakiya)

धोलेटा (Dholeta)

धोलपुरवाले (Dholpurwale)

धोनीवाल (Dhoniwal)

ढोरवाला (Dhorwala)

धूवालावाले (Dhuvalawale)

धुवालिया (Dhuvaliya)

डिबाईवाले (Dibaiwale)

दीवा (Diva)

दीवलवाले (Divalwale)

दीवानजीवाले (Divanjiwale)

दीवानवाले (Divanwale)

दोचनिया (Dochaniya)

दोदराजका (Dodaraajaka)

डोकानिया (Dokaniya)

डोलिया (Doliya)

डोणेरसीवाला (Donerasiwala)

डोरेवाले (Dorewale)

डोरिया (Doriya)

दुदावत (Dudavat)

दुजोदवाले (Dujodwale)

डुमंडिया (Dumandiya)

दुरलिया (Duraliya)

ईकरीवाले (Eekriwale)

एतवान (Etavan)

फागलवा (Faglava)

फटेवाल (Fatewal)

फिरोजवाले (Firojawale)

फोगला (Fogala)

गाडरमालावाला (Gadaramalawala)

गढ्यान (Gadhyan)

गागेसरिया (Gagesariya)

गगीवाले (Gagiwale)

गगवी (Gagvi)

गाजीपुरिया (Gajipuriya)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 6

गंधकवाला (Gandhakwala)

गणेशगढ़िया (Ganeshagadhiya)

गायवाला (Gayewala)

गायरल (Gayral)

घड़ीवाले (Ghadiwale)

घमोसरिया (Ghamesariya)

घीणा (Gheena)

घेऊवाले (Gheuwale)

घिडिया (Ghidiya)

घिरया (Ghirya)

घोडा (Ghoda)

घोडावत (Ghodawat)

घुबलेवाला (Ghubalewala)

घूड़का (Ghudaka)

घूमणसरिया (Ghumanasariya)

गिलटवाले (Gilatwale)

गिलेण्डरवाले (Gilendarwale)

गिंदोड़ी (Gindodi)

गिन्होरिया (Ginhoriya)

गोदवाले (Godwale)

गोकुल (Gokul)

गोलुका (Goluka)

गोपालका (Gopalaka)

गोपालवासिया (Gopalavasiya)

गोरामवाले (Goramawale)

गौरीसरिया (Gorisariya)

गोठका (Gothka)

गोवाडिया (Govadiya)

गोविन्दका (Govindaka)

गोयसर (Goysar)

गुडबानीवाला (Gudabaniwala)

गुडेवाले (Gudewale)

गुढ़का (Gudhaka)

गुडीवाला (Gudiwala)

गुलाबवाले (Gulabwale)

गुललहा (Gulalaha)

गुलावाटी (Gulawati)

गुलगुलिया (Gulguliya)

हालना (Halna)

हमीरवासिया (Hamirvasia)

हण्डिवाले (Handiwale)

हांसलसरिया (Hansalsaria)

हरनामवाले (Harnamwale)

हठीरामका (Hathiramka)

हटका (Hatka)

होजरीवाले (Haujariwala)

हेलीवाले (Helliwale)

हिंडोरिया (Hindoria)

हिंगोलीवाले (Hingoliwale)

हीरानंदका (Hiranandaka)

हुडेकर (Hudekar)

हुडेत (Hudet)

हेदराबादी (Hyderabadi)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 6

इमरेवाल (Imrewal)
इंगरीवाला (Ingariwala)
इंगेयुगेवाला (Ingeyugewala)
इसरका (Isarka)
जगरायका (Jagarayka)
जगवरावाले (Jagavarawale)
जहाजगढ़िया (Jahajagadhiya)
जै (Jai)
जैसुका (Jaisuka)
जाखलिया (Jakhaliya)
जाखोटिया (Jakhotiya)
जकोडिया (Jakodiya)
जलालपुरिया (Jalalapuriya)
जलाली (Jalali)
जलेबीचोर (Jalebichor)
जालका (Jalka)
जमुका (Jamuka)
जनकपुरिया (Janakpuriya)

जांगलिये (Jangaliye)
जांटीवाला (Jantiwala)
जारोटीवाला (Jarotiwala)
जसरामपुरिया (Jasarampuriya)
जासोईया (Jasoiya)
जातल्या (Jatlya)
जाटूका (Jatuka)
जवानपुरिया (Javanapuriya)
जावरावाले (Javarawale)
जावतमाल (Javatmal)
जयनगरिया (Jayanagariya)
जीतपुरिया (Jeetpuriya)
जेजानी (Jejani)
झाड़ीवाला (Jhadiwala)
झाझरी (Jhajhari)
झझरीवाला (Jhajhariwala)
झंडा (Jhanda)
झंकोड़िया (Jhankodiya)

झंरीवाला (Jhanriwala)
झरोखेवाला (Jharokhewala)
झिरका (Jhiraka)
जिखवड़िया (Jikhvadiya)
जीवराजका (Jivarajka)
जोदराजका (Jodarajka)
जोधपुरिया (Jodhpuriya)
जोड़ीवाल (Jodiwal)
जोपानी (Jopani)
जोतगोटिया (Jotagotiya)
जुगरका (Jugaraka)
जूनियावाले (Juniyawale)
जुवार (Juvar)
कबाड़ी (Kabadi)
कचहरीवाले (Kachahariwale)
काछवा (Kachhava)
कदमावाला (Kadamawala)
कागदानावाले (Kagadanawale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठः 7

कागदी (Kagadi)

कागरनावाल (Kagaranawal)

कहोरा (Kahora)

काईलावाला (Kailawala)

काजरी (Kajari)

ककराणिया (Kakaraniya)

ककरेजा (Kakareja)

ककरीवाले (Kakariwale)

काकोलिया (Kakoliya)

कलानेवाले (Kalanewale)

कलानोरिया (Kalanoriya)

कलबलिया (Kalbaliya)

कलगी (Kalgi)

कालिये (Kaliye)

कालूण्डिया (Kalundiya)

कमरीवाले (Kamariwale)

कमरया (Kamrya)

कम्वलवाले (Kamvalwale)

कानबेलिया (Kanbeliya)

कन्हईवाले (Kanhiwale)

कंकरानिया (Kankaraniya)

कंकरेचा (Kankarecha)

कंटेवाले (Kantewale)

कण्ठीमालावाले (Kanthimalawale)

कण्ठीवाल (Kanthiwal)

कण्ठीवास (Kanthiwas)

कांटीवाले (Kantiwale)

कंटोकटेव (Kantokatev)

कँवाल (Kanwal)

कपड़ेवाले (Kapadewale)

कारवाड़ीवाले (Karavadiwale)

करवरवाला (Karavarwala)

करोरीवाले (Karoriwale)

करूटिया (Karutiya)

कसाली (Kasali)

कासलीवाल (Kasaliwal)

कासनावाला (Kasanawala)

कसरूका (Kasaruka)

कसेडिया (Kasediya)

कासूबा (Kasuba)

कासूका (Kasuka)

कासूलिया (Kasuliya)

कसूमावाले (Kasumawale)

कटनीवाला (Kataniwala)

कटारीवाला (Katariwala)

कटारिया (Katariya)

कटारूका (Kataruka)

कटतरूका (Katataruka)

कौशलका (Kaushalaka)

केलका (Kelaka)

केमोरीवाले (Kemoriwale)

खदरिया (Khadariya)

खगरिया (Khagariya)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठः 8

खामगांववाले (Khamaganvwale)
खंडका (Khandaka)
खंडारवाले (Khandarwale)
खनुआवाले (Khanuawale)
खापरा (Khapra)
खराईवाले (Kharaiwale)
खारखोलिये (Kharakholiye)
खारीवाल (Khariwal)
खासगीवाले (Khasagiwale)
खटाईवाले (Khataiwale)
खटकड़या (Khatakadaya)
खाटवाले (Khatawale)
खावसरिया (Khavasariya)
खायरा (Khayara)
खेदड़िया (Khedadiya)
खेडावाले (Khedawale)
खेमाणी (Khemani)
खेतावत (Khetavat)
खिरनीवाले (Khiraniwale)
खीरवेवाले (Khiravewale)
खिरवाल (Khirawal)
खीरेवाले (Khirewale)
खीवंसरिया (Khivansariya)
खोदिया (Khodiya)
खोरावाले (Khorawale)
खोरिया (Khoriya)
खोसीका (Khosika)
खुनखुनजीका (Khunkhunjika)
किनोई (Kinoee)
किरानावाले (Kiranawale)
किरवाडावाले (Kiravadawale)
किरवासीवाले (Kiravasiwale)
किरतुका (Kirtuka)
किशनपुरिया (Kishanpuriya)
किताबवाले (Kitabwale)
किया (Kiya)
कोदिया (Kodiya)
कोहलीवाले (Kohaliwale)
कोलावाले (Kolawale)
कोटवातवाले (Kotavatwale)
कोटड़ीवाले (Kotdiwale)
कोठावाले (Kothawale)
कोठरीवाले (Kothriwale)
कुचमतनया (Kuchmatanaya)
कुड़कलीवाले (Kudkaliwale)
कुलताजपुरिया (Kultajapuriya)
कुण्डवाले (Kundwale)
कुरड़ीकूट (Kuradikut)
कुसुम्बीवाले (Kusumbiwale)
लाल (Laal)
लदानिया (Ladaniya)
लाडसरिया (Ladsaria)
लहानवाले (Lahanwale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

लखी (Lakhi)
लखूड़ी (Lakhuri)
लक्काडी (Lakkadi)
लालगढ़िया (Lalgarhia)
लारिया (Lariya)
लश्करी (Lashkari)
लक्ष्मणगढ़का (Laxmangarhka)
लिखमानिया (Likhmaniya)
लोहारिया (Lohariya)
लोहारूवाला (Loharuwala)
लोहरे (Lohre)
लोंगवाल (Longwal)
लोसलका (Losalka)
लोटिया (Lotia)
लवलिया (Lovelia)
लोया (Loya)
माछर (Maachar)
मारकरिया (Maarkiya)
मादरिया (Maderia)

माधोगड़िया (Madhogadiya)
माधोपुरिया (Madhopuria)
माडिया (Madia)
माडीवाला (Madiwala)
मडोलिया (Madolia)
माडोठिया (Madothia)
मदपुरिया (Madpuria)
मादवाड़ीवाला (Madwadiwala)
मागेड़ीवाला (Magediwala)
महाडेरिया (Mahaderia)
महलावाले (Mahalawale)
महनसरिया (Mahansariya)
महासरवाले (Mahasarwale)
महाटिया (Mahatiya)
महेशदासका (Maheshdasaka)
महेशका (Maheshka)
महलका (Mahlka)
महरामगड़ावाले (Mahramgadwale)

मजीठावाले (Majithawale)
माजीवाला (Majiwala)
मकारीवाला (Makariwala)
मखण्डिया (Makhandia)
मालगुजार (malagujar)
मालधनी (Maldhani)
मलियानावाले (Malianawale)
मलीराहवाले (Malirahwale)
मालपुरावाले (Malpurawale)
मालसरिया (Malsaria)
मलसीसरवाले (Malsisarwale)
ममोनिया (Mamoniya)
मंडलावाले (Mandalawale)
मंडेलिया (Mandalay)
मंडोरीवाले (Mandoriwale)
मंडरायवाले (Mandraywale)
मनोजपुरिया (Manojpuria)
मानपुरिया (Manpuria)
मानसिंहका (Mansinghka)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 10

मरदा (Marda)
मातनहेलिया (Matanheliya)
मथुरावाले (Mathurawale)
मौजीरामका (Maujiramka)
मईवाले (Maywale)
मेरठिया (Meerutia)
मेगोलिया (Megolia)
मेहाडिया (Mehadia)
मेहता (Mehta)
सोदागर (Merchant)
मेरठीशाह (Merthishah)
मेवाड़ा (Mewada)
मिल (Mill)
मिंचनाबादवाले (Minchanabadwale)
मिठड़ीवाले (Mithadiwale)
मित्रापुरावाले (Mitrapurawale)
मित्रुका (Mitruka)

मोदाणी (Modani)
मोटियादाणीवाले (Motiadaniwale)
मुबारकपुरवाले (Mubarakpurwale)
मुहालका (Muhalka)
मुकुदगढ़िया (Mukudgarhia)
मुकुटवाले (Mukutwale)
मुण्डेवाला (Mundewala)
मुंडोसीवाले (Mundosiwale)
मूंगेवाले (Mungewale)
मुनीम (Munim)
मूनका (Munka)
मुंसरीवाले (Munsariwale)
मुरारी (Murari)
मुरसानवाले (Mursanwale)
मुरताजपुरवाले (Murtajpurwale)

मुरथलिया (Murthalia)
मुशरका (Musharka)
मुस्कानी (Muskani)
नागरदासका (Nagardasaka)
नागेवाले (Nagewale)
नागिसा (Nagisa)
नागोड़ी (Nagodi)
नैनसुखा (Nainasukha)
नाजिम (Najim)
नकीपुरीया (Nakipuriya)
नालपुरवाले (Nalapurawale)
नलवेवाले (Nalvewale)
नम्बाक्याने (Nambakyane)
नानूरामका (Nanuramaka)
नारसरिया (Narasariya)
नरेगावाले (Naregawale)
नारनौली (Narnauli)
नारोजवाले (Narojwale)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 11

नाथूरामका (Nathuramaka)

नौसरिया (Nausariya)

नवल (Naval)

नवरवाला (Navarwala)

नेवईवाल (Nevaiwal)

निबाईवाला (Nibaiwala)

निमोरिया (Nimoriya)

निनाणवाले (Ninanwale)

निंगानिया (Ninganiya)

नीरतू (Nirtu)

निवारवाले (Nivarwale)

नोनवाल (Nonwal)

नोपरावाले (Noparawale)

नोसरिया (Nosariya)

नोताका (Notaka)

नूहावाल (Nuhawal)

ओडणवाले (Odanawale)

ओलवाड़ावाले (Olvadawale)

ऊँटवालिया (Oontawaliya)

पालरीवाल (paalriwal)

पचेरीवाल (Pacheriwal)

पचेरिया (Pacheriya)

पचोड़ीवाले (Pachodiwale)

पदाम्या (Padamya)

पड़ावावाले (Padavawale)

पाढ़ावाले (Padhawale)

पाढ़निया (Padhniya)

पाड़िया (Padiya)

पकाया (Pakaya)

पलसाणी (Palasani)

पलसावाले (Palasawale)

पालविया (Palaviya)

पल्लीवाले (Palliwale)

पाण्डेरी (Panderi)

पनेसीवाले (Panesiwale)

पानीपतिया (Panipatiya)

पंजेवाले (Panjewale)

पनजीवाले (Panjiwale)

पापड़ावाले (Papadawale)

परमणीवाला (Paramaniwala)

परामुका (Paramuka)

परसादिया (Parasadiya)

परसरामका (Parasramka)

परसरामपुरिया (Parasrampuria)

परतापुरवाले (Paratapurwale)

परवणवाले (Paravanwale)

पारूवाल (Paruwal)

पासरोटिया (Pasarotiya)

पाटनवाले (Patanwale)

पतासिया (Patasiya)

पटवा (Patava)

पतीसावाले (Patisawale)

पवामिका (Pavamika)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 12

फिटकिरीवाला (Phitakiriwala)

पिलानिया (Pilaniya)

पिपल्या (Pipalya)

पीपलवा (Piplava)

पीरामल (Piramal)

पिसाडेवाले (Pisaadevaale)

पितलिया (Pitaliya)

प्रणव (Pranav)

प्रेमराजका (Premarajka)

पुड़ियावाल (Pudiyawal)

पुनमिया (Punamiya)

पूनिया (Puniya)

पुरिया (Puriya)

पूर्णमलका (Purnamalka)

पुवालेवाला (Puvalewala)

रड़कवाले (Radakwale)

रेडियोवाले (Radiowala)

रईसखानदान (Rahishkhandan)

राईवाला (Raiwala)

रायावाले (Raiwale)

राजारामका (Rajaramka)

राजुका (Rajuka)

राजूसरिया (Rajusaria)

रालवाल (Ralwal)

रामरायका (Ramarayaka)

रामगढ़िया (Ramgarhia)

रामपुरिया (Rampuria)

रामसिसरिया (Ramsisaria)

रसतलिया (Rastalia)

रातड़िया (Ratadiya)

रतनगढिया (Ratangarhia)

रातूसरिया (Ratusaria)

राऊवाले (Rauwale)

रावल (Rawal)

रावलवासिया (Rawalwasia)

रिटोलिया (Retolia)

रिणीवाले (Riniwale)

रीयांवाला (Riyanwala)

रूपचंदका (Roopchandka)

रूपदासका (Roopdaska)

रोटीवाले (Rotiwale)

रूदावाले (Rudawale)

सबलका (Sabalka)

सदवती (Sadwati)

सगाई (Sagai)

सेज (Sage)

सगी (Sagi)

सगरेवाला (Sagrewala)

साहेवाला (Sahewala)

सलारपुरिया (Salarpuria)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 13

सलइयावाला (Saliyawala)
समालिया (Samalia)
समोदवाले (Samodwale)
समोता (Samota)
समथरवाला (Samtharwala)
सनावड़वाला (Sanavadwala)
संदरीवाले (Sandariwale)
सनेरवाला (Sanerwala)
संघोलिया (Sangholia)
संगीवाला (Sangiwala)
सांखूवाला (Sankhuwala)
सानोदिया (Sanodia)
सन्तुका (Santuka)
सारत (Sarat)
सरायवाला (Saraywala)
साड़ीवाल (Sariwal)
सरियावाला (Sariyawala)

सरसिलेवाला (Sarsilwala)
साठेवा (Satheva)
सतूका (Satuka)
साव (Saw)
सेड्रूका (Seduka)
सेकड़ा (Sekda)
सेलवाले (Selwale)
सेनावाले (Senawale)
सेठानीका (Sethanika)
सेवतका (Sevatka)
सेवदवाला (Sevdwala)
सेवतावाले (Sewatwale)
सक्तिया (Shaktiya)
शेरपुरवाले (Sherpurwale)
शिवाडवाले (Shivadwale)
शस्त्रधारा (Shstrdhara)
श्यामपुरिया (Shyampuria)

सीदासिका (Sidasika)
सिद्धपुरवाने (Siddhpurwane)
सिघनोदिया (Sighnodia)
सीसाहाला (Sisahala)
सिताबरायवाला (Sitabraiwala)
सितानी (Sitani)
सीतिया (Sitia)
सिवोटिया (Sivotia)
सीवपुरीया (sivpuria)
सीवणवाले (Siwanwale)
सोढाणी (Sodhani)
सोमूदिया (Somudia)
सॉवलका (Souvlaka)
सुगन्धी (Sugandhi)
सुहासरिया (Suhasaria)
सुजानगढ़िया (Sujangarhia)
सूजगढ़िया (Sujgarhia)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

सुखजीका (Sukhjika)

सुंदरका (Sundarka)

सुनसुनजीका (Sunsunjika)

सुपारीबाला (supariwala)

सुरंगलीवाला (Surangiwal)

सूर्दवाले (Surdwale)

सूरशाही (Surshahi)

सूतिया (Sutia)

सुतोदिया (Sutodiya)

सूतपूतनीवाला (Sutputniwala)

ताड़पट्टीवाले (Tadapattiwale)

ताड़ी (Tadi)

टडक्या (Tadkya)

ताजपुरिया (Tajpuriya)

तलवंडीवाले (Talavandiwale)

तलगेया (Talgeya)

टमकोरिया (Tamakoriya)

टमोटिया (Tamotiya)

टपकड़ा (Tapkada)

तारानगरवाले (Taranagarawale)

टारिया (Tariya)

टेकवाले (Tekwale)

तेलकुलियावाले (Telakuliyawale)

टेलटिया (Telatiya)

ठाकुरदासजीका (Thakurdasjika)

थालवाला (Thalwala)

ठंडीरामका (Thandiramka)

थरपाल (Tharpal)

थावलेवाला (Thavalewala)

धूथरीवाल (Thuthariwal)

टीबड़ा (Tibada)

तिगुरानिया (Tiguraniya)

टिक्कीवाल (Tikkiwal)

टिल्ला (Tilla)

तीमड़वाले (Timadwale)

तीर्थपुरीवाले (Tirthapuriwale)

तीवरीवाले (Tivriwale)

तोला (Tola)

टोपीवाला (Topiwala)

तूदेवाले (Tudewale)

तुहीरामका (Tuhiramka)

तुरकापवाला (Turakapwala)

उदयपुरिया (Udayapuriya)

उडियारावाले (Udiyarawale)

उकलवाड़ावाले (Ukalavadawale)

उलाजपुरिया (Ulaajapuriya)

उतरावाल (Utrawal)

।। अग्रवाल कुटुंब नाम ।।

(यदि आपका पारिवारिक नाम इस सूचि में है तो कृपया गोत्र, स्थान, वंशावली आदि के साथ हमसे संपर्क करें।)

पृष्ठ: 15

वधानिया (Vadhaniya)

वगडिया (Vagdiya)

वणीवाले (Vaniwale)

वरवाल (Varwal)

वटावर (Vatavar)

वेद (Ved)

वेगवाल (Vegwal)

वेरनीवाले (Verniwale)

विछावतका (Vichhawatka)

विदसरिया (vidsaria)

विजयका (Vijayaka)

वीपौपरिया (vipoparia)

वृत्तासिया (Vrutsiya)

वारचोलिया (Warcholia)

योगी (Yogi)

।। निवेदन ।।

🙏आदरणीय समस्त सम्मानित अग्र बंधुओं, सप्रेम निवेदन 🙏

सभी अग्र भाइयों से विशेष अनुरोध है कि, अपने पूरे परिवार की एक वंशावली अवश्य बनाये। जिससे आने वाली पीढ़ी को अपने परिवार के बारे में जानकारी मिल सके।।इसका उपयोग विशेषकर गृह प्रवेश, नहवान्न के समय) (जन्म कुंडली), शादी विवाह के समय, कोई भी मंगल कार्यक्रम के समय, श्राद्ध के समय, पिंड दान के समय, पित्तरों के राती-जुगा के समय, आदि अनेक कार्यक्रम के समय, सबको इसकी जानकारी मिल सके। आने वाले समय पर ताऊ-ताई, बुवा-फूफा, मौसा-मौसी, साली-साढ़हु के रिश्ते का लुफ्त होना प्रायः तय सा है।जहाँ तक हो सके जन्म, शादी, मरण की तिथि अवश्य लिखे। भाई,बहनों, दादा-दादी, ताऊ-ताई चाचा-चाची , भाई-भतीजा,बेटा-बहु, बेटी विवाहित/अविवाहित, सभी की, जहाँ तक बन सके अवश्य लिखें। अगर हो सके तो या बन सके तो जन्म का स्थान और जन्म का समय जिसका भी मिल सके तो कृपया लिखियेगा। आप स्वयं इस बात को अनुभव करेंगें की समय के साथ यह जानकारी संचय कितना आवश्यक है समय से साथ लुप्त होती परम्परा को देखते हुऐ, यह अत्यन्त आवश्यक है कि परिवार के बारें में, जानकारी सभी को ज्ञात रहे। यह एक अथक प्रयास होगा, समय निकाल कर इसकी रचना करें। और समय समय पर और जानकारी जोड़ते रहें।

हर्ष वर्धन गोयल (अध्यक्ष)

अग्र वंशवली शोध परिषद्

agrvanshawali@gmail.com

करना क्या है

यदि आप भी अपनी वंशावली इतिहास में संरक्षित करना हो या सहयोग करना चाहते हो तो संपर्क करें

किसी विशेष फॉर्मेट की आवश्यकता नहीं

गोत्र:

आपका नाम:

पैतृक स्थान: / निवास स्थान:

पूर्वजो के नाम परदादा/परदादा के भाइयों का नाम का नाम:

परदादी/परदादीओं का नाम:

दादा/दादा के भाइयों का नाम का नाम:

दादी/ दादीओं का नाम:

सभी ताऊ/ सभी ताई का नाम:

पिता जी/ माता जी का नाम:

सभी चाचा जी/ चाची जी का नाम:

सभी ताऊ/चाचा के बच्चो का नाम:

भाईओं/बहनो का नाम और उनके बच्चे:

प्रत्येक नाम के साथ पिता का नाम अवश्य लिखे| सभी भाई, बहनो , चाचा चाची, दादी, परदादी सभी का नाम सम्मलित करें, गांव और बुजुर्गो से बात करें

Form link: https://tinyurl.com/2p93h7ma

Facebook: https://www.facebook.com/100079717937729

Email: agrvanshawali@gmail.com

WhatsApp: https://tinyurl.com/3nryvjyp

।। लेखक परिचय ।।

हर्ष वर्धन गोयल

हर्ष वर्धन गोयल इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में एक दशक से अधिक से सिंगापुर में कार्यरत हैं। हिन्दी और संस्कृत भाषा के प्रति इनकी विशेष रुचि है और सिंगापुर में हिन्दी परिवार सिंगापुर के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं। हिंदी परिवार सिंगापुर की त्रैमासिक पत्रिका के संपादन में भी इन्होंने विशेष भूमिका निभाई है। हिन्दी परिवार सिंगापुर में अंग्रेज़ी सामग्री का हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का शुभारंभ, अनुवाद कार्य का नेतृत्व और संचालन में भी इनका विशेष योगदान रहा है।

हर्ष वर्धन गोयल की उनके अपने जीवन के सुहावने पलों पर आधारित संस्मरिका "स्मृति के पदचिन्ह" (ISBN: 978-81-91765-61-3) पुस्तिका प्रकशित हुई है। दो अन्य पुस्तकें "त्रेता की नारी" और "मन की निहारिका" छपने गयी हुई है इससे पूर्व उन्होंने पतंजलि योगशास्त्र और केनोपनिषद् उपनिषद का इंग्लिश भाषा में अनुवाद किया है, इनकी दर्जनों कविताएँ और कहानियाँ भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रातः स्मरणीय आदरणीय तात श्री ब्रह्मानन्द अग्रवाल जी और माताश्री स्वर्गीय श्रीमती कृष्णा देवी जी के पुत्र, पितामह स्वर्गीय सेठ लाला अंगूर शरण जी और पितामही स्वर्गीय श्रीमती किरणवती जी के पौत्र हैं जन्म स्थली दिल्ली और पैतृक स्थान सिवाल खास मेरठ उत्तर प्रदेश, कई पीढ़ी पहले यह परिवार महम के निकट चिड़ी-चांदी (जिला - रोहतक) निवास करता था और उससे पूर्व अग्रोहा में, कदाचित ११९४ ईस्वी में अग्रोहा विध्वंस होने पर यह महम के पास चिड़ी नामक स्थान में विस्थापित हुआ। उसके पश्चात महम के सेठों पर भी जब बार-बार आक्रमण हुआ तब यह गोयल परिवार महम से बागपत और वह से सराय होता हुआ सिवाल गांव (मेरठ) में बस गया। तत्पश्चात दादाजी और पिताजी ने दिल्ली में निवास बनाया।

वर्तमान में श्री हर्ष वर्धन गोयल जी सिंगापुर में निवास करते हैं उनके अग्रवालों के इतिहास के विषय में शोध पूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

अग्रवालों से सम्बंधित शोध पत्र और पुस्तक

- अग्रोहा, वैश्य कुल और धन के स्वामी कुबेर का संबंध
- अग्रवाल सेठों का जैन समाज में योगदान
- वर्णवाल भी हैं अग्रवाल
- अग्र वर्ग - पहेली (१८ गोत्रों पर आधारित वर्ग पहेली)
- चम्पेय जातक - बौद्ध पुस्तकों में महाराजा अग्रसेन का वर्णन
- महल नागर मल - बहावलनगर
- अग्रोहा का इतिहास - इब्न बतूता की पुस्तक उल रेहला से उद्धत
- अहिंसा परमोधर्म - लघु नाटिका
- अग्रवाल कुटुंबनाम प्रदीपिका (पुस्तक)

राम
पुत्र
मोती राम
भीम राम
मंगल चन्द
मदन लाल